खुशी-खुशी

कक्षा-4 भाग-1

एक गुफा की दीवार पर बना यह चित्र

एक कहानी कहता है।

लेकिन यह कहानी शब्दों में नहीं लिखी गई है,

क्योंकि इस चित्र के बनने तक लोग लिखाई के बारे में

नहीं जानते थे।

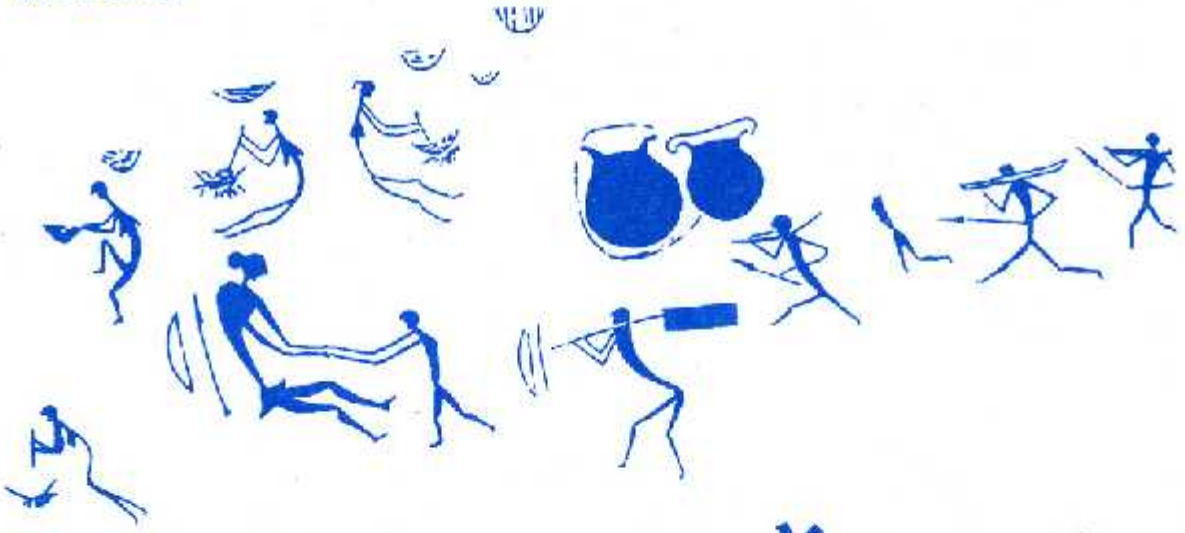

इस चित्र में लोग क्या-क्या कर रहे हैं?

चित्र में कौन-सा जानवर बना है?

जानवर क्या सोच रहा है?

इसके बाद क्या हुआ होगा?

इस चित्र को देखकर एक कहानी लिखो।

क्या तुम अपने आसपास के इलाके में ऐसी किसी गुफा के बारे में जानते हो?

खुशी-खुशी, कक्षा 4 भाग 1

यह पुस्तक एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत तैयार की गई है।
सामग्री तैयार करने में कई स्रोतों से मदद ली गई।

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्स: (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

तीसरा संस्करण: 1997
पुनर्मुद्रण: फरवरी 2006/1000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: मार्च 2010/1000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2010/2000 प्रतियाँ
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2011/3000 प्रतियाँ
70 gsm मैपलिथो एवं 150 gsm पल्प बोर्ड कवर
मूल्य: ₹ 65.00
ISBN: 978-81-87171-71-3

मुद्रक: श्रेया ऑफसेट, भोपाल, फोन: (0755) 427 5001

खुशी-खुशी

कक्षा - 4 भाग -1

भाषा

इस पिटारे में

पाठ का नाम	पन्ना नंबर
चित्र कहानी	1
कहानी पूरी करो	2
घरसू और चटनी	3
फुर्र - फुर्र	7
क्या तुम मेरी अम्मा हो?	10
कछुआ उड़ा हवा में	15
एक आम पर	21
चाचाजी हमारे -1	23
इसमें क्या शक है?	25
खरहा	27
आदमी और कुत्ता	29
विज्ञापन या सूचनाएँ	31
सुखनराम की भैंसी	33
अमुक दिन आइये	38
धूप	40
चाचाजी हमारे - 2	42
अग्निकांड	44
दूसरी बोली	49
बातचीत	50
दही - बड़ा	53
देगची की मौत	55
होली	58
आज़ादी और रोटी	61
अकाल और उसके बाद	64
समीना की डायरी	66
चिट्ठी	68
आवेदन पत्र	70
सभी कुँओं में पड़ गई भांग	71
फुलकी चटकी चटाचट	73
बोगाना और वाना - 1	76
बोगाना और वाना - 2	79
किताबों से	82
अंग	84

कक्षा 4 का प्रस्तावित पाठ्यक्रम

कक्षा 4 में यह अपेक्षा होती है कि अधिकांश बच्चे काफी आत्मविश्वास से कक्षा 3 के पाठ्यक्रम के कुछ बुनियादी कौशल हासिल कर चुके होंगे। जैसे पढ़ना-लिखना, इकाई-दहाई, जोड़-घटा आदि। फिर भी कई शालाओं में अधिकांश बच्चों की यह स्थिति नहीं भी हो सकती है। इसलिए कक्षा 3 की कई बातों को दोहराने के मौके कक्षा 4 के बच्चों को भी देना होंगे। यह कक्षा-शिक्षक को तय करना होगा कि कक्षा 3 के ऐसे कौन से बिन्दु हैं जिन पर कक्षा 4 में भी ध्यान देना होगा। इससे यह फायदा होगा कि जो बच्चे किसी कारणवश यह अपेक्षित कौशल नहीं विकसित कर पाए हैं, उन्हें इनका विकास करने, इनमें आत्मविश्वास हासिल करने के मौके मिलेंगे।

कक्षा तीन का पाठ्यक्रम काफी कुछ जारी रहेगा।

पाठ्यक्रम के मुख्य कौशल इस प्रकार हैं –

1. *समझना*
2. *अभिव्यक्ति*
3. *अवलोकन व प्रयोग करना*
4. *समस्या हल करना व निष्कर्ष निकालना*
5. *सृजनात्मकता*
6. *जगह की समझ*
7. *गणितीय समझ*
8. *जिम्मेदारी, एकाग्रता, आत्मविश्वास*

1. समझना

अलग-अलग तरह के लेखन - कहानी, कविता, नाटक, विवरण आदि बातचीत, चित्रों आदि को समझना।

(क) बोली हुई, लिखी हुई भाषा को समझना

- कहानी, कविता, अनुच्छेद, रपट, चिट्ठी आदि को हावभाव से प्रवाह में पढ़ना। इस तरह जैसे समझकर पढ़ा जाता है।
- पूरी कहानी मन में प्रवाह में पढ़ना।
- कहानी/ कविता/ पैराग्राफ (अनुच्छेद)/ नाटक/ रपट/ चिट्ठी को सुनकर या पढ़कर उनके आधार पर प्रश्नों के उत्तर बोलना व लिखना।
- किसके बारे में हैं? क्या हुआ? किसने कहा? मुख्य पात्र कौन हैं? किसने लिखा है? घटनाओं/वस्तुओं/ पात्रों को क्रम देना।
- मुख्य बातें पहचानना, उन्हें अपने शब्दों में बताने का प्रयास करना (मौखिक व लिखित रूप में)। इसके लिए कहानी और कविता ऐसी चुनी/लिखी गई हों जिनकी मुख्य बातें स्पष्ट रूप से पहचानी जा सकें। दिए गए सार में से उपयुक्त सार चुनना व लिखना।
- लिखी हुई चीज को पढ़कर उसे अलग रूप में प्रस्तुत करना – जैसे घटनात्मक/विवरणात्मक। कविता को गद्य में बोलना/लिखना। कहानी, कविता, विवरण के आधार पर चित्र, मिट्टी के खिलौने, नक्शे, मुखौटे आदि बनाना या चित्र व नक्शे में जोड़ना।

- नाटक पढ़कर किसी भी पात्र की भूमिका समझकर उसकी भूमिका हाव–भाव के साथ अदा करना। उसके कथन हाव–भाव के साथ व्यक्त करना।
- लिखित निर्देश को पढ़कर, समझकर उनके अनुसार काम करना। यह लगभग सभी संदर्भों में कहीं न कहीं शामिल है। पर यहां कुछ ऐसे अभ्यास होंगे जिनमें ख़ास जोर स्वयं निर्देश पढ़कर समझने के लिए होगा। इसके लिए छोटे-छोटे कार्य घर के लिए या कक्षा में ऐसे समय दिया जा सकता है जब गुरुजी कक्षा में नहीं हों। जैसे निर्देशों के आधार पर चित्र बनाना, चित्रों में निर्देशानुसार चीज़ें बनाना, निर्देशानुसार आसपास की वस्तुओं आदि से कुछ सरल व रोचक चीज़ें बनाना। निर्देश 6 चरण से अधिक नहीं।
- शब्दावली शब्द भण्डार का विकास – समान अर्थ वाले, विपरीत अर्थ वाले, आदि। इन दोनों के आधार पर गलत लिखे गए अंशों के सुधार की शुरुआत।
- संदर्भ में आए शब्दों के अर्थ समझना। उन शब्दों का उपयोग अपने वाक्यों में करना।
- लेखन के संदर्भ से ही वाक्य संरचना के कुछ पहलुओं को समझना जैसे वचन, लिंग आदि। इनका अपने वाक्यों में उपयोग करना।
- अर्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नचिन्ह, संबोधन चिन्हों का परिचय। उनके उपयोग का अर्थ से सम्बन्ध।
- पुस्तकालय की पुस्तकों को अपनी रुचि के अनुसार चुनना। स्वयं मन में पढ़ना व समझना। यह कह पाना कि कोई कहानी या कविता क्यों अच्छी या बुरी लगी।

(ख) चित्रों/ नक्शों/ तालिकाओं/ चार्ट आदि को समझना व सम्बंध जोड़ना

- चित्र में हो रही घटनाओं को समझना। चित्रों का क्रम समझना। उस क्रम के आधार पर कहानी बनाना।
- किसी प्रक्रिया के चित्रों को क्रम में जमाना, चक्र में जमाना। उसके आधार पर प्रक्रिया का विवरण लिखना।
- चित्रों में दिए गए संकेतों/ चिन्हों के आधार पर समझना कि क्या घटना हुई होगी।
- चित्रों द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार काम करना। तीरों का उपयोग।
- नक्शा समझना। उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना। जैसे कि कौन-सी चीज़ किसी और चीज़ की ख़ास दिशा में है। जैसे हैण्डपम्प के पश्चिम में क्या है?
- नक्शा देखकर निर्देशों के अनुसार रास्ता ढूँढना। नक्शा पढ़कर रास्ते पर चलना। छूटी चीज़ों को नक्शे में जोड़ना।
- तालिका समझकर उत्तर देना। तालिका देखकर निष्कर्ष निकालना।

2. अभिव्यक्ति

(क) बोलकर या सरल भाषा में लिखकर

- बच्चों के स्वतंत्र लेखन के प्रयास जारी रहेंगे। इनमें अब शब्दों व वाक्यों में सही हिज्जों और लिंग व वचन के सामंजस्य का ध्यान रखना होगा। लिखाई में स्पष्टता की अपेक्षा होगी।
- तात्कालिक भाषण। पर्ची में लिखे विषय पर बोलना।
- मौखिक रूप से कहानियाँ सुनाना।
- साथियों को निर्देश देना, जिनके अनुसार वे काम कर सकें।
- कहानियों को आगे बढ़ाना। मन से नई कहानियाँ बनाना। कविता की तुक पकड़कर कविता आगे बढ़ाना।
- नाटकों में अपने मन से डायलॉग, वार्तालाप या नई घटनाएँ जोड़ना। कहानी की एक या दो घटनाएँ परिवर्तित करने से पूरी कहानी को नए रूप में बोलना व लिखना।
- अपने अनुभव की वस्तुओं/ घटनाओं आदि का विवरण, रपट लिखना। जैसे रोज की रपट।

- अपने विचारों, मतों, दृष्टिकोण आदि को मौखिक व लिखित रूप में अभिव्यक्त करना।
- कक्षा में हो रही गतिविधियों के संदर्भ में प्रश्न पूछना। विभिन्न तरह की जिज्ञासाओं को निडर होकर प्रश्नों के रूप में पूछना।

(ख) हाव-भाव/ अभिनय/ रोलप्ले से अभिव्यक्ति

- नाटक में अपनी भूमिका का हावभाव के साथ प्रदर्शन करना। किसी भी पात्र का एकल अभिनय करना। अपने अनुभवों को नाटक द्वारा अभिव्यक्त करना।

(ग) कुछ बनाना

- कागज़ को बिना फाड़े उसे मोड़कर तरह-तरह की आकृतियाँ बनाना।
- विभिन्न आकृतियों व आसपास की वस्तुओं से कुछ बनाकर उन चीजों से कहानी बनाना।
- किसी विषय पर विभिन्न तरह के मिट्टी के खिलौने बनाना।
- अपने अनुभवों को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करना।
- काल्पनिक चित्र बनाना।

3. अवलोकन व प्रयोग करना

अवलोकन में अब थोड़ा बारीकी का अवलोकन करने व अवलोकनों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने पर ध्यान देना होगा। साथ ही अवलोकनों के आधार पर सरल निष्कर्ष निकालने की शुरुआत होगी।

(क) अनुभव आधारित दावे करना व प्रश्न बनाना

- अपने अनुभवों के आधार पर दावे व प्रश्न बनाना। इनके आधार पर अवलोकन करके देखना कि दावा सही है कि नहीं और किस हद तक। जैसे क्या भारी चीज़ें जल्दी नीचे आती हैं? या क्या सभी पौधों की जड़ें होती हैं? या सूरज रोज एक ही समय और एक ही जगह से उगता है?
- अवलोकन के दौरान नए दावे बनाना और साथियों को हल करने के लिए देना।

(ख) अवलोकन करना

- बारीकी से अवलोकन करना, हैंडलैंस से देखकर। (अंकुरित बीज आदि)
  - किसी वस्तु को खोलकर देखना।
  - गिनकर या नापकर अवलोकन करना।

- सर्वेक्षण करके अवलोकन करना। आसपास की दुकानों, उत्सवों आदि का अवलोकन करना।
- प्रयोग करके अवलोकन करना – लिखित निर्देशानुसार प्रयोग करना (सामग्री जुटाना, क्रिया करना, अवलोकन करके तालिका में दर्ज करना, चित्र बनाना, बताना, लिखना।)
- परिवर्तन का अहसास – विभिन्न परिवर्तनों का अवलोकन के आधार पर अहसास बनाना। लम्बे समय तक (कई दिनों तक) किए गए अवलोकनों से परिवर्तन के चक्र का अहसास बनाना। जैसे कि बढ़ती-घटती छाया, बढ़ता-घटता चाँद, उसके उगने व अस्त होने का समय, पतझड़, नई पत्ती, फूलने आदि का समय।

(ग) तुलना करना

- अवलोकन के आधार पर 2 से 4 वस्तुओं की तुलना करना। अवलोकन के आधार पर क्रम में जमाना।
- अपने अनुभव की तुलना किसी और के अनुभव से करना। अपने साथी के अनुभव से या फिर किसी लिखित अंश से तुलना करना।

- तुलना की भाषा का उपयोग– जैसे जासौन, लाल, सफेद..... होते हैं, जबकि गेंदे पीले ही होते हैं या एस्किमों बर्फ से घर बनाते हैं जबकि हम मिट्टी से घर बनाते हैं।

(घ) सम्बंध जोड़ना

- अवलोकन के आधार पर सम्बंध जोड़ना जैसे – किसी एक तरह के फूलों में अंखुड़ी की संख्या एक ही होती है। या गोल बीज आदि।

(ङ) अवलोकनों में पैटर्न व क्रम पहचानना

- जीवों (पशुओं, पौधों, कीड़ों आदि) के हिस्सों के सम्बंध में। जैसे अनुपात का क्रम और पैटर्न पहचानना। जैसे फूलों में, शंख में पैटर्न।
- सामाजिक व प्राकृतिक घटनाओं में क्रम व पैटर्न को पहचानना। जैसे हर मौसम में आनेवाले फूल, मेले, उत्सव, रीति-रिवाज आदि में पैटर्न पहचानना।

(च) अवलोकनों को दर्ज करना।

- तालिका या चित्र बनाकर।
- कुछ वाक्य लिखकर।

(छ) अवलोकन के आधार पर निष्कर्ष निकालना

- तुलना, सम्बन्ध, क्रम व पैटर्न के आधार पर छोटे-छोटे सामान्यीकरण या निष्कर्ष तक पहुँचना। जैसे हर महीने कम से कम एक बार पूर्णिमा होती है। कुछ पेड़ों में पतझड़ नहीं होता। जिनमें होता है उसके बाद नई पत्तियाँ आती हैं। तैरने व डूबने का बड़े या छोटे होने से सम्बन्ध नहीं, आदि।

4. समस्या हल करना व निष्कर्ष निकालना

(क) दी गई समस्या को समझना। उसको हल करने के लिए ज़रुरी तथ्य/ बातें चुनना।

(ख) अनुमान लगाना

- लिखित जानकारी या चित्र का संदर्भ समझकर, उसके आगे कुछ हुआ होगा, अनुमान लगाना और लिखने की कोशिश करना।
- कहानी/ विवरण की कुछेक बातें यदि बदलें। यदि ऐसा न होकर कुछ और होता तो पूरी कहानी/ विवरण पर क्या असर पड़ता।

(ग) पढ़कर, अवलोकन करके या चित्र देखकर समझना, कि क्या घटना हुई? किसने की?

(घ) कहानी/ विवरण/ रपट आदि पर निष्कर्ष निकालना। भौगोलिक परिस्थिति या समय के हिसाब से क्या अन्तर पड़ता है? जैसे कुछ जगहों पर ज़मीन से ऊपर घर कहाँ और क्यों बनते हैं। या नदी किनारे का जीवन कैसा होगा?

(ङ) तर्क करना और अपना तर्क दूसरों को समझाना। इसमें कार्य-कारण सम्बंध भी शामिल हैं।

(च) जिग्ज़ॉ, भूल-भुलैयाँ आदि। जैसे जगह पर आधारित पजल्स हल करना।

5. सृजनात्मकता

आमतौर पर सृजनात्मकता से तात्पर्य कुछ बनाने से लिया जाता है। चित्र, मिट्टी की चीजें आदि। चीजें मौलिक हों या किसी की उतारी गई हों, फिर भी उन्हें सृजनात्मकता में लिया जाता है।

हम सृजनात्मकता को सोचने के रूप में भी देख रहे हैं। ऐसी सोच जो कि सृजन की ओर ले जाए। इसके लिए कुछ कौशलों को विकसित करने की आवश्यकता होगी।

कक्षा 3 की कुछ बातें दोहराई जाएँगी। इसमें कविता/ कहानी आगे बढ़ाने, एक ही कहानी के कई अन्त सोचना आदि पर ज़ोर होगा।

(क) एक ही चीज़ से सम्बन्धित कई चीज़ें सोचें जैसे सम्बंधित शब्द, विभिन्न उपयोग आदि।

(ख) एक ही चीज़ के कई तरीके सोचना।

- एक ही आकृति को कई तरह की आकृतियों से बनाना। टेनग्रैम से, छाया से आकृतियाँ बनाना। एक ही सवाल को कई तरह से करना। (गणित के सवाल भी)

(ग) मौलिकता

- एक ही वस्तु के ऐसे उपयोग या सम्बन्ध सोचना जो रोज़मर्रा के नहीं हैं, जैसे डंडे के उपयोग, गमछे के उपयोग या नारियल और कागज़ में सम्बंध आदि।
- वातावरण में आकृतियाँ देखना जैसे बादलों में या पत्तों में।
- आकृतियों, संख्याओं आदि में पैटर्न खोजना व नए पैटर्न बनाना।
- कल्पना से कहानी/ कविता/ चित्र आदि बनाना।
- आसपास की वस्तुओं जैसे मिट्टी, पत्ते, छापे, काड़ी आदि से नई चीजें बनाना।
- विकल्प खोजना – लीक से हटकर उत्तर ढूँढना। कहानी आदि में कुछ घटनाएँ या पात्र बदलकर कहानी पूरी करना। अधूरे चित्र के एक अंश को देखकर कई तरीकों से पूरा करना।

6. जगह की समझ

कक्षा 3 की चीजें दोहराई जाएगी। इन पर विशेष ज़ोर होगा।

(क) परिप्रेक्ष्य समझना

- चित्रों में परिप्रेक्ष्य।
- अलग-अलग स्थान से वस्तुओं का चित्र बनाना, उनमें अन्तर/ समानता पहचानना।

(ख) चित्र में उत्तर-दक्षिण आदि का उपयोग व अभ्यास।

(ग) नक्शे पढ़ पाना/ बनाना। स्कूल, गाँव, कई गाँव के नक्शे बनाना। नक्शे में संकेत पहचानने की शुरूआत।

(घ) आकृतियों की पहचान

- विभिन्न आकृतियों के गुणों को पहचानना और उन्हें व्यक्त करना जैसे – त्रिभुज, चतुर्भुज, वर्ग, आयत आदि।
- निर्देश के अनुसार उपयुक्त आकृतियाँ बनाना।
- ऐसी आकृतियाँ ढूँढना जो हर तरह से एक जैसी हैं। उन्हें एक के ऊपर एक रखकर तुलना करना, कोने मिलाना, कोने व रेखाओं की तुलना करके हर प्रकार से एक जैसी, सर्वांगसम आकृतियों को ढूँढना।
- सममिति की पहचान, सरल आकृतियों में।
- चीज़ों के प्रतिबिम्ब की उन चीज़ों से तुलना।

(ङ) नापन/मापन

- दूरी नापना, मीटर स्केल से चीजें नापना, चित्र रेखाएं, दूरी, नक्शे पर दूरी।
- क्षेत्रफल (छोटा/बड़ा) अंदाज़ व अनुपात। छोटी इकाइयाँ, पत्तों, कागज़ व टुकड़ों आदि से क्षेत्रफल नापना।

- क्षेत्रफल का अहसास व मापन। माचिस/ गुटके आदि से। चौखाने कागज पर बने चित्र से।
- आयतन नापना – कप में या इकाई में। आधे से भी कम/ज़्यादा। एक ही मात्रा के पानी को अलग-अलग बर्तन में नापना। द्रवों का संरक्षण। एक लीटर, आधे लीटर से परिचय। एक लीटर आधे लीटर का दुगना होता है।

7. गणितीय क्षमता

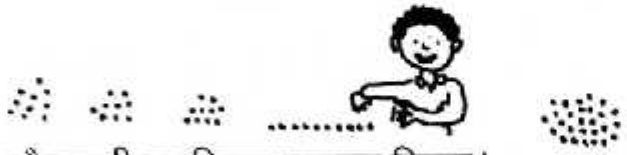

कक्षा 3 की चीज़ें दोहराना।

(क) चीज़ों को 10–10 बंडल बनाकर और बाकी का हिसाब लगाकर गिनना।

(ख) संख्याओं को क्रम में जमाना। 3 अंक की 4-5 संख्याओं तक घने-विरले समूह गिनना।

(ग) 1000 तक गिनती।

(घ) संख्याओं में पैटर्न ढूँढना व बनाना।

(ङ) 2, 3, 4, 6, 10, 20, 100 से गुणा, मौखिक व लिखित। दो अंकों की संख्या का एक या दो अंकों की संख्या से गुणा करना। 3 अंक की संख्या का एक ही अंक की संख्या से गुणा करना। सब के लिखित सवालों को हल कर पाना। बता पाना कि सवाल कैसे हल किया।

(च) 3 अंकों तक की संख्याओं का जोड़ – हासिल वाला, घटाना – उधार लेकर। विभिन्न तरीकों से मौखिक व लिखित जोड़-घटा करना और जाँचना।

(छ) मौखिक गणित - जोड़, घटाना, गुणा, भाग के सवाल।

(ज) इबारती सवाल - जोड़ के सभी, जबकि के सवाल भी।

(झ) जोड़, घटाना, गुणा के समीकरण, इबारती सवाल, कहानियाँ हल करना व बनाना। खड़े, आड़े-जोड़, घटाना, गुणा और भाग के अभ्यास। जोड़-घटा में पैटर्न देखना।

(ञ) 2,3,4,6,10,12,20,100 में भाग – लिखित व मौखिक। शेष बचे वाले भाग भी।

(ट) वास्तविक संदर्भ में भाग के सवाल बनाना, एक दूसरे को हल करने के लिए देना।

(ठ) दूरी समय व वज़न की इकाईयाँ। तीनों को नापना, रुपए-पैसे भी। बाज़ार, बैंक, मापन की गतिविधियों के रोल प्ले करवाना।

(ड) संख्याओं के गुण – सम, विषम, अभाज्य संख्या।

(ढ) भिन्न लिखना। बड़ी-छोटी चित्र से भिन्न पहचानना व लिखना। वस्तुओं के समूह के हिस्से करवाना। 28 का 1/4 आदि। भिन्न के इबारती सवाल।

(ण) स्थानीय मान – सैकड़े तक की संख्या में अंकों का स्थानीय मान बताना। इसके आधार पर 3 अंकों की संख्या में बड़ी छोटी संख्याएँ पहचानना।

(त) संख्याओं को विस्तारित रूप में लिखना। इसका उपयोग जोड़-घटा में भी करना।

8. ज़िम्मेदारी, एकाग्रता, आत्मविश्वास

(क) कक्षा तीन में दिए दोनों बिन्दुओं को दोहराना।

(ख) नियमित कार्य याद करके करने की शुरुआत।

(ग) दिए गए कार्य को करना।

चित्र कहानी

एक थी । एक दिन वह अपनी में एक का चित्र बना रही थी। तभी उसके से उसकी गिर पड़ी। लुढ़क कर वह एक 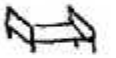 के नीचे चली गई।

उसे निकालने के लिए एक लेकर आई, पर वह तक पहुँचा ही नहीं। फिर वह एक लेकर आई लेकिन उससे पेंसिल घसीटते नहीं बना। तभी ने देखा कि उसकी से निकलकर एक आया। वह 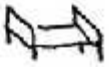 के नीचे लाने के लिए घुसा। पर सबसे पहले निकली की एक पुरानी ।

फिर निकली एक और अंत में निकली उसकी । बहुत हुई। उसने पूछा - मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूँ? इस पर ने कहा – तुम मेरे बना सकती हो। और साथ ही मेरे । ने वैसा ही किया। उसके पैर और पर दोनों बनाए और चित्र पूरा हो जाने पर अपने दोस्त को उड़ जाने दिया।

●*अपनी कापी में इन सवालों के उत्तर लिखो।*

1. लड़की का दोस्त कौन था? 2. उसने लड़की की क्या मदद की? 3. दोस्त उड़कर कहां गया होगा?

4. इसी कहानी को आगे बढ़ाओ, इसी तरह बीच-बीच में चित्र बनाते हुए। आखिरी हिस्सा और एक शुरूआत यहां पर दी हुई है।

ने वैसा ही किया और चित्र पूरा हो जाने पर अपने दोस्त को उड़ जाने दिया।

कुछ दिनों बाद वापिस आया। उसके साथ एक भी था।

● लड़की का दोस्त अगर खरगोश होता तो वह क्या बनाने को कहता?

- अब तुम भी एक नई कहानी बनाने की कोशिश करो। यहां के कुछ चित्रों को अपनी कहानी में डाल सकते हो।

कहानी पूरी करो

एक 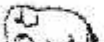 था। उसके पास एक था। एक दिन एक उसका ले गया।   को ढूंढने निकला। सुबह का समय था। अपनी मल रहा था। को एक पर एक दिखी। ने से पूछा, "क्या तुमने को देखा है?"

 ने पूछा, "सुबह-सुबह उस दुष्ट को क्यों पूछ रहे हो?" ने कहा, "वह चूहा मेरा मटका लेकर भाग गया है।" चिड़िया ने कहा, "अभी तो उगा ही है, चूहा पर ही होगा।"

  के की ओर चला। रास्ते में मिला। ने से पूछा,"क्या तुमने को देखा है, वह मेरा लेकर भाग गया है।" बोला, "वह तो गया है। कह रहा था कि लाऊंगा।"

  की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे मिली। अपनी को चाट रही थी।

 ने से पूछा, "क्या तुमने को देखा है? वह मेरा लेकर भाग गया है" बोली, " तो अब मेरा है। मैने को खा लिया है।" और में झगड़ा हो गया।

 और दोनों को अपना कह रहे थे। दोनों झगड़े के हल के लिए के पास गए। ने और की बात ध्यान से सुनी।----------

---

---

1. कहानी पूरी करो (ऊपर दी जगह में)

(क) उल्लू ने क्या फैसला किया होगा? (ख) क्या फैसला हाथी और बिल्ली ने मान लिया होगा?

2. नीचे दी कहानी को आगे बढ़ाकर पूरा करो –

एक ––– पर बहुत सारी चिड़ियां रहती थीं। वे दिन भर फल व पत्ती खाती थी। घोंसला बनाने के लिए भी वे ––– का इस्तेमाल करती थीं। एक दिन वहां एक नई ––––– उड़ती आई।

घस्सु और चटनी

एक लड़का था घासीलाल। लोग प्यार से उसे घस्सु कहते थे।

घस्सु सब काम तो ठीक करता था पर था बड़ा भुलक्कड़।

एक दिन वह अपनी मौसी के घर गया।

इस कहानी को अपने शब्दों में यहां लिखो।

(1) तुमने कौन–कौन सी चटनियाँ खाई हैं? उनके नाम लिखो। साथ में यह भी लिखना कि किस चीज से बनी थी। नीचे की तालिका में भरो।

क्र.	चटनी का नाम	क्या–क्या डलता है	रंग	तुम्हें कैसी लगती है

(2) किस मौसम में कौनसी चटनी खाते हो? कौनसी चटनी तुम्हें सबसे अच्छी लगती है?

(3) अपने घर में पता करके किसी एक चटनी के लिए जरूरी सामग्री और सामान की सूची बनाओ। इसी चटनी को बनाने का तरीका अपनी कॉपी में लिखो।

(4) किन–किन चीज़ों का अचार डालते हैं, घर से पता करके कापी में लिखो।

(5) घासीलाल की क्या खास बात थी?

लोग उसे किस नाम से पुकारते थे?

अपने कुछ दोस्तों का सही नाम और उनके बारे में कोई खास बात लिखो।

(6) घस्सू की मौसी और घस्सू की मां में क्या रिश्ता होगा?

(7) घर लौटते समय घस्सु को कौन–कौन मिला? क्रम में लिखो।

(8) इन शब्दों का क्या अर्थ होता है? इन्हें उपयोग करके कापी में वाक्य बनाओ।

खुशी से उछल पड़ा,मार–मारकर चटनी बना दूंगी, इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया।

(9) अगर तुम घस्सु की जगह होते तो चटनी नाम कैसे याद रखते?

(10) चटनी, हलवा और खीर को कहानी के क्रम में जमाओ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

नीचे लिखे शब्दों में कौन–कौन से अक्षर और मात्राएँ आए हैं ढूंढकर गोला लगाओ। शब्दों से वाक्य बनाओ।

नर	नारी
सेवक	सेविका
बेटा	बिटिया
मोर	मोरनी
जेठ	जेठानी
नाग	नागिन
दुल्हा	दुल्हिन
पिता	माता

न	ा	र		ी
स	ं	ि	व	क	ा
म	ा	ं	र	न	ी
द	ो	ल	ि	ह	न
म	ा		त		ा
ज	ं	ठ	ा	न	ी
न	ा		ि	ग	न
न					र
ि	ब	ि	ट	य	ा
ब		ं		ट	ा
द		ो	ल	ह	ा
ि		प		त	ा
म		ा		ं	र
ज			ं		ठ
न			ा		ग
स		ं		व	क

अनुलेखन–1

समूह में बैठकर, वाक्यों को पढ़कर अपनी कॉपी में लिखो।

जिस तार से मकड़ी जाला बनाती है, उसे वह खुद अपने शरीर से निकालती है। मकड़ी के जाले में दो तरह के तार होते हैं। कुछ ऐसे जो बहुत ही चिपचिपे होते हैं, और कुछ जो चिपचिपे नहीं होते। मकड़ी पहले उन तारों से, जो कि चिपचिपे नहीं होते, एक ढांचा बना लेती है। इन तारों पर पैर रखकर वह बाकी जाला बुनती है। यह बाकी जाला बहुत ही चिपचिपे तारों का बना होता है।

3.(क) अब आपस में अभ्यास पुस्तिका बदलकर एक दूसरे का लेखन जाँचो। गल्तियों पर गोला बनाओ और अपनी गल्तियों को सुधारकर लिखो।

(ख) आपस में चर्चा करें– मकड़ी के बारे में तुम और क्या–क्या जानते हो ?

(ग) अब चर्चा के आधार पर मकड़ी के बारे में अपनी कॉपी में पाँच वाक्य लिखो।

फुर्र, फुर्र

एक जुलाहा सूत कातने के लिए रूई लेकर आ रहा था। वह नदी किनारे सुस्ताने के लिए बैठा ही था कि ज़ोर की आँधी आई। आँधी में उसकी सारी रूई उड़ गई। जुलाहा घबराया। "अगर बिना रूई के घर पहुँचा तो मेरी पत्नी तो बहुत नाराज़ होगी।" घबराहट में उसे कुछ न सूझा। उसने सोचा, "यही बोल दूँगा– *फुर्र, फुर्र।*" और वह 'फुर्र-फुर्र' बोलता जा रहा था। आगे एक चिड़ीमार पक्षी पकड़ रहा था। जुलाहे की फुर्र-फुर्र सुन कर सारे पक्षी उड़ गए। चिड़ीमार को बहुत गुस्सा आया। वह जुलाहे पर बहुत चिल्लाया, "तुमने मुझे बरबाद कर दिया। आगे से तुम ऐसा कहना, *पकड़ो! पकड़ो!*"

जुलाहा ज़ोर-ज़ोर से "पकड़ो! पकड़ो!" रटता गया। रास्ते में कुछ चोर रुपए गिन रहे थे। जुलाहे की "पकड़ो! पकड़ो!" सुन कर वे घबरा गए। फिर उन्होंने देखा कि अकेला जुलाहा ही चला आ रहा था। चोरों ने उसे पकड़ा और फिर गुर्राते हुए कहा, "यह क्या बक रहे हो? हमें मरवाने का इरादा है क्या? तुम्हें कहना चाहिए, *इसको रखो, ढेरों लाओ* ,समझे?"

जुलाहा यही कहता हुआ आगे बढ़ गया, "इसको रखो, ढेरों लाओ।" जब वह श्मशान के पास से गुज़र रहा था तो वहाँ गाँव वाले शवों को जला रहे थे। उस गाँव में हैजा फैला हुआ था। लोगों ने जुलाहे को कहते सुना, "इसको रखो, ढेरों लाओ," तब उन्हें बड़ा गुस्सा आया। वे चिल्लाए, "तुम्हें शर्म नहीं आती?" "हमारे गाँव में इतना भारी दुख फैला है और तुम ऐसा बकते हो। तुम्हें कहना चाहिए *यह तो बड़े दुख की बात है।*"

जुलाहा शर्म से पानी-पानी हो गया। वह यही रटता हुआ आगे बढ़ने लगा, 'यह तो बड़े दुख की बात है।' कुछ देर बाद वह एक बारात के पास से गुज़रा। बारातियों ने उसे यह कहते हुए सुना, "यह तो बड़े दुख की बात है, यह तो बड़े दुख की बात है।" इतना सुनकर वे जुलाहे को पीटने के लिए तैयार हो गए। बड़ी मुश्किल से जुलाहे ने सफाई दी तो उन्होंने कहा– "सीधे से आगे बढ़ो, और हाँ, अब तुम यह रटते जाना– *भाग्य में हो तो ऐसा सुख मिले।*"

अब जुलाहा यही रटता हुआ अपनी राह चल पड़ा। चलते-चलते अंधेरा हो गया। घर से निकलते

समय उसकी पत्नी ने उससे यही कहा था कि "जहाँ रात हो जाए वहीं सो जाना।" जुलाहा थक भी गया था। वह वहीं सो गया।

अगले दिन जब सुबह उसके मुँह पर गरम पानी पड़ा तब जुलाहा हड़बड़ा कर उठा। आँखें खोली तो देखता ही रह गया– यह तो उसी का घर था! और अभी-अभी उसकी पत्नी ने ही उस पर चावल का गरम पानी फेंका था। जुलाहे के मुँह से निकला, "भाग्य में हो तो ऐसा सुख मिले।"

अभ्यास

इन प्रश्नों के उत्तर दो–

1. 'क' स्तम्भ में लिखे व्यक्तियों से क्या कहने के कारण जुलाहे को डाँट पड़ी? 'ख' स्तम्भ से जोड़ी मिलाओ।

'क'	'ख'
बाराती	'इसको रखो, ढेरों लाओ'
चिड़ीमार	'फुर्र-फुर्र'
चोर	'यह तो बड़े दुख की बात है'
गाँव वाले	'पकड़ो-पकड़ो'

जोड़ी मिलाने के बाद इन्हें सही क्रम में लिखना।

2. चिड़ीमार ने क्यों कहा – 'तुमने मुझे बरबाद कर दिया'?
3. इस कहानी में तुम्हें कौन सी बातें अच्छी लगीं और क्यों?
4. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ शब्दों के नीचे लाइन खिंची है। पाठ में इन वाक्यों को ढूँढ कर पता करो कि ऐसा हर शब्द किसके बारे में लिखा गया है। उस व्यक्ति का नाम लिखकर वाक्य फिर से पढ़ो। कहानी में ऐसे और भी शब्द ढूँढो।

हर बार किसी का नाम लेने के बजाय हम 'उसे', 'वह', 'हमें' जैसे शब्दों का इस्तमाल करते हैं। इससे बात कहने लिखने में आसानी होती है। ।

क. <u>उसे</u> डर था कि कहीं भूल न जाऊँ।

ख. चिड़ीमार को गुस्सा आया, <u>वह</u> जुलाहे पर चिल्लाया।

ग. <u>उन्होंने</u> देखा कि जुलाहा अकेला चला आ रहा है।

घ. हमारे गाँव में दुख फैला है और <u>तुम</u> ऐसा कहते हो।

ङ. इतना सुनकर वे जुलाहे को पीटने को तैयार हो गए।

च. यह तो उसी का घर था।

5. कहानी में एक मुहावरा रेखांकित किया गया है। उसका क्या अर्थ है? इस मुहावरे से कम से कम तीन वाक्य बनाओ।

6. गाँव वालों ने ये क्यों कहा, 'तुम्हें शर्म नहीं आती?'

7. इस कहानी का नाटक खेलो।

इन चित्रों को क्रम में जमाओ

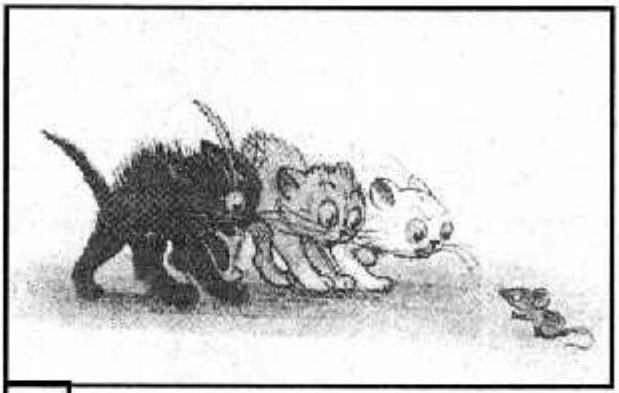

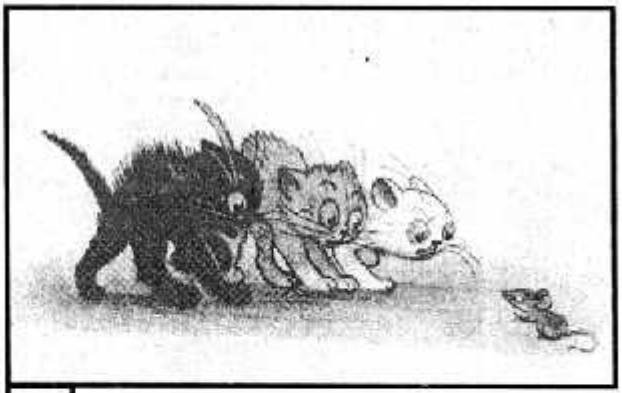

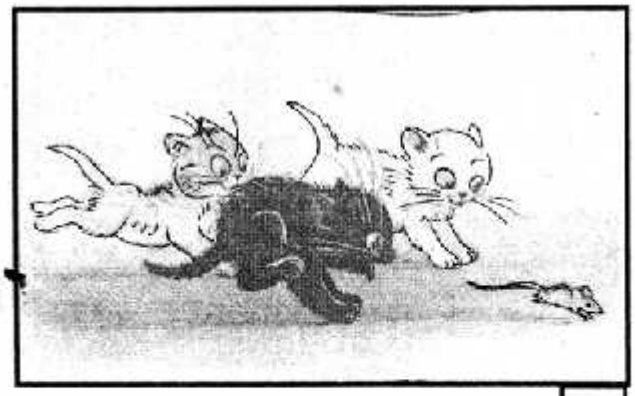

क्या तुम मेरी अम्मा हो?

एक बार एक चूज़ा जब अपने अंडे से निकला तो उसकी मां वहां पर नहीं थी। उसे अपनी मां कहीं दिखी ही नहीं।

चूज़ा उठ कर अपनी मां को ढूंढने चला। पहले पहले तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे, पर धीरे-धीरे संभल गये।

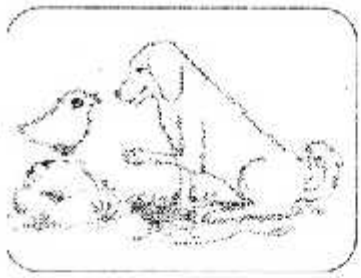

कुछ दूर पर जा कर चूज़े को एक कुत्ता मिला।
कुत्ते को देखकर चूज़े ने कहा- क्या तुम मेरी अम्मा हो?

कुत्ते ने कहा - नहीं, मेरे तो चार पैर हैं। तुम्हारी अम्मा के तो सिर्फ दो पैर हैं।

चूज़ा आगे बढ़ा। एक मोड़ पर जा कर उसे एक लड़का मिला।
चूज़े ने कहा - तुम्हारे तो दो ही पैर हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।

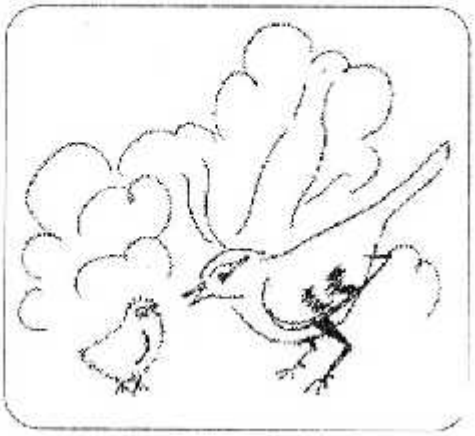

लड़के ने कहा - नहीं नहीं, मेरे तो पंख ही नहीं हैं। तुम्हारी अम्मा के तो दो पंख हैं।

चूज़ा आगे बढ़ा। एक पेड़ के पास उसे एक काला कबूतर मिला। चूज़े ने कहा - अहा, तुम्हारे तो दो पैर और दो पंख हैं। ज़रूर तुम ही मेरी अम्मा हो।

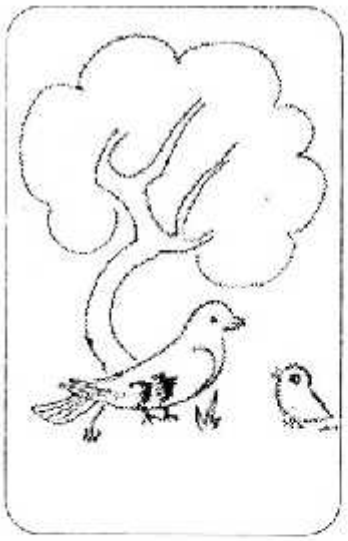

पर काले कबूतर ने कहा- मेरी चोंच तो स्लेटी रंग की है। तुम्हारी मां-की तो पीली भूरी चोंच है।

चूज़ा आगे बढ़ा। रायमुनैया की एक झाड़ी के पास उसे एक मैना मिली।

चूज़े ने कहा- तुम ही हो मेरी अम्मा। तुम्हारी पीली भूरी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं। ज़रूर तुम ही हो मेरी अम्मा।

पर मैना ने कहा - नहीं नहीं, मैं तो मैना हूं। तुम्हारी अम्मा मुझसे काफी बड़ी है।

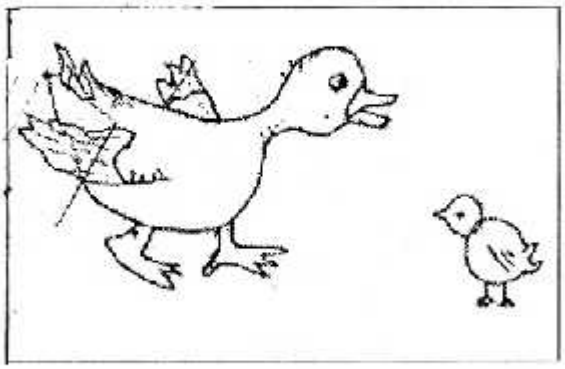

चूज़ा फिर से आगे बढ़ा। एक पानी के डबरे में उसे दिखी बत्तख। चूजा बहुत खुश हुआ। चिल्लाया - मिल गई।

तुम ही हो मेरी अम्मा। मैना से बड़ी हो, तुम्हारी पीली भूरी सी चोंच है, दो पंख हैं, दो पैर हैं।

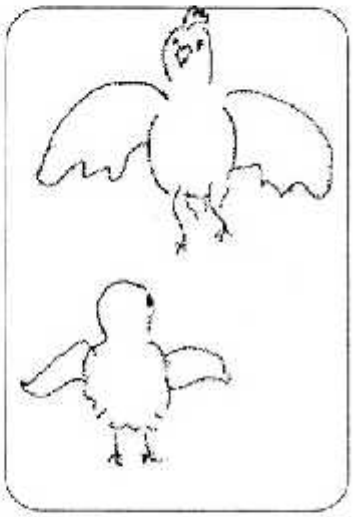

पर बत्तख ने कहा - क्वैक क्वैक, नहीं नहीं, मैं तो बत्तख हूं। मैं बोलती हूं क्वैक क्वैक, और तुम्हारी मां तो कौं-कौं-कौं बोलती है।

बेचारा चूज़ा बहुत निराश हुआ। उसकी आंखों से आंसू निकलने लगे। तभी आवाज़ सुनाई दी - कौं-कौं-कौं।

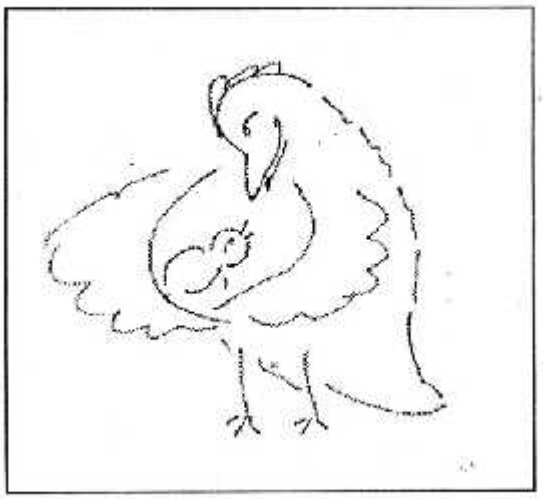

चूज़े ने देखा कि जो कौं..कौं..कौं की आवाज़ निकाल रही थी, वो मैना से बड़ी थीं, उसके पीली भूरी चोंच थी, दो पंख थे, दो पैर थे।

वो दौड़ा-दौड़ा उसके पास गया और बोला - तुम ही मेरी अम्मा हो ना?

मुर्गी ने उसे अपने पंखों में समेटते हुए कहा - हां, मैं ही तुम्हारी अम्मा हूं।

.....

नीचे यही कहानी दी हुई है। उसे देखो:

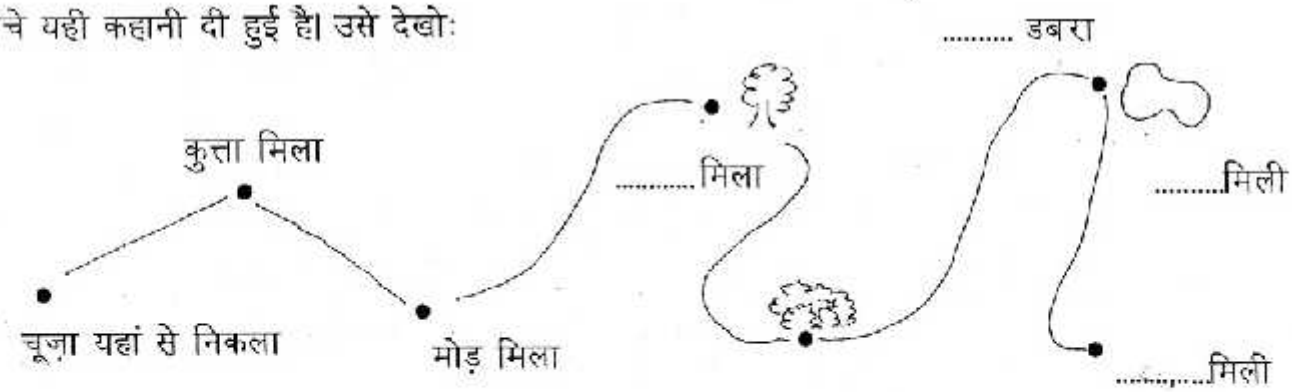

● क्या तुम भी ऐसी कहानी बना सकते हो?

नीचे के नक्शे की मदद से बगुले की कहानी आगे बढ़ाओ

एक बार जब एक चूहे के बच्चे की आंख खुली तब उसकी मां उसके पास नहीं थी। वह घबरा कर अपनी मां को खोजने निकल पड़ा। कुछ दूर पर उसे एक मछली मिली -

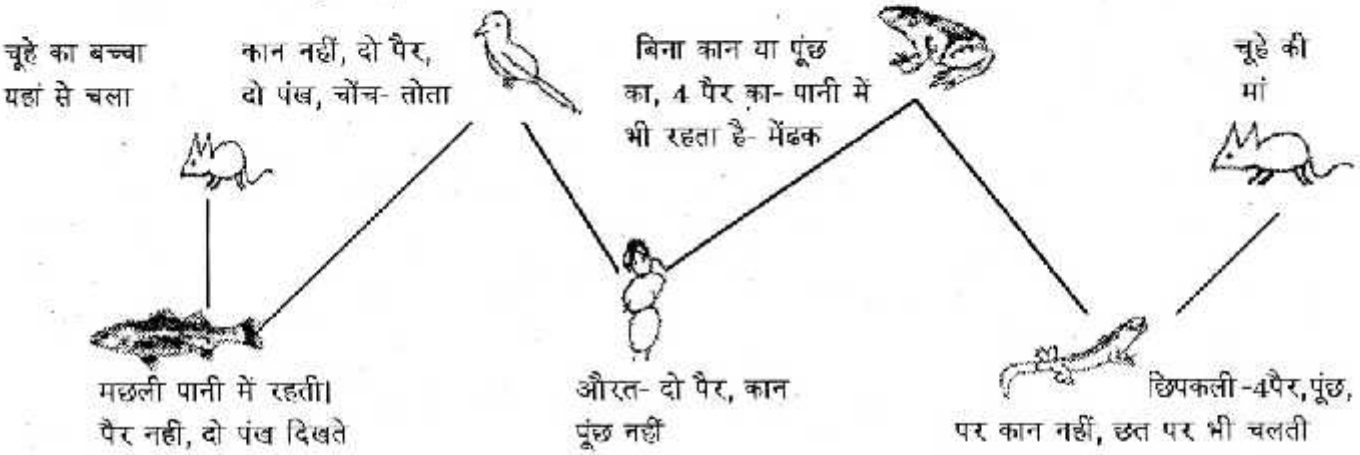

.....

● देखो मैंने कछुए के बारे में कुछ बातें लिखी हैं-

पानी में रहता
चार पैर का
कड़ी पीठ का
धीरे-धीरे चलता

अब मैं कछुए के बारे में एक पैराग्राफ लिखता हूं

कछुआ पानी में रहता है। उसके चार पैर होते हैं।
वह धीरे-धीरे चलता है। उसकी कड़ी पीठ होती है।

● नीचे छिपकली के बारे में कुछ चीजें लिखी हैं

पीले रंग की
दीवार पर चलती
कड़ी पूंछ हिलाती
.....
.....

अब तुम्हारी बारी है, छिपकली के बारे में पैराग्राफ लिखो

● *इस कहानी को छोटा कर के (इसका सार) यहां लिखा है। पढ़कर बताओ कौन सा सही है।*

1. एक चूज़ा अपने अंडे से निकला। उसकी मां उसे दिखाई नहीं दी। वह उसे ढूंढने निकला। पास ही एक पेड़ के नीचे बैठी उसको अपनी अम्मा मिल गई। चूज़े की अम्मा ने उसे अपने पंख में समेट लिया।

2. एक चूज़ा अपनी अम्मा को ढूंढने निकला। रास्ते में कई लोग मिले– कुत्ता, लड़का, कबूतर, मैना, बत्तख। चूज़े ने सबसे पूछा– क्या तुम मेरी अम्मा हो? पर सबने मना कर दिया। इन सबसे मिलकर चूज़े को पता चला कि उसकी अम्मा के दो पैर, दो पंख, पीली–भूरी चोंच है और वह कौं–कौं करके बोलती है। काफी देर ढूंढने के बाद उसे ऐसी ही एक चीज़ दिखी जो कौं–कौं बोल रही थी। चूज़ा झट पहचान गया कि यही उसकी अम्मा है।

● टोली बनाकर इस कहानी का नाटक खेलो।

● चूज़ा अंडे से निकलता है। क्या कुत्ता भी अंडे से निकलता है? पता करो कि और कौन–कौन से जीव चूज़े के समान अंडे से निकलते हैं और कौन से नहीं।

● **तालिका भरो** – कहानी में कौन–कौन से जीव आए हैं? उनके नाम लिखो और उनके बारे में तालिका में पूछी गई चीज़ें भरो। और भी जीवों के नाम लिखकर उनके बारे में कापी में तालिका बना कर लिखो।

जीव का नाम	कितने पैर	रंग	पंख	कैसी आवाज़?	क्या खाता/खाती

● कहानी में दिए चित्रों में जो दिख रहा है, उनके नाम लिखो।

● इस कहानी के आधार पर बताओ कि मुर्गी कैसी होती है? (बोलकर और लिखकर)।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

♣ **कहानी में देखकर खाली स्थान भरो–**

1. कुछ दूर जाकर चूज़े को — — — मिला।

2. कुत्ते को देखकर — — ने कहा।

3. वह मैना से — — थी।

♣ **गलत अंशों को सुधारो और नीचे लिखो-**

एक चूजा अपनी अंडा से निकली। उसका माँ उस दिखाई नहीं दी। वह उसे ढूँढने निकली। पास ही एक पेड़ के नीचे बैठा उसकी अम्मां मिल गई। चूज़े के अम्मां ने उसे अपने पंख में समेटा लिया।

— —

— —

— —

♣ **कहानी में चूज़े को जो-जो मिला उसमें और चूज़े में क्या-क्या अन्तर थे।**

नाम	समानता	अन्तर
कुत्ता	दो आँखें	

♣ ***तुम*** मेरी अम्मां हो । ***तुम्हारी*** दो टाँगे हैं।
मैं तुम्हारी अम्मां नहीं। ***मेरी*** स्लेटी चोंच है।

अब इनसे तुम वाक्य बनाओ–

हम– — — — — — — — — — — — *हमारी,–* — — — — — — — — — — —

आप– — — — — — — — — — — — *आपकी,–* — — — — — — — — — — —

वह– — — — — — — — — — — — *उसकी,–* — — — — — — — — — — —

तुम– — — — — — — — — — — — *तुम्हारी,–* — — — — — — — — — — —

वे– — — — — — — — — — — — *उनकी–* — — — — — — — — — — —

♣ **जो शब्द किसी चीज़ के बारे में बताते है** कहानी में से और ढूँढकर लिखो जो सुनते हो वह भी लिखो।

जैसे– ***चार*** पैर — — — — — — — — — — — —

दो पैर — — — — — — — — — — — —

दो पंख — — — — — — — — — — — —

स्लेटी चोंच — — — — — — — — — — — —

कछुआ उड़ा हवा में

एक था कछुआ। उसे घूम फिर कर चीज़ें देखने और बातें करने में बहुत मज़ा आता था।

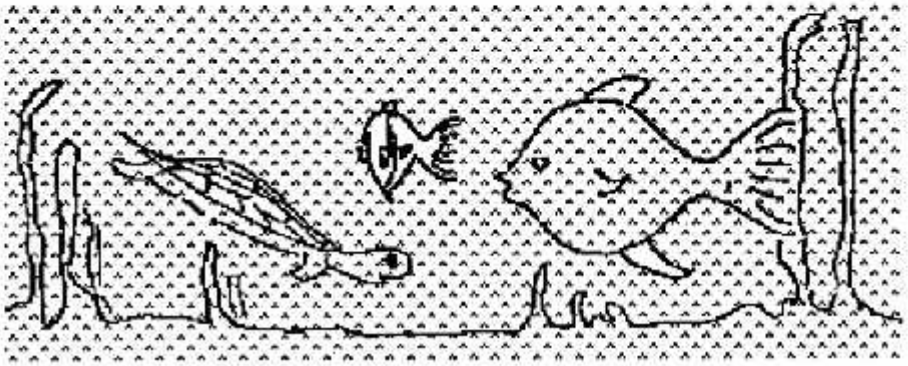

वह पानी के अंदर मछलियों से मिलता था। कहता - दैया रे! तुम लोग तो बहुत सुनहरी और चौड़ी सी लग रही हो। ज़रुर ये लंबी लंबी-घासों का ही कमाल है।

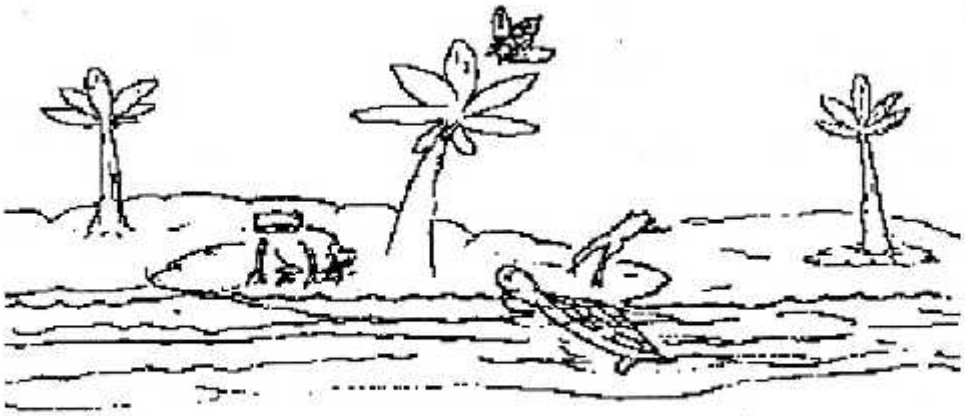

कभी वो कमल के फूलों के पास मेंढकों से बातचीत करता - दैया रे! कितने सुंदर और लंबे हैं ये कमल के फूल। बहुत मज़ा आता है।

सांप मिलता तो सांप से कहता - दैया रे! तुम तो लंबी घास में दिखाई ही नहीं देते।

एक दिन उसने पेड़ पर बगुलों के एक जोड़े को घोंसले में देखा तो कहा - दैया रे! कितना ऊंचा है तुम्हारा घर। तुम्हें चक्कर नहीं आते।

बगुलों ने कहा - नहीं। हम तो इससे भी ज़्यादा ऊपर उड़ते हैं। वहां भी सिर नहीं चकराता।

कछुए ने कहा - काश, मैं भी उड़ सकता। कितना मज़ा आता उड़ते-उड़ते दुनिया देखने में।

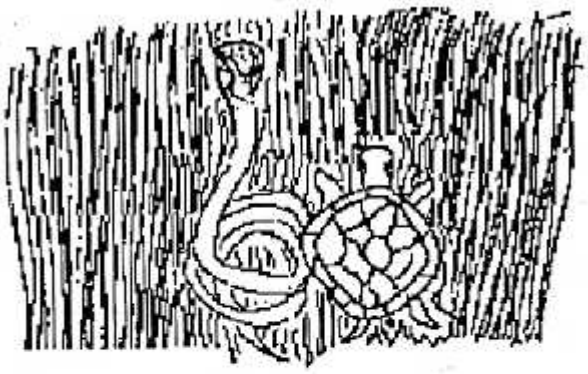

बगुलों ने कहा - उड़ तो सकते हो। एक तरीका है जिससे तुम हमारे साथ उड़ सकते हो।

कछुआ बहुत खुश हुआ। बोला - सच? दैया रे, मैं उड़ पाऊंगा?

बगुलों ने कहा - हां, लेकिन एक शर्त है, तुम्हें अपना मुंह बंद रखना होगा।

कछुआ बोला- हां हां, मैं कुछ भी करने के लिये तैयार हूं।

बगुले एक लंबी सी लकड़ी लेकर आये। उन्होंने कहा –

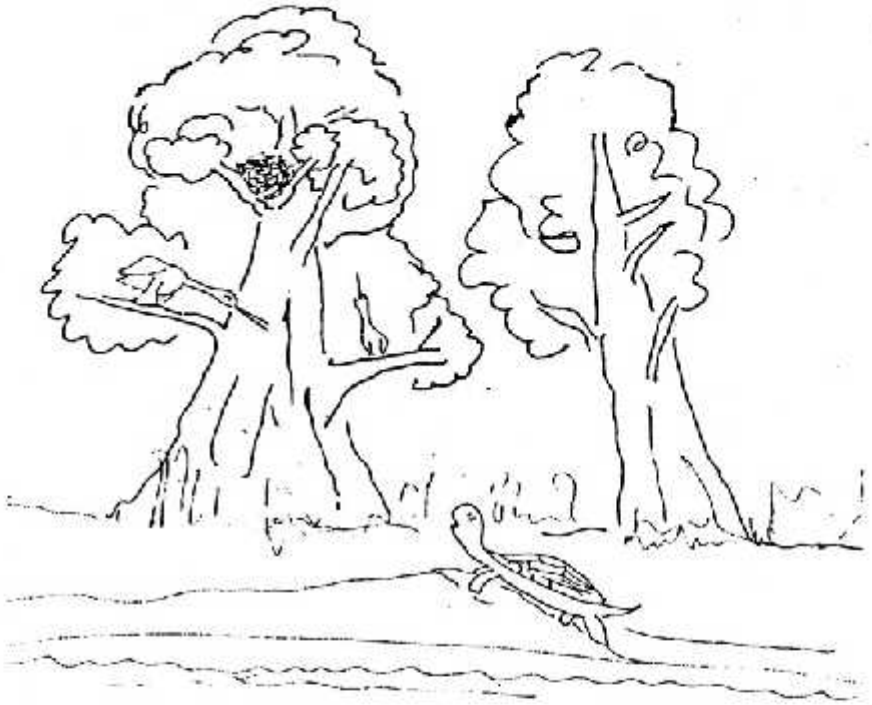

तुम इस लकड़ी को बीच से अपने मुंह में पकड़ लो। हम इसके दोनों छोर अपने मुंह में पकड़ कर उड़ेंगे। हम उड़ेंगे तो तुम भी उड़ोगे। लेकिन अगर तुमने ज़रा भी बात करने की कोशिश की और तुम्हारा मुंह खुला तो तुम धड़ाम से नीचे आ जाओगे।

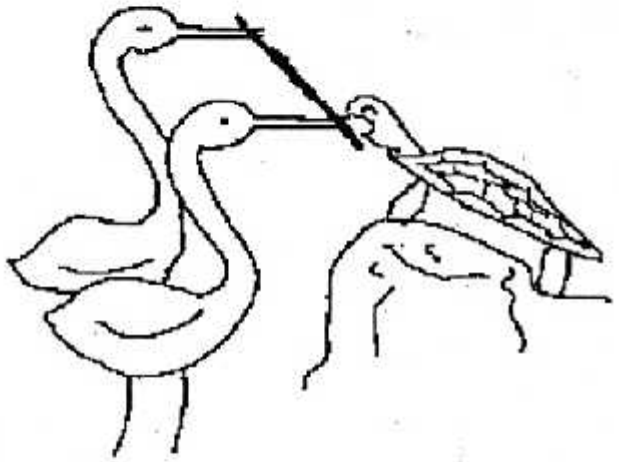

कछुआ बोला - हां हां, पर चलो उड़ें तो सही। चलो, चलो।

तीनों ने लकड़ी मुंह में पकड़ ली और उड़े। कछुए ने टंगे-टंगे ही आंखें नीचे कर के देखा।

अरे वाह। मछलियां तो ऊपर से पतली सी लग रही थीं। क्या ये सचमुच वही मछलियां थीं?

और वो घास तो पता नहीं कैसी दिख रही थी। कछुआ बगुलों को ये बताने ही जा रहा था कि उसे याद आ गया कि अभी उसे चुप ही रहना है।

वे तीनों और ऊपर उड़े। कछुए ने देखा कि कमल के फूल चौड़े-चौड़े से दिख रहे थे। और उनकी डंठलें तो नज़र ही नहीं आ रही थीं। मेंढक भी कुछ अलग लग रहे थे। वो फिर से बगुलों को ये सब बताने ही वाला था कि उसे फिर याद आ गया और उसने मुंह बंद रखा।

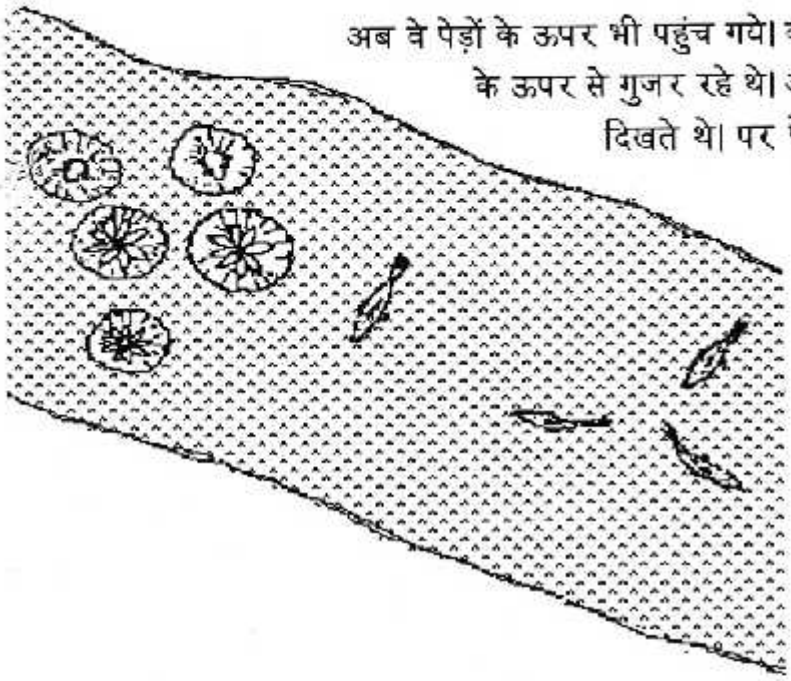

अब वे पेड़ों के ऊपर भी पहुंच गये। वहां से कछुए ने देखा कि वो बगुलों के घोंसलों के ऊपर से गुजर रहे थे। अब तो उसे अंडे भी दिख रहे थे जो पहले नहीं दिखते थे। पर पेड़ का तना नज़र ही नहीं आ रहा था।

अचानक उसने देखा कि सांप, जो लंबी घास में आसानी से दिखाई नहीं देता था, एकदम साफ-साफ नज़र आ रहा था। उससे रहा न गया।

दैया रे! वो चीखा। आगे का वाक्य तो उसके मुंह में ही रह गया। क्योंकि जैसे ही उसका मुंह खुला, लकड़ी छूट गई और कछुआ नीचे गिरने लगा।

छपाक! कछुआ पीठ के बल पानी में जा गिरा।
उसकी कड़ी पीठ को ज़्यादा चोट नहीं आई। उसने सोचा चलो बच गए। फिर वह घूर-घूर के चारों और देखने लगा। सब कुछ फिर से वैसा का वैसा ही दिख रहा था जैसा पहले दिखता था। वह मछली को ढूंढ़ने चला।

1. कछुए ने ऊपर उड़ते हुए क्या-क्या देखा?

_____

_____

2. इनमें से कौन सी चीजें ऐसी हैं जो उसे ऊपर से नही दिखतीं? गोला लगाओ

घास, डंठल, पानी, अंडे, तना, मेंढक, कमल

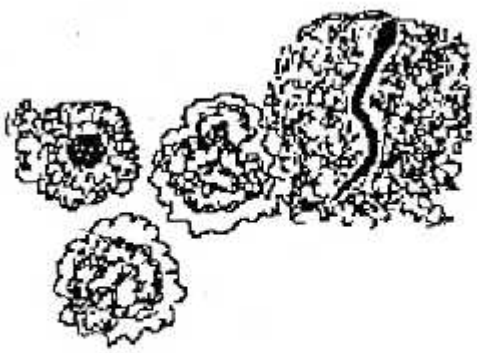

3. कौन सी चीजें ऊपर से नहीं दिख रहीं थी जो नीचे से दिखती हैं?

_____

_____

4. कछुआ अगर तुम्हारे मोहल्ले के ऊपर से गुजरता तो तुम्हारा घर उसे कैसा दिखता?

तुम्हारा स्कूल कैसा दिखता? कापी में चित्र बनाओ।

5. क्या कुछ ऐसा हो सकता है जिससे कछुआ उड़ भी ले और बात भी कर पाए?

6. कछुआ पानी में वापस पहुंच कर मछलियों को अपनी यात्रा के बारेमें क्या-क्या बताएगा। अपनी कापी **में** लिखकर दोस्तों को पढ़वाओ।

7. कहानी में आए चित्रों में इन सब को ढूंढो :-

मछली, मेंढक, कमल, घोंसला, बगुले, सांप, अंडे, घास, कछुआ।

ढूंढ कर सभी चित्रों में इनके नाम इन्हीं के चित्र के नीचे लिखो।

8. कछुआ किन-किन से मिलता था?

9. कछुआ कैसे उड़ा? ----------

10. नीचे दिए पैराग्राफ में मोटे लिखे शब्दों को ध्यान से पढ़ो।

जैसे ही उसका **मुंह खुला**, लकड़ी **छूट** गई। **कछुआ** पीठ के बल पानी में जा **गिरा**। छपाक की आवाज़ हुई। कछुए की कड़ी पीठ को ज़्यादा **चोट** नहीं आई। **उसने** चारों ओर देखा तो **पाया** कि सब-कुछ पहले जैसा ही दिख रहा था।

अब तुम यहां दिए शब्दों या शब्दों के समूह में से चुनकर नीचे दिए पैराग्राफ में खाली स्थान **भरो**:-

बगुले, रहते थे, काट दिया, गई, रहता था, फंस गई, रोहु, बिछाया, रहती थी।

एक तालाब के किनारे एक बगुला ---------- । उसी तालाब में एक बड़ी रोहु मछली भी ---------- । बगुले और रोहु के बीच बहुत गहरी ---- । दोनों हमेशा साथ-साथ ---------- । एक दिन एक मछुआरे ने तालाब में अपना जाल ---- । ---- जाल **में** ---------- । ---------- ने अपनी नुकीली चोंच से जाल ---------- । रोहू अब आजाद हो ---- ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. चित्र बनाओ

पानी में कछुआ　　उड़ता हुआ कछुआ　　दौड़ता हुआ कछुआ

2. *"हाँ हाँ पर चलो उड़ें तो सही। चलो चलो।*

कहानी में देख कर बताओ, ये बात किसने कही? ---------- किससे कही? ------

'हाँ हाँ' किस बात के लिए कहा? ----------

इस बात को कहने के बाद कहानी में क्या होता है? ----------

---

3. कछुए ने बगुलों को कहाँ देखा था? ----------

कछुए और बगुलों में क्या बातचीत हुई, अपने शब्दों में लिखो। ----------

---

---

4. **कहानी का सार लिखना। कहानी की इन मुख्य बातों को लेकर इसे छोटा बनाकर लिखो ;**

कछुआ (घूमने, बात करने में मज़ा आता था) / बगुलों से बातचीत / उडने की शर्त / उड़ते समय मछलियाँ, कमल, घास, साँप अलग दिख रहे थे / कछुआ बोलने को हुआ / पानी में जा गिरा।

---

5. **"ने कहा" और "बोला"**

कहानी में ढूँढो– जब किसी को कुछ कहना होता है तो बात से पहले क्या लिखा होता है।

जैसे – कछुए ने *कहा* – दैया रे! कितना ऊँचा है तुम्हारा घर।

बगुलों ----------

कछुए ----------

कछुआ *बोला* – हाँ, हाँ, मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ।

एक	कई	एक	कई
कछुए ने कहा	कछुओं ने कहा	कछुआ बोला	कछुए बोले
बगुले ने कहा	बगुलों ने कहा	बगुला बोला	बगुले बोले
मछली ने कहा	मछलियों ने कहा	मछली ---	मछलियाँ बोली
साँप ने कहा	साँपों ने कहा	साँप ----	---------
मेंढक ने कहा	--- ने कहा	मेंढक----	---------
चिड़िया ने कहा	--- ने कहा	चिड़िया---	---------
लड़के ने कहा	---- ने कहा	लड़का---	---------
लड़की ने कहा	--- ने कहा	------	---------
बूढ़े ने कहा	------	------	---------
-----	-------	-------	---------
-----	-------	-------	---------

6. **यहाँ जो गहरे लिखे शब्द हैं वह हर वाक्य में किसी के बारे में कुछ बता रहे हैं**

कछुए ने मछलियों से कहा– दैया रे! तुम तो बहुत **सुनहरी** और **चौड़ी** सी लग रही हो।

जरूर ये **लंबी–लंबी** घासों का ही कमाल है। (घास के बारे में)

दैया रे! कितने **सुन्दर** हैं ये कमल के फूल। (कमल के फूलों के बारे में)

दैया रे! कितना **ऊँचा** है तुम्हारा घर। (घर के बारे में)

विशेषण किसी चीज़ की विशेषता या खास बात बताते हैं। जैसे इन वाक्यों में सुनहरी, चौड़ी, लंबी–लंबी, सुन्दर, ऊँचा इन शब्दों को **विशेषण** कहेंगे। कहानी में से ऐसे और शब्द छाँटो और लिखो कि किस के बारे में बता रहे हैं।

क्या कहा	*किसके बारे में*	*क्या कहा*	*किसके बारे में*
सुनहरी	मछली	-------	-------
लंबी–लंबी	घास	-------	-------
------	------	-------	-------
------	------	-------	-------

एक आम पर ...

डाल पे उलटे लटके बच्चे,
तोड़ रहे थे आम वो कच्चे।
लगा पेड़ पर था, एक छत्ता,
गिरा टूटकर उस पर पत्ता।
उड़ी मक्खियाँ काली–काली,
डर गए बच्चे छूटी डाली।
बच्चे नीचे गिरे धड़ाम,
रह गए लटके कच्चे आम।

अब इन प्रश्नों के उत्तर दो–

1. बच्चे आम कैसे तोड़ रहे थे? ----------

---

2. उनके हाथ से डाली क्यों छूटी? ----------

---

3. इस कविता की यह लाइन देखो। इसे हम कई तरह से लिख सकते हैं:–

रह गए लटके कच्चे आम,

कच्चे आम लटके रह गए,
रह गए कच्चे आम लटके,
लटके रह गए कच्चे आम.....आदि।

अब तुम कविता की कोई और लाइन लो और ऐसा ही करो।

---

4. अगर मैं कहूँ 'कच्चे रह गए लटके आम' तो भी क्या मतलब वही रहेगा? क्यों? सोचो, चर्चा करो।

५ कविता की पारा की जगह में इस कविता के लिए चित्र बनाओ जिसमें कविता में कही गई बातें दिखाई दें।

6. इस कविता को कहानी की तरह लिखो।

कहानी बनाओ।

एक बार हाथी ने चूहे को खाने पर बुलाया। खाने में तरह–तरह के फल और बीज थे। दोनों ने पेट भर खाया। अब दोनों को प्यास लगी। वे कुएँ पर गए। कुएँ पर ररसी बाल्टी तो थी नहीं। हाथी बोला कोई बात नहीं। उसने अपनी सूँड कुएँ में लटकाई। फिर सूँड में पानी भरकर चूहे को पिलाया। दोनों वापस अपने–अपने घर गए।

अब तुम भी इन शब्दों को मिलाकर कहानी बनाओ।

कहानी –1 गिलहरी, बस्ता, स्कूल, खरगोश। कहानी –2 बैलगाडी, नदी, झूला, डंडा।

अधूरी कहानी पूरी करो।

गाँव में कोई भी रात के बाद बूढ़े बरगद के पास नहीं जाता था। बब्लू की माँ भी उसे वहाँ सूरज ढलने के बाद जाने न देती। आखिर क्यों? बब्लू हमेशा सोचता रहता। एक रात वह नजर बचाकर बूढ़े बरगद के पास पहुँच ही गया। अँधेरा होने ही वाला था। उसने देखा

चाचाजी हमारे - 1

हमारे यहां के अखबार में यह खबर छपी है -

सिलवाड़ी, १७ दिसंबर

खबर मिली है कि आज सुबह चाचाजी नाम से जाने वाले एक व्यक्ति अपने घर की छत से गिर पड़े और उनका पैर टूट गया। जब यह घटना घटी तब चाचाजी अपने घर की छत से छलांग लगा रहे थे। ऐसा माना जाता है कि यह व्यक्ति काफी समय से ऊंचाई से कूदने की सोच रहे थे।

कहा जाता है कि वे रोज़ नदी नहाने जाया करते थे, वहां वे दूब भी खाते थे। वहां से आने के बाद वे अपने घर की छत से कूदने की योजना बनाया करते थे। उन्होंने पैराशूट लेकर कूदने वालों के कई चित्र देखे थे। इन्हें देख कर ही चाचाजी ने कूदने की सोची थी।

आखिर उनकी योजना बन ही गई। योजना यह थी कि जमीन पर छह गद्दे एक के ऊपर एक बिछाए जाएं। दोनों हाथों में खुले छाते लेकर छत से कूदा जाए। आज उन्होंने अपनी यह योजना आजमाई। और इसी से यह दुर्घटना घटी।

चाचाजी गद्दों पर गिरने की बजाय गैंदों की क्यारी में जा गिरे। दुर्घटना को देखने वालों के अनुसार चाचाजी का पैर टूटने के अलावा उनके सिर पर भी चोट आई है। डॉक्टरों का कहना है कि चाचाजी अब तीन-चार महीनों तक चल फिर नहीं पाएंगे। फिलहाल वे अपना और दूसरों का दिल बहलाने के लिए गाना गाने का प्रयोग कर रहे हैं। आगे खबर है कि उनके गाने से आसपास के घरों की खिड़कियों के कांच टूट गए हैं।

नदी पहुंच कर चाचाजी
रोज़ चबाते दूब
कभी तैरते हाथ फैलाकर
कभी वो जाते डूब

जब आते थे घर पर वो
खोला करते छाते
छह गद्दों का छत के नीचे
ढेर बड़ा बिछाते।

छत पर चढ़ कर चाचा जी
कूदा करते खूब
फिर लंगड़ा कर चाचा जी
गाया करते खूब।

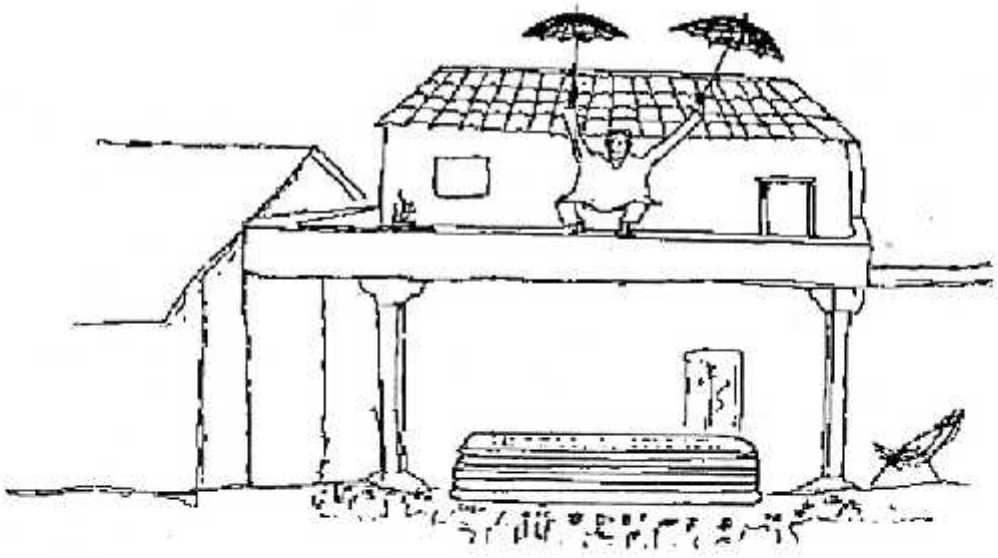

1. अखबार में छपी खबर कब और कहां की है? ----------

2. यह खबर किस घटना के बारे में है? ----------

3. चाचाजी की योजना क्या थी? ----------

---

4. चाचाजी का पैर क्यों टूट गया? ----------

---

5. चाचाजी ने इतने सारे गद्दे क्यों जमाए थे? ----------

---

6. आजकल चाचाजी क्या कर रहे हैं? ----------

7. गैंदों की क्यारी का क्या हुआ होगा? चित्र बनाओ।

8. अखबार की इस रपट में तुम्हें कौन-कौन से शब्द मुश्किल लगे। मुश्किल शब्दों पर गोला लगाओ। गुरू जी से इनका अर्थ पूछकर इनसे दो-दो नए वाक्य कापी में बनाओ।

9. क्या तुम भी आसपास की घटनाओं की खबर लिख सकते हो? साथियों के साथ एक अखबार निकालो। सब मिलकर अलग-अलग कागज़ पर अपनी खबर लिखो और उन्हें दीवार पर टांगो। इससे पहले वाली चाचाजी की कहानी की भी अखबारी रपट बनाओ।

10. इस रिर्पोट के लिए एक शीर्षक चुनो-

चाचाजी की कूद, चाचाजी के बनाए पैराशूट, चाचाजी की टांग, तैराक चाचाजी।

11. चाचाजी की योजना में क्या-क्या गलतियां थीं? छाते को इस तरह से उपयोग करना क्यों संभव नहीं?

इसमें क्या शक है?

पक्षी पालने वाले एक बहेलिए को तोते का एक बहुत ही सुंदर बच्चा मिला। सब लोग अपने तोते को राम राम बोलना सिखाते हैं। बहेलिए ने भी बहुत कोशिश की। लेकिन यह तोता बहुत दिनों तक कुछ भी बोलना न सीख पाया। फिर अचानक वह एक बात बोलना सीख गया। जब भी उस तोते से कोई बात करता तो तोता कहता - इसमें क्या शक है?

बहेलिया अपने तोते को लेकर राजा के पास गया। बोला - महाराज, यह तोता अनोखा है। बिल्कुल आदमी की तरह बात करता है।

राजा ने तोते से पूछा - क्या तुम सचमुच आदमी की तरह बात करते हो?

तोता बोला - इसमें क्या शक है?

राजा खुश हो गया। बहेलिए को खूब सारे पैसे देकर राजा ने तोता खरीद लिया।

बाद में राजा ने देखा कि तोता तो हर बात के जवाब में यही कहता है- इसमें क्या शक है।

राजा को बहुत गुस्सा आया। वह तोते से बोला - तुम क्या बस यही एक बात बोलना जानते हो- इसमें क्या शक है? इसमें क्या शक है?

तोता बोला - इसमें क्या शक है?
राजा खीझकर बोला- अरे मैं क्या बेवकूफ हूं जो इतने सारे पैसे देकर तुझे खरीदा?
तोता बोला - इसमें क्या शक है?

तोते को क्या बोलना सिखाया गया था? ----------

राजा ने बाद में तोते का क्या किया होगा? ----------

राजा ने बाद में बहेलिए को क्या कहा होगा? ----------

इस कहानी को आगे बढ़ाओ -

एक बहेलिया था। उसे तोते का एक बच्चा मिला। बहेलिए ने उस तोते को "और नहीं तो क्या?" कहना सिखाया। यदि कोई कुछ कहता तो तोता जवाब देता, "और नहीं तो क्या?"
बहेलिया उसे राजा के पास ले गया। . . . . . .

- वाक्य निकालो

नीचे के पैराग्राफ में एक ऐसा वाक्य घुस गया है जो बाकी वाक्यों से मेल नहीं खाता। **उसे ढूंढकर अलग करो और बाकी पैराग्राफ को पट्टी पर लिखो।**

आम तौर पर तोते बोल नहीं सकते। जो भी लाईन उन्हें सिखा दी जाए वे उसे बार-बार दोहराते हैं। बच्चे खूब रंभाते हैं। उनसे कुछ भी कहो, पर तोते जवाब में अपनी वही लाईन फिर से कहते हैं।

तुमने आस-पास तोता देखा हो या पाला हो तो बताओ
तोते के बारे में तुम और क्या-क्या जानते हो? तोते क्या-
क्या बोलते हैं? आपस में चर्चा करके कॉपी में लिखो।

तोते का चित्र बनाकर उसमें रंग भरो।

इस कहानी में चार अक्षर वाले पाँच-छह शब्द हैं, जैसे- सचमुच और बहेलिया। सभी चार अक्षर वाले शब्द कॉपी में लिखो और उनका अर्थ ढूंढकर उनके सामने लिखो।
तुम्हें ये कहानी कैसी लगी? फिर यह भी पता करो कि तुम्हारी कक्षा में सबको कहानी कैसी लगी। अच्छी लगी तो क्यों? अच्छी नहीं लगी तो क्यों ?

खरहा

वन में एक घनी झुरमुट थी जिसके अन्दर जाकर
खरहा एक रहा करता था सबकी आँख बचाकर।
फुदक–फुदक चिनगियाँ घास की चुन–चुनकर खाता था
देख दूर से लोगों को झुरमुट में छिप जाता था।
एक रोज आया उस वन में कुत्ता एक शिकारी
लगा छानने सूँघ–सूँघकर वन की झाड़ी–झाड़ी।
आखिर वह झुरमुट भी आई जो खरहा का घर थी
मगर खैर उस बेचारे की लम्बी अभी उमर थी।
कुत्ते की जो लगी साँस खरहा सोते से जागा।
देख पीठ पर खड़ा काल को जान बचाकर भागा।

–रामधारी सिंह दिनकर

♣ कविता में कही कहानी तो तुम समझ ही गए होगे। उस कहानी को यहाँ अपने शब्दों में लिखो।

♣ कविता के लेखक कौन हैं?----------

♣ कविता में इन शब्दों के लिए किन शब्दों या वाक्य का इस्तेमाल किया है:–

खरगोश -------- झाड़ी -------- जंगल -------- मौत --------

कूदकर -------- जीवन/आयु ----- छिपकर -------- --------

दिन -------- अंत में -------- छोटी घास -------- --------

♣ खरगोश के खाने के बारे में कविता में कौनसी लाइन में लिखा है।

किस लाइन से पता चलता है कि खरहा अपने घर में सो रहा था।

किस लाइन से पता चलता है कि कुत्ता जंगल में क्या कर रहा था।

खरगोश डरपोक था या शर्मीला था यह किस लाइन से पता चलता है।

श्रुतलेख

गुरूजी से कहो कि वह यह पैराग्राफ को पढ़ते जाएँ और तुम अपनी कॉपी में लिखते जाओ।

एक दिन एक चूहा बाजार गया। बाजार में उसने एक दुकान देखी। दुकान पर कई रंग–बिरंगी टोपियाँ सजी हुई रखीं थीं। चूहे ने दुकानदार से एक टोपी माँगी। दुकानदार ने कहा एक टोपी का मूल्य पाँच रूपये है। पैसे दो और टोपी लो । चूहे ने टोपी नहीं ली और वह आगे चल दिया।

1. शिक्षक सम्पूर्ण अंश को पुनः पढ़ें। छात्र अपनी भूल सुधारें।
2. शिक्षक पैराग्राफ को ब्लैक बोर्ड पर लिख दें और बच्चे अपना लिखे हुए पैराग्राफ में गल्तियाँ ढूँढकर गोल बनायें

श्रुतलेख

मैंने अपने बगीचे में एक खरगोश देखा। कुछ दिन बाद उसके दो बच्चे हो गए। एक काला और एक राफेद था। सफेद खरगोश बहुत सुंदर था। एक दिन मेरी सहेली बॉल से खेल रही थी तो खरगोश को बॉल लग गई। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं सफेद खरगोश को अपने घर ले आई उसको दवा लगा दी। थोडी देर बाद वो दौड़ने लगा तो मैं उसको फिर बगीचे में छोड़ आई। अब वो अक्सर हमारे घर आता है।

प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. बगीचे में क्या था ?
2. खरगोश का रंग कैसा था ?
3. लड़की को गुस्सा क्यों आ गया?
4. खरगोश को बाल लगने पर क्या किया ?
5. बगीचे में कितने खरगोश थे ?

आदमी और कुत्ता

एक बार एक कुत्ते ने एक वनवासी फकीर को काट लिया। रात भर उसको पीड़ा के मारे नींद न आई। वह कराहता रहा। छोटी लड़की से अपने पिता का दर्द न देखा गया। उसे कुत्ते पर बहुत गुस्सा आया। उसने अपने बाप से कहा–"आखिर आप तो आदमी हैं और वह कुत्ता। ताकत में आदमी बहुत बड़ा है। आपने उस कुत्ते को पीटा क्यों नहीं? एक बार उसे मजा तो चखा देते।"

फकीर दर्द से छटपटा रहा था। भोली– भाली लड़की की बात सुनकर उसे हँसी आ गई। वह बोला "प्यारी बिटिया, गुस्सा तो मुझे बहुत ज़्यादा आया था पर मैं उसे पी गया। यह ठीक है कि दुष्टों को मजा चखाना बहुत जरूरी है पर आदमी से कुत्ता नहीं बना जा सकता।"

यह कहकर बाप चुप हो गया। और लड़की सोच में पड़ गई।

अभ्यास–

1. फकीर को कुत्ते नें क्यों काटा होगा?

---

2. फकीर ने कुत्ते को क्यों नहीं मारा?

---

3. क्या तुम फकीर की बात से सहमत हो? क्यों?

---

4. लड़की ने पिता से क्या करने को कहा था?

---

5. नीचे लिखे वाक्यों में एक दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्द आए हैं। ऐसे शब्दों को चुनों और विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखो। एक उदाहरण दिया गया है।

एक बूढ़ा आदमी था। वह बहुत धनी था। उसका एक जवान लड़का था। बूढ़ा जितना मेहनती था, लड़का उतना ही आलसी। सुबह देर से उठता और शाम को जल्दी से जल्दी खाना खाकर सो जाता। बूढ़ा अब कमज़ोर होने लगा था, तो उससे बहुत काम भी नहीं बनता था। लड़का हट्टा–कट्टा था पर काम वो करता नहीं था। खर्चे तो दोनों के थे पर आमदनी कुछ नहीं। होना क्या था, कुछ समय बाद दोनों गरीबी में रहने लगे।

जैसे– बूढ़ा – जवान

नीचे लिखे वाक्यों को सही करके लिखो।

1. पेड़ कह रही थी ------------------------------

2. मुझे बड़ा खुशी हुआ। ------------------------------

6. गोले के मध्य का अक्षर पढ़कर, किनारे में दिये हुए शब्द से जोड़ो। जो नया शब्द बने उसे पढ़ो, लिखो इन शब्दों के मतलब लिखकर उनसे वाक्य बनाओ।

उदाहरण– प्रचार

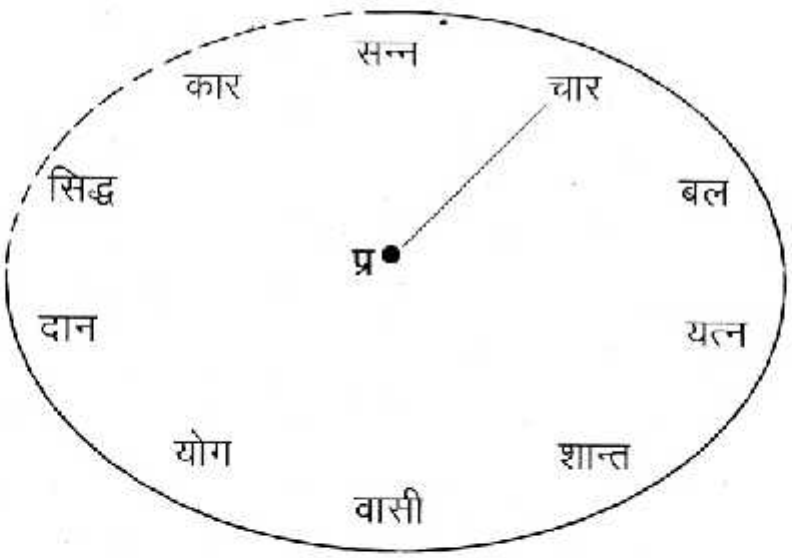

वाक्य बनाओ

अ जोड़कर नये शब्द बनाओ। मतलब लिखो।

जैसे कारण – अकारण

काल, ---- ----

नाम, ---- ----

ज्ञान, ---- ----

चल, ---- ----

सफल ---- ----

विज्ञापन या सूचनाएं

अपने ग्राहकों को बुलाने के लिए एक चने बेचने वाला ये आवाज़ लगाता है–

ताज़े करारे चने
चटपटे मसालेदार
गरम मज़ेदार चने
ऐसे चने मायके में भी न मिलेंगे।

संतरे वाला संतरे बेचने के लिए बाज़ार में यूँ चिल्लाता है

ताज़े ताज़े संतरे
बड़े बड़े संतरे
नागपुर के संतरे
दो रुपये के छह हो गए
इससे सस्ते अब नहीं होंगे

तुमनें अखबार में या फिर सड़क पर चलते हुए दीवारों पर ऐसे चित्र देखे होंगे–

कुछ संदेश ऐसे भी देखे होंगे–

शुरू करो जान कर पानी पियो छान कर

या कुछ सूचनाएं जो सभी लोगों तक पहुंचानी हों, जैसे–

पल्स पोलियो अभियान, 6 जनवरी 1997
यदि आप के घर में 3 साल की आयु से कम का कोई बच्चा है
तो उसके स्वस्थ, खुशहाल जीवन के लिए उसे पोलियो से मुक्त कराएं।
उसे 6 जनवरी को पोलियो की दवा अवश्य दिलाएं।

ये सब तुमने रेडियो और टी.वी पर भी देखा सुना होगा।
इनको हम विज्ञापन कहते हैं। जब हमें किसी चीज़, सूचना या फिर संदेश की ओर सबका ध्यान खींचना होता हैं, तब हम विज्ञापन का उपयोग करते हैं। विज्ञापन का उद्देश्य होता है लोगों का ध्यान आकर्षित करना । इस कारण से विज्ञापन में ऐसे शब्द और चित्रों को रखा जाता है जिससे कि अधिक से अधिक विशेषताएँ पता चल सकें, मुख्य बातों पर ध्यान जाए । कुछ विज्ञापनों में, जहाँ से कोई वस्तु या सेवा प्राप्त की जा सके, उस जगह का नाम, पता भी दिया जाता है, उनका मूल्य भी बताया जाता है।

◉ तुम्हारे आसपास, दीवारों पर या सड़कों के किनारे, तुमने किन चीज़ों के विज्ञापन या सूचनाएं या संदेश देखे हैं?

◉ अखबार या टी.वी पर कौन–कौन से विज्ञापन देखे–सुने हैं?

◉ तुम्हें सबसे अच्छा विज्ञापन कौन सा लगता है? ये विज्ञापन तुम्हें क्यों अच्छा लगा?

तुम भी कोरा कागज़ या कार्ड शीट लेकर कुछ विज्ञापन बनाओ– चीज़ें बेचने के जैसे, जूते, कपड़े, चाय; या संदेश या सूचना के जैसे, साफ पानी या आने वाले मेले के बारे में।

विज्ञापन में ऐसे शब्द और चित्र होने चाहियें जिनसे उस चीज़ या उस बात की खास–खास विशेषताओं के बारे में पता चले।

◉ अपने स्कूल के बारे में सूचना देते हुए एक पोस्टर बनाओ।

सुखनराम की भैंसी

सुखनराम की भैंसी ने
दे घुमाई पूंछ
बीच में आ गई, जाने कैसे
चाचाजी की मूंछ।
गोबर पोंछा, मिट्टी पोंछी,
चाचाजी चिल्लाए
दो धाप और भैंसी ने
इतने में जमाए

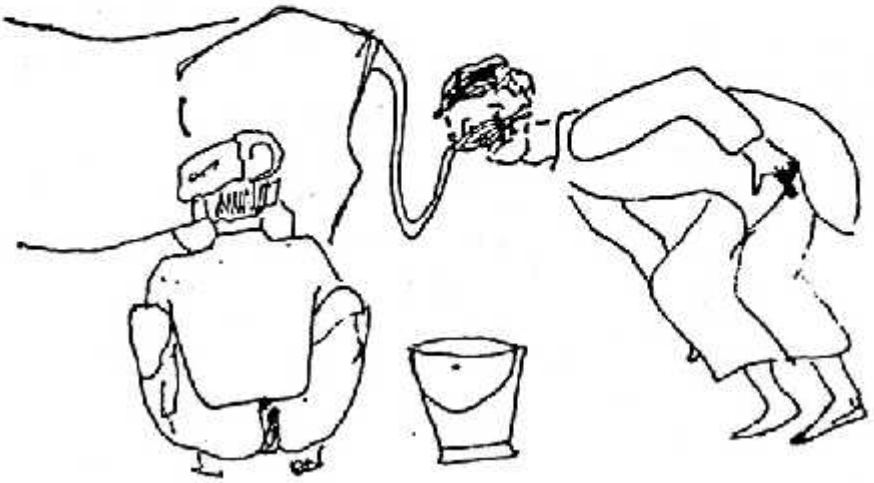

चाचाजी (*गुस्से में*) - सुखनराम, तेरी भैंसी को ज़रा तमीज़ सिखा। सारे मुंह में गोबर कर दिया!

सुखनराम - अरें चाचाजी, इसमें उसका क्या दोष। भैंसी तो सिर्फ अपनी पूंछ घुमा रही थी। वह तो आप ही बीच में घुस आए।

चाचाजी - क्या मतलब, हम देखेंगे नहीं कि तुम कैसे दुह रहे हो?

सुखनराम - वही तो मैंने कहा था, आप ही बीच में घुस आए।

चाचाजी - तेरी इतनी बड़ी-सी भैंस को क्या पता नहीं कि जब कोई पीछे खड़ा हो तो पूंछ नहीं घुमाना चाहिए?

सुखनराम (*हंसकर*) - भैया भैंसी का काम है दूध देना और पूंछ हिलाना। अगर आपको नहीं मालूम तो वह क्या करे?

चाचाजी (*और गुस्से में*) - जानवर की तरफदारी करता है, बेशरम कहीं का! ज़रा मेरा डंडा तो लाना, भैंसी की वो धुनाई करता हूं कि याद रखेगी।

सुखनराम - देखो चाचाजी, हम कहे दे रहे हैं, भैंसी को हाथ मत लगाना।

चाचाजी - अरे हट रे, बड़ा आया है। भैंसी तो क्या, तेरी भी धुनाई कर दूंगा।

सुखनराम - (*वह भी गुस्से में*) देखो चाचा, जबान संभाल कर बात करो। नहीं तो मुझसे बुरा कोई और नहीं होगा।

चाचाजी - अरे क्या कर लेगा तू? ज़रा कर के तो बता।

सुखनराम - चाचा, सच बोल रहा हूं, ठीक नहीं होगा।

चाचाजी - जो करना है करके देख लो।

(*सुखनराम अचानक लपक कर चाचाजी की मूंछ खींचता है। मूंछ झट से उसके हाथ में आ जाती है।*)

सुखनराम - अरे यह क्या! चाचा आपकी मूंछ! अरे यह मैंने **क्या** कर दिया। बड़ा पाप हो गया यह तो। अरे यह मैंने क्या कर दिया!

चाचाजी (*सुखनराम को देखकर हंस रहे हैं। लोटपोट होते जा रहे हैं। बड़ी मुश्किल से बोलते हुए*) - ज़रा उन मूछों को तो देखो।

सुखनराम - (*अपने हाथ में रखी मूंछों को आश्चर्य से देखते हुए*) यह तो... यह तो... नकली हैं।

चाचाजी (*अभी भी हंसते हुए*) - देख लिया ना, बड़े आए थे कुछ करने वाले।

सुखनराम (*धीरे-धीरे उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आती हुई*) - वाह चाचाजी, खूब बेवकूफ बनाया आपने। मैं तो मान ही गया था कि मैंने असली मूंछ उखाड़ दी।

चाचाजी - असली मूंछ तुमसे उखाड़ते ही कहां बनती।

सुखनराम (*नकली गुस्सा दिखाते हुए*) - ऐसी बात है? तो अभी बताता हूं।

चाचाजी (*नकली घबराहट दिखाते हुए*) - अरे भैया, क्या कर रहे हो। अभी नहीं, जब अगला झगड़ा होगा तब दिखाना।

1. - चाचाजी और सुखनराम के बीच झगड़ा क्यों हुआ?
   - गलती किसकी थी?
   - अगर भैंस पूंछ की बजाय सींग से मारती तो क्या होता?
   - अगर चाचाजी की असली मूंछ होती तो क्या होता?
   - क्या सुखनराम और चाचाजी सही में लड़ रहे थे?
2. इस नाटक को अपने मन में ध्यान से पढ़ो। अब कोई एक चाचाजी बन जाए, और एक सुखनराम। दोनों मिलकर नाटक को ज़ोर से पढ़ो, हाव-भाव के साथ। चाचाजी का डायलॉग वह पढ़े जो चाचाजी बना है। सुखनराम का डायलॉग वह पढ़े जो सुखनराम बना है। जब चाचाजी गुस्सा करेंगे तो गुस्से से बोलना है। बारी-बारी से सभी ये नाटक खेल सकते हैं।
3. सुखनराम एक दूधवाला है। उसके पास 10 भैंसे हैं। आम तौर पर 10 में से 6-8 मवेशी दूध देते हैं। इस तरह उसके यहां रोज़ करीब 22 से 25 लीटर दूध हो जाता है। वह 10 रुपए लीटर दूध बेचता है। उसे रोज़ शहर ले जाकर दूध बेचना पड़ता है। उसके 6 बंदी के ग्राहक हैं जिनका हिसाब वह महीने से करता है। बाकी दूध वह होटल को बेचता है, फुटकर में। एक दिन में वह 20 लीटर दूध तो बेच ही लेता है।

   सुखनराम के घर पर महीने में लगभग कितना दूध हो जाता होगा (सबसे पास के 100 लीटर तक बताओ)?

   महीने भर में उसकी आमदनी लगभग कितनी हो जाती होगी (सबसे पास के 100 रुपए तक बताओ)?

   यदि सभी जानवरों का महीने भर का कुल खर्च लगभग 400 रुपए तक होता है, तो सुखनराम को एक महीने में कितना फायदा होता होगा?
4. ● दूध, पानी, तेल जैसी कोई भी तरल चीज़ (जो बह सकती है) लीटर के पैमाने (यानी एक बर्तन जिसमें एक लीटर या आधा या पाव लीटर आता हो) से नापी जाती है।

   एक दिन सुखनराम के पास 3 लीटर और 5 लीटर के पैमाने थे। एक ग्राहक ने उससे एक लीटर दूध मांगा।

सुखनराम ने थोड़ा सर खुजलाया - कैसे नापूं?

चाचाजी पास में ही खड़े थे। बोले - 3 लीटर का पैमाना भरकर 5 लीटर वाले में डालो। अब उसमें दो ही लीटर दूध और आएगा। फिर से 3 लीटर वाले पैमाने को भरकर डालो। अब, 3 लीटर वाले पैमाने में बचा दूध 1 लीटर है। वह ग्राहक को दे दो।

अब तुम बताओ सुखनराम ने इन दो ही पैमानों से 2 लीटर दूध कैसे नापा होगा?

4 लीटर दूध कैसे नापा होगा? और 6 लीटर दूध कैसे नापा होगा?

5. यह तिकड़म करने में सुखनराम रोज़ परेशान होता था। उसने एक आधा लीटर का पैमाना और खरीद लिया। अब बताओ एक लीटर दूध नापने के लिए उसे कितनी बार आधा लीटर दूध नापना पड़ेगा?

2 लीटर के लिए कितनी बार? 4 लीटर वह अब कैसे नापेगा? 6 लीटर अब कैसे नापेगा?

● क्या वह पाव भर दूध नाप सकता है?

6. तुम्हारे मोहल्ले/गांव में कोई दूध बेचने वाला है? उससे पता करो कि उसके पास कितने मवेशी हैं?

गाय - भैंस -

उसके यहां रोज़ कितना दूध होता है? वह दूध कहां-कहां बेचता है?

वह एक लीटर दूध कितने में बेचता है? महीने भर में उसके यहां कितना दूध हो जाता है?

इन मवेशियों पर उसका कितना खर्च हो जाता है? उसे कितना फायदा होता है?

7. नीचे मैंने एक ही मतलब वाले कुछ शब्द दिए हैं। उन्हें ध्यान से पढ़ो।

धुनाई	-	पिटाई	लपककर	-	कूदकर
आश्चर्य	-	अचरज	उल्लू बनाया	-	बेवकूफ बनाया

इनमें से कुछ शब्द नाटक में भी आए हैं। उन्हें ढूंढ कर उन पर निशान लगाओ। वे वाक्य पढ़ो जिनमें ये शब्द आए हैं। इन शब्दों से और वाक्य बनाओ।

अब कुछ उल्टे अर्थों वाले शब्द दिए गए हैं।

मुश्किल	-	आसान	बडी	-	छोटी
शर्मीला	-	बेशरम	झट से	-	धीरे से
असली	-	नकली			

इनके उल्टे अर्थ लिखो -

मोटा	-	गरम	-
बेवकूफ	-	महंगा	-
नरम	-		

● तुम और बनाओ।

9. तरल चीज़ों (दूध, पानी, तेल आदि) की कॉपी में सूची बनाओ। इनमें कौन-कौन सी समान बातें हैं (जैसे यह सब बह सकते हैं)?

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. इन शब्दों से वाक्य बनाओ–

तरफदारी --

बेशरम --

2. नीचे दिए गए शब्दों में अक्षरों को उलट देने से एक नया शब्द बनता है। इन शब्दों को उलटकर शब्द बनाओ। जैसे–

	उलटा	**अर्थ**		**उलटा**	**अर्थ**
ज़रा	राज़	----	राम	----	----
तरी	----	----	पता	----	----
रहा	----	----	नाम	----	----
लाना	----	----	जाम	----	----

3. कई वस्तुएं ऐसी हैं जो एक होती हैं तो उसे अलग ढंग से बोलते है और एक से अधिक होने पर अलग ढंग से जैसे–

डंडा डंडे डंडों	शाला शालाएँ शालाओं	बाल्टी बाल्टियाँ बाल्टियों	टाँग ---- ----
बच्चा बच्चे बच्चों	गाला ---- ----	नदी ---- ----	आँख ---- ----
कुत्ता ---- ----	कला ---- ----	राखी ---- ----	दाल ---- ----
कपड़ा ---- ----	---- ----	---- ----	---- ----
---- ----	---- ----	---- ----	---- ----

इन शब्दों के अलग–अलग रूपों से वाक्य बनाओ

-- | --

-- | --

-- | --

-- | --

सुखनराम और चाचाजी का झगड़ा एक छोटी सी बात से शुरू हुआ था और फिर बढ़ता गया। क्या ऐसा होते हुए तुमने भी कहीं देखा है? क्या हुआ था? कैसे–कैसे बात बढ़ी? झगड़ा बंद कैसे हुआ? तुम्हें सब देखकर कैसा लग रहा था? याद करके यहाँ लिखो।

अमुक दिन आइए

आफन्ती ने एक छोटी-सी रँगाई वर्कशॉप खोली और गाँववासियों के लिए कपड़ा रँगना शुरू कर दिया। सब लोग उसकी रँगाई की तारीफ करने लगे। यह सुनकर एक सेठ को बहुत जलन महसूस होने लगी। वह आफन्ती को परेशान करने के इरादे से कपड़े का टुकड़ा लेकर आफन्ती की वर्कशॉप में जा पहुँचा।

दरवाज़े के अन्दर घुसते ही सेठ बुलन्द आवाज़ में बोला:

"आफन्ती, ज़रा यह कपड़ा तो अच्छी तरह रंग दो। मैं देखना चाहता हूँ तुम्हारा हुनर कैसा है।"

आफन्ती ने पूछा, "सेठजी, आप कैसा रंग चाहते हैं?"

सेठ बोला, "रंग? मुझे सफेद, लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी रंग कतई अच्छे नहीं लगते। समझे कि नहीं?"

आफन्ती ने सेठ का मनसूबा भाँपते हुए उसके हाथ से कपड़े का टुकड़ा ले लिया।

"अच्छा, तो इसे लेने किस दिन आऊँ?" सेठ ने खुश होकर कहा।

आफन्ती ने कपड़े को अलमारी में बन्द कर उसमें ताला लगा दिया और सेठ से बोला, "इसे लेने सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को छोड़कर किसी भी दिन आ सकते हो।"

प्रश्न–1. इस कहानी को नाटक के रूप में खेलो।

प्रश्न–2. जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची है उन्हीं शब्दों के समान अर्थ वाले शब्दों को लाइन खींचकर वाक्यों से मिलाओ।

वाक्य	समान अर्थ वाले शब्द
1. लोग आफन्ती की रंगाई की तारीफ़ करने लगे।	कौशल, कला
2. यह सुनकर सेठ को बहुत जलन महसूस होने लगी।	ऊँची
3. सेठ आफन्ती को परेशान करने, कपड़े का टुकड़ा लेकर वर्कशाप गया।	प्रशंसा,
4. दरवाजे के अंदर घुसते ही सेठ बुलन्द आवाज़ में बोला।	ईर्ष्या
5. " मैं देखना चाहता हूँ, तुम्हारा हुनर कैसा है।"	प्रसन्न
6. सेठ ने खुश होकर कहा।	कारखाने

प्रश्न–3. इसी कहानी को मन से कापी में लिखना।

प्रश्न–4. नीचे के वाक्यों में इन संकेतो को लगाओ।

।(पूर्ण विराम) ? (प्रश्न वाचक) , (अल्पविराम) " " (अवतरण) चिन्ह

आफन्ती ने पूछा– सेठ जी, आप कैसा रंग चाहते हैं सेठ बोला रंग मुझे सफेद लाल नारंगी पीला हरा आसमानी नीला और बैंगनी रंग कतई अच्छे नहीं लगते समझे कि नहीं।

प्रश्न–5. सभी रंगों के नाम लिखो।

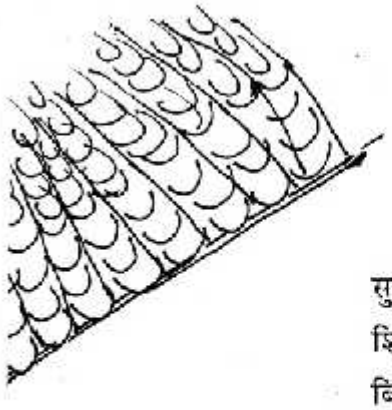

धूप

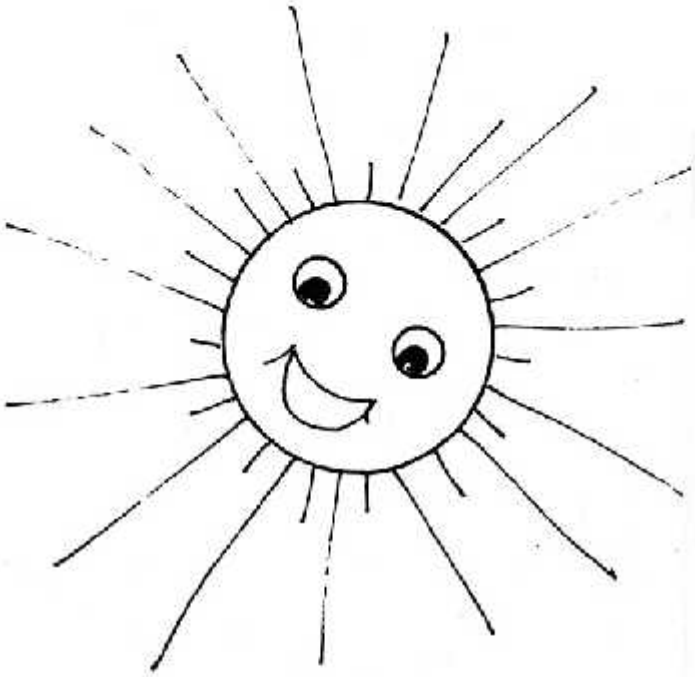

सुबह-सुबह जो आई धूप
शिखर-शिखर मुसकाई धूप
बिखर-बिखरकर छप्पर-छतपर
धरती पर छितराई धूप।

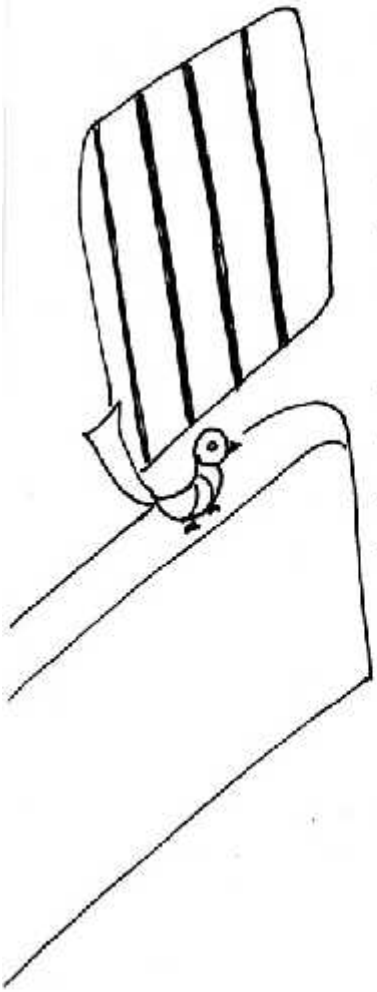

झाड़ी-झुरमुट मैदानों में,
खेत की रेत में, खलिहानों में,
डाली-डाली पर रुक-रुककर
थकी-थकी सुस्ताई धूप।

जाड़े में मन भाई धूप,
गरमी में गरमाई धूप,
तपती रहती तन झुलसाती,
बरखा में शरमाई धूप।

फूल-फूल में, कली-कली में,
धीरे-धीरे गली-गली में,
जाने कब खिड़की पर उतरी
घर में घुसी लजाई धूप।

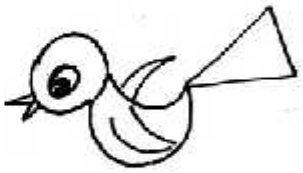

राहें छोड़ो, खिड़की खोलो,
कुछ मत बोलो, घूमो-डोलो,
हवा दवा है कण-कण चुपके
अपने आप समाई धूप।

सूरज निकला, आई धूप,
दिन भर रामदुहाई धूप,
शाम हुई सो गई कहाँ जा
अलसाई-अलसाई धूप।

विष्णुकान्त पाण्डेय

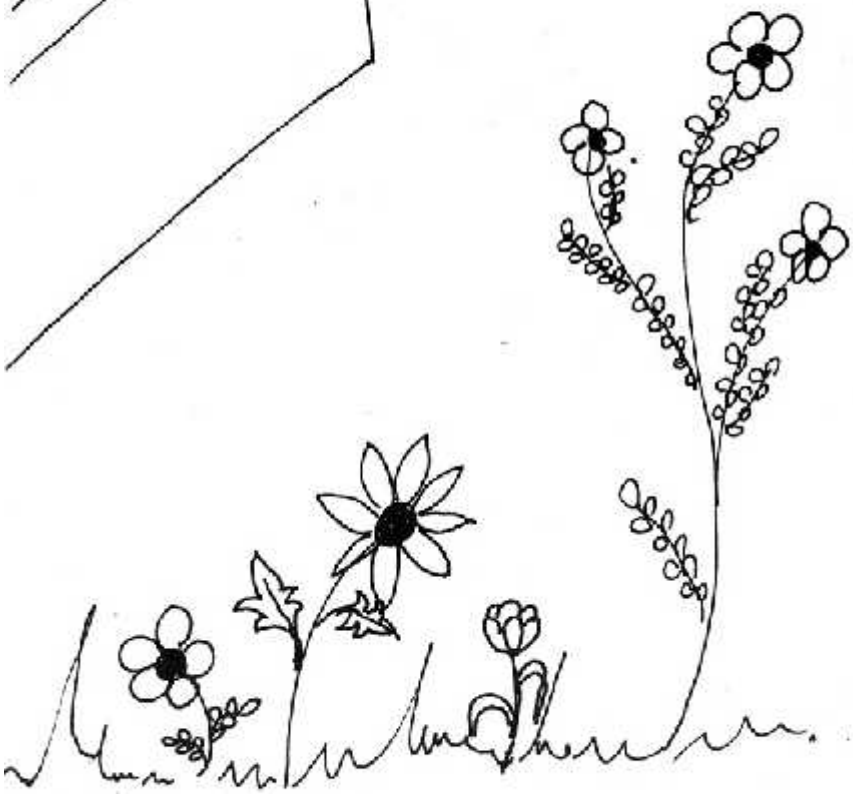

अभ्यास

1. नीचे कविता में से कुछ शब्दों के जोड़े दिए गए हैं जिनमें एक ही शब्द को दोहराया गया है। यदि तुम ध्यान से पढ़ो तो पाओगे कि शब्द को दोहराने से उसका अर्थ कुछ बदल जाता है। नीचे दी फेहरिस्त में से संज्ञा के जोड़ों को छाँटकर अलग करो और बताओ कि उन्हें दोहराने से अर्थ में क्या परिवर्तन होता है।

   डाली- डाली अलसाई- अलसाई

   गली- गली बिखर- बिखर

   कण- कण थकी- थकी

   सुबह- सुबह धीरे- धीरे

2. सूरज के चार पर्यायवाची शब्द बताओ।

3. पुस्तकालय में जाकर बड़ा शब्दकोश देखो और नीचे दिए वाक्यांशों और मुहावरों के अर्थ समझो। अब इन्हें वाक्यों में प्रयोग करो।

   (क) धूप खाना
   (ख) दौड़- धूप करना
   (ग) धूप में बाल सफ़ेद होना
   (घ) धूप सेंकना
   (ङ) धूप दिखाना
   (च) धूप चढ़ना

तुम्हारी कलम से

1. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय किसी खुले स्थान या मैदान में जाकर देखो कि तब धरती- आकाश का कैसा नज़ारा होता है? इस दृश्य का वर्णन करो।

2. "यदि सूर्य न होता.." इस विषय पर एक छोटा- सा निबंध लिखो।

चाचाजी हमारे - 2

ढूंढ के लाते कुत्ते चिड़िया
जिन्हें लगी हो चोट
मलहम पट्टी करते उनकी
चाचाजी हर रोज़।

चाचाजी की डायरी का एक पन्ना

आज मुझे एक पिल्ला मिला। वह चितकबरा सा है, ज़्यादा बड़ा नहीं है पर शरीर से काफी तन्दुरूस्त लगता है। उसके सिर पर लंबा काला सा निशान है और पूंछ एक दम झबरी है। लेकिन इस पिल्ले के बायें पैर पर एक बड़ी गहरी सी चोट है - अगर थोड़ी ज़्यादा गहरी होती तो हड्डी तक पहुंच जाती।

पहले मुझे लगा था कि ये चोट किसी कुत्ते से लड़ाई में लगी होगी। लेकिन ध्यान से देखने पर लगा कि शायद ये कंटीले तार के कांटे से लगी है। घाव गहरा और लंबा है, ज्यादा पुराना नहीं है, जिसकी वजह से उसे साफ करने में परेशानी नहीं हुई।

शाम को मुझे अचानक एक सेही भी मिली। आज पहली बार सेही देखी, इसलिये ऊपर उसका चित्र भी बनाया है। हुआ ये कि जब मैं अब्बू खां के बगीचे से डाकखाने वाली सड़क पर आ रहा था कि दो तीन कुत्ते एक झाड़ी पर ज़ोर से भौंकते दिखाई दिये। देखा तो झाड़ी में एक सेही फंसी हुई थी। कुत्ते भौंक ज़रूर रहे थे लेकिन झाड़ी के कांटों की वजह से पास जाने में घबरा रहे थे।

बेचारी सेही की हालत काफी कमज़ोर सी थी। वो थोड़ा कांप भी रही थी। आज ही अब्बू खां ने अपने बगीचे में ज़हरीली दवा छिड़कवाई है। मुझे लगता है कि शायद सेही ने ज़हर वाली किसी चीज़ को खा लिया है।

पर सेही को वहां से लाया कैसे जाये? हाथ से तो उठा नहीं सकते। बड़ी मुश्किल से उसे एक लकड़ी के खोखे में बंद कर के लाया। यहां आकर सेही ने थोड़ा पानी पिया। मैंने उसकी जांच की और पानी में दवा मिला कर देने की कोशिश की। पहले तो उसने नहीं पिया, पर शायद प्यास ज़्यादा लगी थी, इसलिये थोड़ी देर बाद पी लिया। अब वो मेरे कमरे के एक कोने में आराम से सो रही है।

अभ्यास

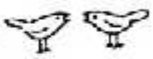

(क) क्या सही है छाँटकर लिखो।

पिल्ले की पूंछ .... है। *(काली, लाल, चितकबरी, झबरी)*

(ख) पिल्ले को चोट कैसे लगी? ------------------------

(ग) पहले पानी देने पर भी सेही ने उसे क्यों नहीं पिया? ------------------------

(घ) कुत्ते सेही पर क्यों भौंक रहे थे? ------------------------

(च) सेही झाड़ी में कमज़ोर क्यों लग रही थी? ------------------------

(छ) तुम्हारे साथ कल क्या हुआ? तुमने क्या किया? कल की अपनी डायरी नीचे लिखो।

चाचाजी की डायरी के आधार पर सेही के बारे में एक पैराग्राफ लिखो।

(ज) चाचाजी जानवरों को बचाने का प्रयास क्यों करते थे? ------------------------

(झ) तुमने कभी घायल जीवों को देखा? क्या तुमने कुछ किया? ------------------------

अग्निकांड

सो रहा था टोडूमल
कहें पड़ोसी- जाग!
धरी हुई थी घास की गंजी
उसमें लग गई आग।
नींद में बोला टोडूमल
मुझे नहीं है आना।
घास जले तो जल जाए
मुझे कौन है खाना।
आग कहां थी रुकने वाली
थोड़ी बढ़ गई आगे।
जल उठे अब धीरे-धीरे
खिड़की और दरवाजे।
दौड़ पड़े सब लाने पानी
कोई लाता रेता ।
टोडूमल था नींद का पक्का
अब तक न वो चेता।

धूं-धूं भर-भर, धुंआ कर-कर
आग वहां पे जलती।
हवा साथ में लपटें लेकर
ऊंची नीची करती।
लौट के आए जब पड़ौसी
पानी ढेर- सा झोंका।
तभी आ गया एक अचानक
तेज हवा का झोंका।
गरम हवा जब घर में लपकी
टोडूमल की खुल गई झपकी।
ली अंगडाई आंखें खोलीं
हो गी घर की तब तक होली।

● कॉपी में करो -

1. पड़ोसियों ने आग बुझाने के लिए क्या किया?

2. टोडूमल की नींद कैसे टूटी?

3. टोडूमल ने घास किसलिए रखी होगी? घास की गंजी में आग कैसे लग गयी होगी?

4. क्या तुम्हारे आसपास कभी ऐसा अग्निकांड हुआ? आग कैसे बुझाई गई थी?

5. टोडूमल ने जागने पर क्या देखा होगा? चित्र बनाओ।

6. टोडूमल ने जागने पर क्या किया होगा?

7. सबसे ज्यादा आग किस मौसम में लगती है? क्यों?

- आग किन-किन चीजों से जलाई जा सकती है? कम से कम ऐसी चार चीज़ों के नाम लिखो।

● करके देखो - एक प्रयोग

क्या तुमने कभी हैंडलैंस से आग जलाई है? जब धूप निकली हो तब गुरूजी की मदद से यह प्रयोग करके देखो। नीचे कुछ चीज़ों के नाम दिए हैं। उन चीज़ों को हैंडलैंस से जलाकर देखो और तालिका में लिखो। प्रयोग करने से पहले तालिका पढ़ लो, क्या-क्या लिखना है।

कपास, काला कागज़ , सफेद कागज, पन्नी, चाक, लकड़ी का टुकड़ा,
सूखा गोबर, धागा, ऊन, क्रेयांस (मोमकलर), अखबार का कागज़

चीज़ का नाम	जला/जली	नहीं जला/ नहीं जली	कब जला- 100 तक गिनती गिनो और देखो	
			100 के पहले	100 के बाद

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. आग बुझाने के कौन–कौन से तरीके प्रचलन में हैं? _____

_____

2. आग से जलने पर क्या करना चाहिए? _____

_____

3. कविता को अपने शब्दों में कहानी की तरह लिखो?

_____

_____

_____

_____

4. आग किस–किस काम में लायी जाती है? _____

_____

5. पहेलियाँ

1. एक नार ऐसी देखी पानी खाए मर जाये।
2. लाल छडी चपलता से पहाड़ चढ़ी।

आग के बारे में और पहेलियाँ बनाकर आपस में पूछो

6. " ी " की मात्र लगाकर अर्थ समझो। दोनों शब्दों के अर्थों में क्या फर्क हो जाता है। इस पर कक्षा में बातचीत करो।

लपक– लपकी

किताब	————	गंज	————	पड़ोस	————	नीच	————
पक्का	————	फर्श	————	जलता	————	पूर	————
साथ	————	ढेर	————	गरम	————	झूठ	————

दोनों तरह के इस्तेमाल के वाक्य बनाओ

गरम – रोटी गरम है, कैसे खाऊँ! **गरमी**– उफ! कितनी गरमी है, जरा हवा तो कर दो।

_____

_____

_____

_____

प्रश्न बनाना

♣ ये बातें किसी के सवालों के जवाब में कही गई हैं। तुम बता सकते हो कि इनका सवाल क्या रहा होगा?

जवाब	सवाल
मैं घर जा रही हूँ।	तुम कहाँ जा रही हो?
आज बुधवार है।	----------
मेरे एक भाई और एक बहन है।	----------
हम बस से बैतूल जाएँगे।	----------
मेरे पारा तुम्हारी किताब नहीं है।	----------
सब्जी बहुत चटपटी बनी है।	----------
यह मुर्गी ननकू की है।	----------
मेरे पिता यहाँ के पोस्टमास्टर है।	----------

आपस में ऐसे और वाक्य और उनके प्रश्न बनाओ

----------	----------
----------	----------
----------	----------

♣ इनके भी प्रश्न बनाओ। उत्तर में दो बातें कही गई हैं, सवाल में भी उन्हीं दो बातों के बारे में पूछना।

ये मेरी माँ है, भोपाल से आई हैं।	ये कौन है, कहाँ से आईं हैं?
मीनू कल ही भौंरा से आई है।	----------
गोविन्द छोडरामऊ से किताबें खरीदने आया है।	----------
मैं मोहन से अगले महीने शाहपुर में मिलूँगा।	----------
मकड़ी अपने थूक से दीवार पर जाला बनाती है।	----------
मैं बुधवार को शाहपुर बाज़ार करने आया था।	----------

♣ प्रश्न बनाने के लिए इन शब्दों का इस्तेमाल होता है–

क्या, कौन, किस, कब, कैसे, क्यों, कहाँ — — — — — — — —

♣ इनसे कुछ प्रश्न बनाकर यहाँ लिखो। हर प्रश्न के अंत में प्रश्न चिह्न भी लगाना – ऐसा ?

----------	----------
----------	----------
----------	----------
----------	----------
----------	----------

♣ इनमें से कुछ का प्रयोग कभी–कभी दो बार भी होता है, जैसे–

क्या–क्या, कौन–कौन, किस–किस, कब–कब, कैसे–कैसे, किन–किन, कहाँ–कहाँ

♣ दोनों का उपयोग कब होता है यह वाक्य बनाकर देखते है

1. क्या	तुम क्या खाओगी?	मैं रोटी खाऊँगी।
क्या–क्या	तुम क्या–क्या खाओगी?	मैं दाल, रोटी और अचार खाऊँगी।
2. कौन	वो कौन था?	----------
कौन–कौन	बाजार में कौन–कौन मिला?	----------
3. किस	----------	----------
किस–किस	----------	----------
4. कब	----------	----------
कब–कब	----------	----------
5. कैसे	----------	----------
कैसे–कैसे	----------	----------
6. कहाँ	----------	----------
कहाँ–कहाँ	----------	----------

दूसरी बोली

एक दिन चूहा सड़क पर चला जा रहा था। पीछे उसका पूरा परिवार था। जिसमें चुहिया व तीन छोटे-छोटे बच्चे थे। सबसे आगे चूहा, बाद में बच्चे और आखिर में चुहिया थी।

चलते-चलते अचानक चुहिया रुक गई। क्योंकि वहां एक बड़ी काली सी बिल्ली आ गई। तीनों बच्चे इतने डर गए कि मां के पास आकर छुप गए। धीरे से बिल्ली की चमकती आँखों में झांक लेते।

बिल्ली मन ही मन बच्चों की गिनती कर रही थी। इतने सारे खाने में खूब मज़ा आएगा।

तभी एक आवाज़ आई गु...र्र,घी...र्र,घी...र्र,भौं-भौं, भौ, गु....र्र।

बिल्ली कुछ पीछे हटी । फिर वही आवाज़ आई गु...र्र, गु...र्र, भौ...भौं...., भौ.....भाऊ।

इस बार बिल्ली इतनी डर गई कि पूंछ दबाकर जान बचाकर भाग गई।

बिल्ली को भागता देख चुहिया के बच्चों ने पूछा, "मां, ये तुमने आवाज़ निकाली थी कुत्ते जैसे?" चूहिया अपने बच्चों से बोली, "देखा तुमने, दूसरे बोली सीखने का कितना फायदा है।"

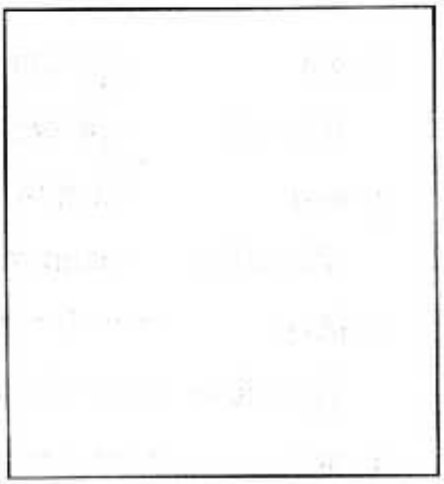

अभ्यास :

1. बिल्ली से कौन-कौन डर रहा था?
2. बिल्ली डरकर क्यों भाग गई?
3. भो....भौ, गु...र्र की आवाज कहां से आई?
4. चूहिया ने किसकी भाषा सीखी?
5. चूहिया को किसकी आवाज़ से डराओगे?

● खाली जगह में कहानी को क्रम से दिखाते हुए तीन चित्र बनाओ।

बातचीत

ननकू बहुत दिनों बाद अपने गांव आया। सोचा, चलो दादाजी से मिल आएं। ननकू जब दादाजी से मिला तो खूब बात हुई। हमने उन दोनों की बात यहां लिखी, पर बीच का कुछ हिस्सा छूट गया है जिसे तुम पूरा करो।

1 - दादा जय राम जी की ।

2 - जय राम जी की बेटे जय राम जी की। बड़े दिनों में दिखाई दिये। सब ठीक तो है ना?

1 - हां दादा ठीक ठाक तो हैं। बीच में बहुत पढ़ाई आ गई थी।

2 - अच्छा घर पर कैसे हैं सब लोग?

1 - सब ठीक हैं। पिताजी के घुटने में थोड़ा दर्द है लेकिन ज्यादा नहीं।

2 - चलो शुकर है।

1 - दादाजी हमने सुना है आपने एक नई भैंस ली है। क्या यह सही है?

2 - सुना तो सही है बेटा। पिछले सोमवार को ही तो लाया उसे।

1 - _____

2 - वो ढोढरामोहार है ना वहीं से लाया।

1 - अच्छा _____

2 - ज़्यादा महंगी तो नहीं है। तीन हज़ार में ली है।

1 - तो दादा ये_____

2 - अभी तो तीन-चार लीटर ही दे रही है। आगे देखो क्या होता है।

1 - पिताजी पूछ रहे थे कि आप हमारे घर कब आयेंगे?
वैसे भी वो भूरी गाय बीमार है, चारा पानी नहीं ले रही ।

2 - अरे _____

1 - यही कोई दो-तीन दिन से।

● इसका कक्षा में रोल प्ले करो। एक लड़का ननकू बन जाए और दूसरा दादाजी।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

चिट के द्वारा अलग–अलग परिस्थितियों में सोचें व बातचीत करें।

1. बाजार
2. खेल के मैदान में
3. शिक्षक से छात्र की बातचीत
4. अस्पताल की बातचीत
5. रेल्वे स्टेशन में बातचीत
6. किसी घटना पर बातचीत
7. बाल पंचायत– मौखिक चर्चा
8. अपने किसी दोस्त के संबंध में

1. पाठ में दी गई बातचीत में 1 और 2 का क्या मतलब है ?

बार–बार इनका उपयोग क्यों किया है?

2. बातचीत किस–किस में हो रही है?

3. जब दो–तीन लोगों के बीच में बातचीत होती है, तो कई तरह की बातें होती है–

दुआ सलाम होती है, जैसे ______

कुछ सवाल होंगे, जैसे ______

उनके जवाब भी होंगे, जैसे ______

उस दिन की या आस-पास की कुछ बात होगी, जैसे- आज भाजी इतनी महँगी थी।

बताओ और किस-किस तरह की बातें होती हैं ?

______ जैसे ______

4. *"मेरा घर नदी के किनारे टेकरी पर है।" "रात को नदी में बहुत पानी बढ़ गया था, तुम्हारा घर तो ठीक है?" "तुम्हारा घर कहाँ है?" 'हाँ अभी तो पानी से ऊपर है।" "अरे यार भीकू किधर जा रहे हो?" 'तेरी माँ अब कैसी है छोटू?" मैं तो घर जा रहा हूँ ।" 'माँ अब ठीक है, अच्छा चलूँ।"*

दो दोस्तों की आपस की बातचीत ऊपर लिखी है पर उनकी बातें आगे पीछे लिख दी है। इन्हें पढ़कर क्या तुम बता सकते हो पहले किस ने क्या कहा–फिर किसने? इनकी बातचीत को क्रम से लिखो। जो बोल रहा हो उसकी बात से पहले उसका नाम भी लिखना।

यहाँ बातचीत का एक अंश दिया है।

"क्यों भाई इस घोड़ी का क्या दाम लोगे?" तुमको जो लेना हो सो ले लो पर यह घोड़ी मुझे दे जाओ। "लड़के! इराके पूरे सौ रूपए लगेंगे।"

"मेरे पास सौ रूपए तो नहीं हैं, पचास रूपए हैं।"

"तो तुम अपने घर का रास्ता नापो। यों मुफ्त में कोई घोड़ी पर कैसे बैठ सकता है?"

"भाई, अगर हम ऐसा करें कि मैं ये पचास रूपए तुमको नकद दे दूँ और बाकी के पचास के बदले तुमको तुम्हारी घोड़ी लौटा दूँ तो कैसा रहेगा ? बोलो, यह सौदा तुम्हें मंजूर है?"

अब बताओ

1. कितने लोगों में बात हो रही है? ये लोग कौन–कौन होंगे?

2. दोनों की बात के आगे उनके नाम लिखो।
3. दोनों के बारे में तुम्हें इनकी बातों से क्या पता चलता है?

दही-बड़ा

सारे चूहों ने मिलजुल कर
एक बनाया दही-बड़ा।
सत्तर किलो दही मंगवाया
फिर छुड़वाया दही-बड़ा॥

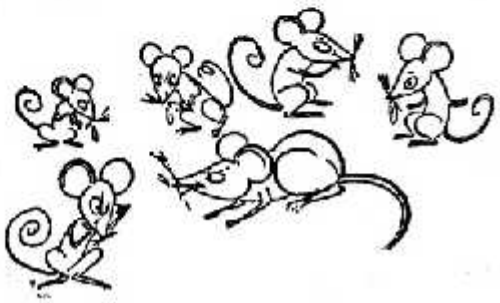

दिनभर रहा दही के अंदर
बहुत बड़ा वह दही-बड़ा।
फिर चूहों ने उसे उठाकर
दरवाज़े से किया खड़ा॥

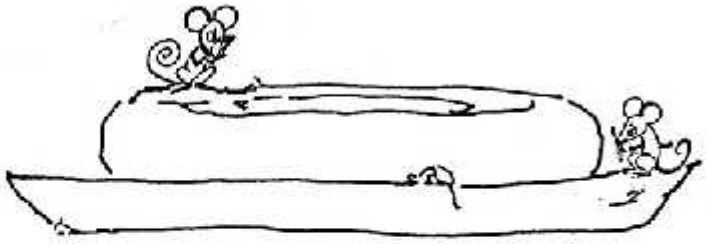

रात और दिन दही-बड़ा ही
सब चूहे अब खाते हैं।
मौज मनाते गाना गाते
कहीं न घर से जाते हैं॥

(डॉ. श्रीप्रसाद)

1. कविता का लेखक कौन है?

2. दही-बड़ा किसने बनाया?

3. कितने किलो दही में ये दही-बड़ा बना? ये दही-बड़ा कितना बड़ा रहा होगा?

4. चूहों ने दही-बड़े को दरवाज़े से क्यों खड़ा किया होगा?

5. चूहे अब दिन भर क्या करते हैं?

6. दही-बड़ा बनाने में जो न लगे उसे काट दो :-

शक्कर, नमक, उड़द दाल, अदरक, मिर्ची, धनिया, गेहूं, दूध,
दही, जीरा, मावा, लहसुन, इलायची, तेल, खोपरा, हल्दी, मूंगफली।

● *दही-बड़े बनाने के तरीके में जो नहीं होता, उसे काट दो -*

- उड़द दाल को पानी में भिगोकर रखो।
- शक्कर घोल लो।
- कुछ घंटे बाद दाल को पीस लो।
- मावा गरम करो।
- पीसी हुई दाल में नमक और मसाला मिला लो।
- तेल की कड़ाही गरम होने के लिये रख दो।
- कड़ाही में मावा डाल दो।
- कड़ाही को दो घंटे गरम होने दो।
- पिसी दाल के बड़े जैसे बनाकर कड़ाही में छोड़ो।
- कड़ाही में ही दही डाल दो।
- हल्के लाल होने पर निकालकर नमक वाले पानी में डालो।
- अब बड़े पानी से निचोड़कर, फेंटे हुए दही में डाल दो।
- ये दही-बड़े खाए जा सकते हैं।

काटने का काम हो जाने के बाद जो कुछ बचा हो उसे कॉपी पर उतार लो।

7. खाली स्थान भरो :-

एक चूहा खाता है।
सब चूहे .....।
रात को तारे निकलते हैं।
..... को सूरज ..... है।
चूहा घर से नहीं जाता।
..... घर से नहीं जाते।

अब इनसे वाक्य बनाओ

मोटा	पतला
धीरे	तेज़
मीठा	कड़ुआ

8. इन वाक्यों को पढ़ो -

दही-बड़ा इतना <u>बड़ा</u> था कि उसे सौ चूहे नहीं खा पाए।
लड्डू इतना <u>छोटा</u> था कि उससे एक चूहे का पेट भी नहीं भरा।

9. छोटू हलवाई 25 दही-बड़े बनाने के लिये आधा किलो दाल पीसता है। तो बताओ 100 दही-बड़े बनाने के लिये कितनी दाल पीसनी पड़ेगी?

इसी तरह 25 दही-बड़ों में छोटू के यहां ३ लोटे दही खप जाता है।
तो 100 दही-बड़ों के लिये कितने लोटे दही की जरूरत पड़ेगी?

10. आमतौर पर दही-बड़ा कितना बड़ा होता है। तुम्हारी पूरी कक्षा 70 किलो वाला दही-बड़ा खा पायेगी कि नही?

देगची की मौत

आफन्ती ने सेठ से गोश्त पकाने वाली एक खास देगची उधार ली। सेठ ने उसे बताया कि उसका किराया दिने के हिसाब से देना पड़ेगा।

कुछ दिनों बाद आफन्ती सेठ के यहां पहुंचा और खुशी से उछलते हुए बोला, बधाई हो! आपकी देगची ने एक बच्चा दिया है।

सेठ ने कहा, 'तुम ऊलजलूल बक रहे हो! देगची कैसे बच्चा दे सकती है?' आफन्ती ने बताया, 'तुम्हें विश्वास नहीं, तो देखो!' कहकर उसने थैले से एक छोटी देगची निकाली।

आफन्ती ने सेठ को छोटी देगची थमाते हुए कहा, 'यह एक सुंदर बच्चा है!' सेठ ने मन में सोचा, 'कहीं देगची ने सचमुच छोटी देगची को जन्म तो नहीं दे दिया!' उसने फौरन खुशी दिखाते हुए कहा, हां, छोटी देगची का

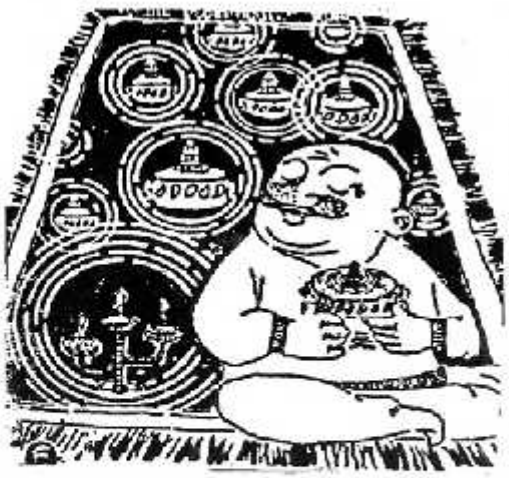

चेहरा मां से बहुत मिलता-जुलता है।' सेठ ने छोटी देगची रख ली। आफन्ती को विदा करते हुए सेठ ने बार-बार कहा, 'मेरी बड़ी देगची की अच्छी देखभाल करना ताकि मेरे लिए ज़्यादा बच्चे दे सके।' आफन्ती ने जबाव दिया, 'फिक्र न करें!'

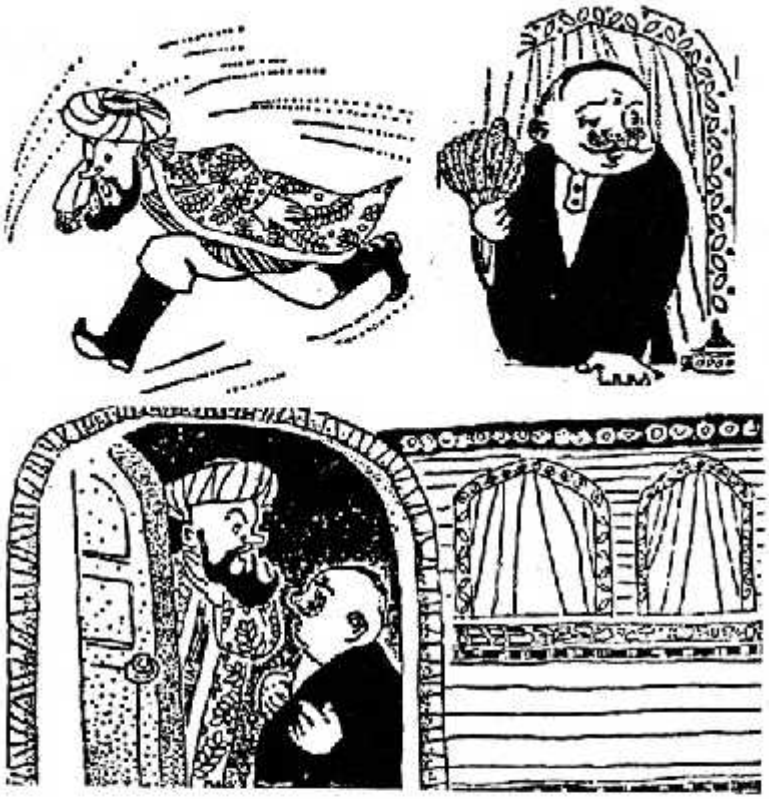

कुछ दिनों बाद आफन्ती फिर सेठ के घर पहुंचा। दाखिल होते ही उसने बहुत दुख से कहा, 'बड़ी बुरी खबर है!' सेठ ने पूछा, 'क्या बुरी खबर है?'

आफन्ती ने कहा, 'आपकी बड़ी देगची मर गई!' सेठ ने गुस्से में कहा, 'क्या ऊलजलूल बक रहे हो! धातु की देगची भला कैसे मर सकती है!'

आफन्ती ने आराम से जवाब दिया, 'आपने यह तो मान लिया था कि धातु की देगची बच्चा दे सकती है, पर यह मानने को तैयार नही हैं कि वह मर भी सकती है!'

1. *इन सवालों के उत्तर यहां लिखो*

– आफन्ती ने सेठ से किराये पर क्या लिया?

– आफन्ती खुश होकर सेठ के पास क्यों गया?

– आफन्ती दुखी होकर सेठ के पास क्यों गया?

- आफन्ती सेठ के यहां कैसे आता था?

2. देगची में क्या-क्या पकाते हैं?

3. तुम्हारे यहां की देगची और आफन्ती को सेठ से मिली देगची में क्या अंतर है? (*पुस्तक में दिए चित्रों में देगची को पहचान कर बताओ।*)

4. देगची के अलावा कौन-कौन से बर्तनों में पकाते हैं? उनके नाम लिखो और उनके चित्र भी बनाओ।

5. इनमे से किन चीजों के बच्चे नहीं होते? उन पर x का निशान लगाओ।

पंखा, गाय, आम का पेड़, गुलाब का पौधा, टेबिल, कुर्सी, किताब, मकड़ी, मोटर, पत्थर।

6. बच्चे देने वाली और बच्चे न देने वाली चीजों में तुम और क्या-क्या अंतर सोच सकते हो?
क्या ऐसी चीज़ भी मर सकती है, जिसके बच्चे नहीं होते?

7. दरबारीलाल की बेटी की शादी थी। मेहमानों का खाना पकाने के लिए उसने बर्तन किराये पर लिए। एक बड़ी देगची, दो छोटी देगचियां और एक बड़ी कढ़ाई।

बड़ी देगची का एक रोज़ का किराया था 12 रुपए। *छोटी देगची* का किराया था 8 रुपए रोज़ और **कढ़ाई** का किराया था 10 रुपए रोज़ का। दरबारीलाल ने 3 दिन के लिए बर्तन किराए पर लिए थे।

उसको कुल कितना किराया देना पड़ा? पूरा हल करो। ऐस

- बड़ी देगची का एक दिन का किराया-12 रु.
  तो बड़ी देगची का 3 दिन का किराया–
  एक छोटी देगची का एक दिन का किराया– 8 रु.
  तो 2 छोटी देगची का एक दिन का किराया
  तो 2 छोटी देगची का तीन दिन का किराया–
  कढ़ाई का एक दिन का किराया – 10 रु.
  कढ़ाई का तीन दिन का किराया–

कुल किराया

* ऐसे और भी सवाल बनाओ और हल करो। दोस्तों को भी ये सवाल हल करने को दो।

* कहानी में जहां-जहां लिखा है *आफन्ती ने कहा* उसके नीचे लाईन खींचो। इसके बाद कौन-सा चिह्न आता है? यह चिह्न कहानी में और कहां-कहां आया है?

* इस कहानी में प्रश्न-वाचक चिह्न(?) कहां-कहां आया है? उसपर गोला लगाओ।

तुम, भी कुछ प्रश्न बनाकर ऐसे चिह्न का उपयोग करो।

* (!) यह चिह्न कहानी में कहां-कहां आया है?
तुम्हे क्या लगता है, यह चिह्न कहां लगाया जाता है? बहनजी से चर्चा करो। ऐसे चिह्न वाले कुछ वाक्य बनाओ

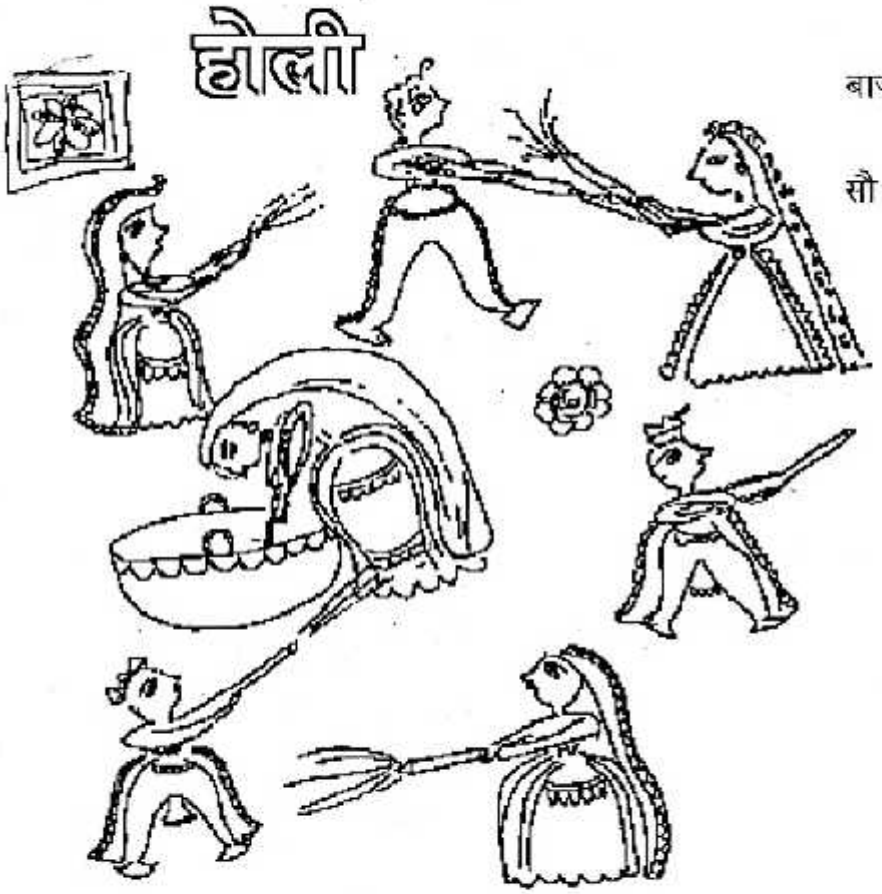

बाज़ार गली और कूचों में
जब शोर मचाया होली ने
सौ रंग भरे सौ रूप धरे
हर दिल को लुभाया होली ने ।

कुछ तबले खटके ताल बजी
कुछ ढोलक और मृदंग बजी
कुछ सारंगी और चंग बजी
कुछ तार तमूरों के झमके
कुछ घुंघरू खनके झनझन ।

हर दम नाचने गाने का
ये तार बंधाया होली ने ।
सौ रंग भरे सौ रूप धरे
हर दिल को लुभाया होली ने।

1 - जो होली के समय **नहीं** दिखता उसपर गोला लगाओ।

रंग, पानी, पटाखा, पिचकारी, बताशे, राखी, बाल्टी, सेवईया, नाच-गाना, झूले, रोज़े, आग, डोले, गुलाल, ताजिए, ढोलक, मिठाई, झांकियां

होली के समय और क्या-क्या मिलता है? चर्चा कर कापी में लिखो।

2 - कविता में कौन-कौन से बाजों की बात हुई है?

3 - चर्चा करो

- तुम्हें होली अच्छी लगती है? या बुरी लगती है? क्यों?

4 - होली पर कौन से गीत गाए जाते हैं? ऐसे गीत दोस्तों के साथ गाओ और उन्हें कॉपी पर लिखो।

5 - एक पिचकारी की कहानी बनाओ। वो कहाँ बनती है, किसने उसे खरीदा, उससे क्या किया, और होली के बाद उसका क्या हुआ?

6 - ये अभ्यास तुम्हें दो-दो की टोलियों में करना पड़ेगा। होली के बारे में अपने मन में कोई तीन वाक्य सोचो। अब तुम ये वाक्य अपने साथी को बताओ। तुम्हारे साथी को ये वाक्य अपनी पट्टी में लिखने हैं। इसलिये अपने वाक्य धीरे-धीरे कहना। फिर देखो साथी ने ठीक लिखा या नहीं।

इसके बाद साथी अपने मन में कोई तीन वाक्य सोचकर तुम्हें बताये और अब तुम्हारी बारी होगी उन्हें लिखने की। लिखने के बाद साथी को बताओ, सही लिखा या नहीं।

7 - होली का चित्र बनाओ। उस चित्र में जान बूझकर एक गड़बड़ चीज़ बनाओ। अपने साथियों को चित्र दिखाओ। क्या वे पता कर पाये कि तुमने क्या गड़बड़ की थी?

8 - इस चिट्ठी को ध्यान से पढ़ो।

मेरी प्यारी दोस्त ,

आज हमने खूब होली खेली। सुबह उठते साथ ही हमने खूब सारा ..... घोला। फिर उसें ..... में भरकर रंग खेला। मैं पूरी तरह से ..... गई। भैया ने मेरे ऊपर खूब ..... फेंका। पता है मैं .... घंटों तक नहाती रही ।

तुम्हारी,
सल्लो

- चिट्ठी में खाली स्थानों को भरो।
- तुम भी एक ऐसी चिट्ठी अपने साथी को लिखकर बताओ कि तुमने होली के दिन क्या-क्या किया, क्या देखा

9 - नीचे के शब्दों मे से चुनकर खाली स्थान भरो और कविता पूरी करो।

इक दिन दादी मुझसे बोली,
देखो जल रही है होली।
कल खेलेंगे हम सब——
और बजेगी खूब——
घर-घर होंगे खूब——
सब खाएंगे लाई——

तुम्हारे आसपास कौन-कौन से बाजे बजाए जाते हैं?

रंग, बताशे, तमाशे, मृदंग

- **अभ्यास में दी कविता के लिए चित्र बनाओ। चित्र में रंग, बताशे और मृदंग भी हों।**

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. होली का कोई गाना या कविता सबको सुनाओ और यहाँ लिखो।

2. होली के समय खेतों में कौन–कौन सी फसलें होती हैं, उनके नाम लिखो।

3. होली के समय जंगल में किस–किस पेड़ में फूल लगते हैं, उनके नाम लिखो।

4. क्या तुमने कभी टेसू /पलाश/ खकरा के फूल का रंग निकाला है? रंग निकालो और होली में प्रयोग करके देखो।

5. नीचे दिए शब्द कविता की किन–किन पंक्तियों में आए हैं। वे पंक्तियाँ कविता में से चुनकर लिखो।

   मृदंग,

   सारंगी,

   चंग,

   घुँघरू

6. तुम्हारे गाँव में होली किस तरह से मनाते हैं? नीचे लिखो।

7. होली के अलावा तुम्हारे गाँव में और कौन से त्यौहार मनाए जाते हैं? अलग–अलग लोग अलग–अलग त्यौहार मनाते होंगे। इसके बारे में अपने परिवार/आसपास के लोगों से पता करो और यहाँ लिखो।

चिट्ठी

कैलाश और रमेश में खूब दोस्ती थी। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। वे हमेशा साथ घूमते थे। गांव में ऐसा कोई न था जिसे ये दोनों न जानते हों। लेकिन अभी एक सप्ताह पहले रमेश को अपने पिताजी के साथ शहर जाना पड़ा क्योंकि उनका तबादला हो गया था। रमेश को भी पिताजी के साथ जाना था। उसे अब पढ़ना भी शहर में ही था।

न चाहते हुए भी रमेश को पिताजी के साथ जाना पडा। जब वह गांव से विदा हो रहा था तब कैलाश से कह गया था 'दुखी मत हो, मैं तुझे हर हफ्ते एक चिट्ठी लिखूंगा। तू भी चिट्ठी लिखते रहना।' रमेश ने जैसा कहा था वैसा ही किया। उसने कैलाश को यह चिट्ठी लिखी जिसका एक हिस्सा यहां पर दिया है।

10/02/1991

प्रिय कैलाश,

यहां सुबह छह बजे से दूध लेने जाना पड़ता है। बहुत देर तक लाइन में लगे रहो तब जाकर नंबर आता है और फिर दूध मिलता है। रोज सुबह छह से सात बजे तक नल आते हैं। वहां भी पानी के लिए लंबी-लंबी लाइनें लगती हैं। लेकिन ये काम मां-पिताजी मिलकर करते हैं। मैं तो नल आते ही नहा लेता हूं। फिर कुछ खाया और बस्ता खोलकर अपनी नई-नई किताबें देखता हूं। ये किताबें कल ही पिताजी लाये हैं।

मैं गांव से आने के बाद आज पहली बार अपने स्कूल गया। पिताजी मुझे स्कूल तक छोड़ने गये थे। स्कूल है तो पास, लेकिन रास्ते पर खूब भीड़ रहती है। स्कूल बहुत बड़ा है। इसमें बड़े-बड़े पांच कमरे हैं। मेरी कक्षा में 70 लड़के-लड़कियां हैं। लेकिन आधी छुट्टी में पिताजी देखने आये तो मुझे रोना आ गया। वे गुरूजी से बोलकर मुझे घर ले आए।

बस इस चिट्ठी में इतना ही। आगे के हाल अगली चिट्ठी में लिखूंगा। उम्मीद है तुम भी चिट्ठी लिखने वाले होगे।

तुम्हारा दोस्त ,

रमेश

कैलाश ने रमेश की चिट्ठी का क्या जवाब लिखा होगा? अपनी कापी में लिखो।

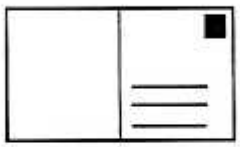

♣ सब बच्चे मिलकर कई तरह के पत्र जमा कर लो। इनके इस्तेमाल में अंतर, पता लिखने की जगह, बंद कैसे करते हैं, शादी की पत्रिका एवं अन्य प्रकार के पत्रों पर आपस में चर्चा करो।

♣ पता करो ये सब क्या होते हैं, इनकी कीमत कैसे तय होती है, और हर एक के सामने लिखो।

मनीआर्डर, ----------

टेलीग्राम, ----------

रजिस्ट्री ----------

पार्सल, ----------

वी.पी.पी. ----------

♣ *अपने दोस्त को पत्र लिखो।*

आती चिट्ठी जाती चिट्ठी
खबरों को पहुँचाती चिट्ठी।
पोस्टमेन को गलियों–गलियों
कैसे नाच नचाती चिट्ठी।
घर से दूर गए की चिंता
जरा दूर सरकाती चिट्ठी।
रिश्तों के इन सुखों–दुखों को,
अनुभव खूब कराती चिट्ठी।
कभी–कभी बयान से,
अच्छा दिल धड़काती चिट्ठी।

♣ *गाँव के सरपंच को पत्र लिखो।*

आवेदन पत्र

सेवा में,
प्रधान पाठक,
प्राथमिक शाला आमारवाल
द्वारा - कक्षा शिक्षक

बड़े गुरुजी,

नमस्ते,

मैं आपकी शाला की कक्षा 5 में पढ़ती हूँ। कल से मेरी माँ बीमार है और मेरे छोटे भाई की देखभाल करने के लिए घर पर कोई नहीं है। इसलिए मैं आज स्कूल नहीं आ सकूँगी। निवेदन है कि मुझे आज की छुट्टी देने की कृपा करें।

आपकी छात्रा
कु. नीरा तेकाम
कक्षा 5
प्रा.शा. आमारवाल

दिनांक 24.1.94

- कभी तुम बीमार हो जाते होगे या और किसी कारण से शाला नहीं जा पाते होगे। क्या तुम छुट्टी लेने के लिए इजाज़त लेते हो? क्या बड़ी बहनजी या बड़े गुरुजी को चिट्ठी लिखते हो? आमारवाल की शाला में तो छुट्टी लेने के लिए बड़े गुरुजी को चिट्ठी लिखनी पड़ती है। यहाँ नीरा नाम की लड़की ने इस स्कूल के बड़े गुरुजी को आवेदन पत्र लिखा है (यानी चिट्ठी लिखी है)। तुम भी छुट्टी के लिए बड़े गुरुजी या बड़ी बहनजी को आवेदन पत्र लिखो। उस पत्र में शाला न आ पाने का कारण ज़रूर लिखना। मन करे तो अलग-अलग कारण देते हुए दो-तीन आवेदन पत्र लिख लेना। यह देख लेना कि नीरा ने आवेदन पत्र के ऊपर और नीचे क्या-क्या लिखा है।

- तुमने अपनी सहेली और दोस्त को भी चिट्ठी लिखी थी। क्या उस चिट्ठी और इस आवेदन पत्र में तुम्हें कोई अन्तर लगता है? दोनों में क्या-क्या अन्तर हैं? अपने साथियों से और गुरुजी से चर्चा करो।

सभी कुओं में पड़ गई भांग,
बकते हैं सब ऊट पटांग

बिल्ली करती ढेंचू ढेंचू
गधा कर रहा म्याऊं म्याऊं
चूहा आगे बढ़ चिंघाड़े,
हाथी कहता मैं गुर्राऊं
कोयल बोले कुकडूं कूं कूं
और गुटरगूं देता बांग
सभी कुओं में पड़ गई भांग
बकते हैं सब ऊट पटांग।

उमाकांत मालवीय

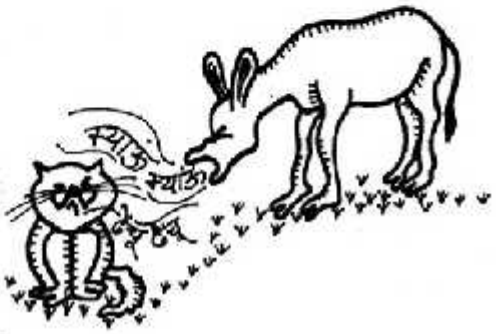

1 - कविता में आए किन-किन जानवरों ने भांग पी है? तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

2 - बिल्ली क्या बोल रही थी? गधा और चूहा क्या-क्या बोल रहे थे?

इनके बोलने को ऊट पटांग क्यों कहा जा रहा है?

3 - इन सब ने भी भांग पी है, तो बताओ कौन क्या बक रहा होगा? (कॉपी में लिखो।)

शेर, बकरी, मुर्गा, कुत्ता, मोर, कौआ, तोता, भैंस, गाय, बंछड़ा और चींटी।

4 - सही जोड़ी मिलाओ-(यदि जीवों ने भांग न पी हो तो कैसे बोलेंगे।)

1 - कोयल	कूकडूं कूं करता है।
2 - गधा	चीं चीं करता है।
3 - बिल्ली	कुहू कुहू करती है।
4 - चूहा	ढेंचू ढेंचू करता है।
5- मुर्गा	म्यांऊ म्यांऊ करती है?

● **कौन क्या करेगा।**

इन जानवरों के बोलने को क्या कहते हैं?

1 - हाथी चिंघाड़ता है।

2 - शेर ..... है।

3 - गाय ..... है।

4 - चिड़िया ..... है।

5 - गधा ..... है।

● *और शब्द लिखो -*

देना	देता	देते
मारना	मारता	मारते
नहाना	नहाता	नहाते
गुर्राना	.....	.....

● सभी कुओं में नमक पड़ जाता तो क्या होता?

● **नई तरह की पहेली।** नीचे के चित्र में शेर गुफा में सो रहा है। चूहा वहां पहुंचकर उसके कान में ज़ोर से चिंघाड़ना चाहता है। उसके सामने तीन फीते हैं, जो एक दूसरे के ऊपर-नीचे होते हुए शेर की ओर जाते हैं। पर दो फीते बीच में कहीं कटे हुए हैं, केवल एक ही फीता पूरा का पूरा शेर तक पहुंचता है। कौन सा?

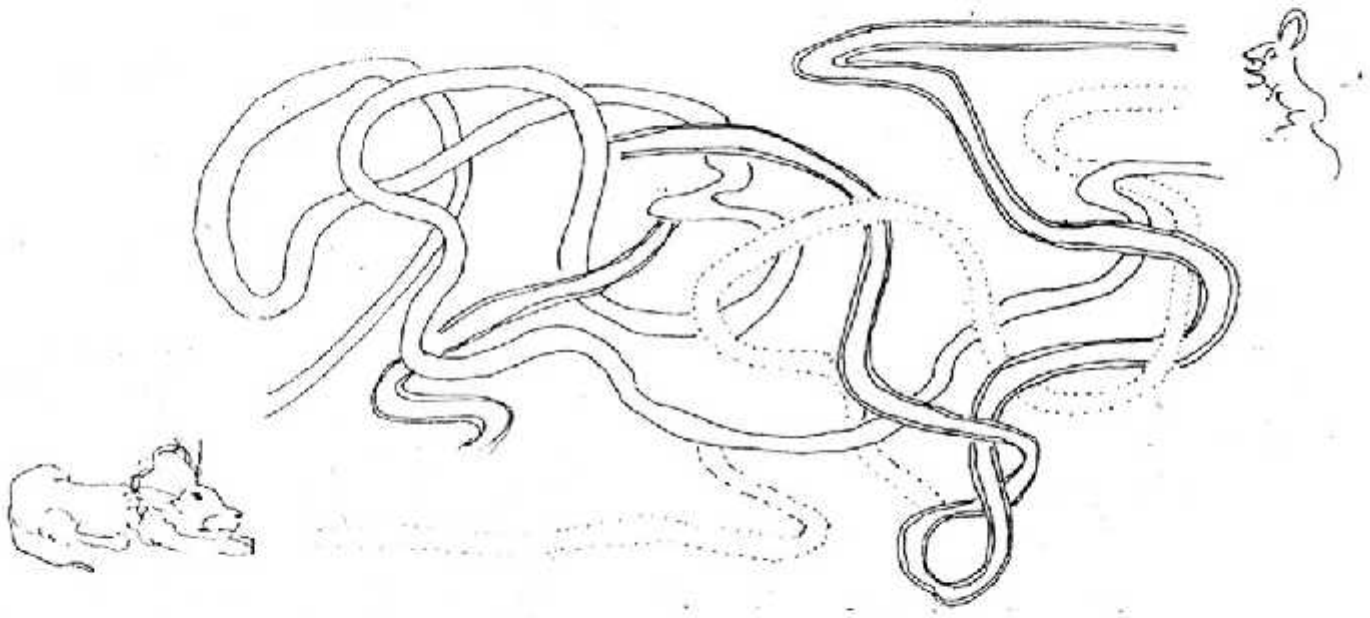

तुम भी ऐसी पहेली बना सकते हो। फीते, धागे, सुतली, रस्सी, पुराने कपड़े लेकर ऐसी और पहेलियां बनाओ, दोस्तों को बूझने को दो ।

फुलकी–चुटकी चटके चटा–चट

मदन रोज़ गाएँ लेकर जंगल में जाता था। एक दिन जब वह जंगल की तरफ जा रहा था तो रास्ते में उसे दूसरे गाँव का एक आदमी मिला। वह आदमी चुटकी बजाता जाता था और 'राधाकृष्ण, राधाकृष्ण' बोलता जाता था।

चुटकी की आवाज़ सुनकर मदन को बड़ा अचम्भा सा हुआ। उसने चुटकी की आवाज कभी सुनी ही नहीं थी।

मदन ने उस आदमी से पूछा, "भाऊ, आप क्या बजा रहे हैं?"

वो आदमी चालाक था। उसने तुरन्त ताड लिया। बोला, "अरे भैया! यह तो मेरी 'फुलकी' है। मैंने इसे पाला है।"

मदन ने कहा "भाऊ, आप अपनी यह फुलकी मुझे दे देंगे, तो मैं अपनी यह 'लीलकी' गाय आपको दे दूँगा।"

आदमी को तो हाँ–भर कहना था। उसने झटपट मदन को चुटकी बजाना सिखा दिया, और वह गाय लेकर चला गया।

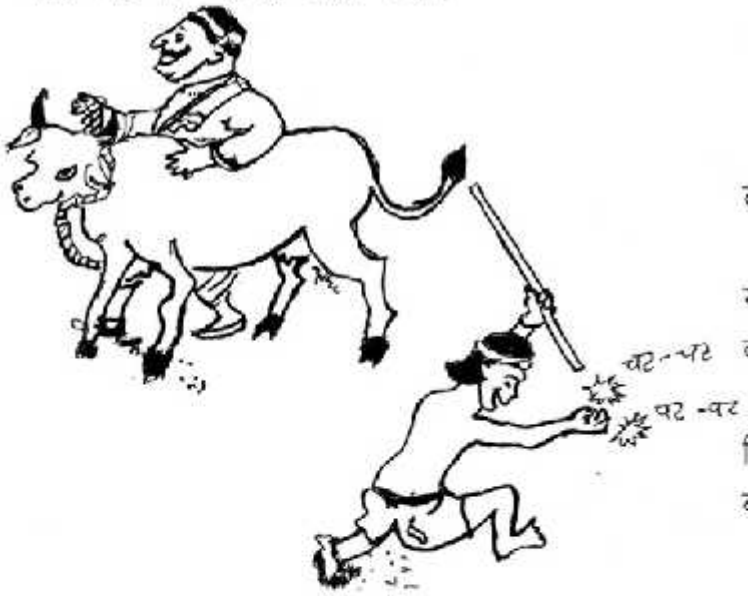

मदन बेहद खुश था वह दौड़ता हुआ घर पहुँचा। वहाँ आँगन में खाट पर दादाजी बैठे थे। उन्हें देखकर मदन ने मौज–ही–मौज में चुटकी बजाते हुए कहा, "दादाजी, दादाजी! देखिये तो!

अपनी लीलकी गाय देकर मैं यह फुलकी ले आया हूँ।

दादाजी ज़रा सुनिए तो!
यह कितनी अच्छी बजती है!"

दादाजी भी मदन से कुछ कम नहीं थे बोले, "अरे वाह! यह फुलकी तो बहुत ही बढ़िया दिखती है। फट–फट बजती है, और पट–पट बोलती है।"

मदन की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा।

जब रात के खाने का समय हुआ, तो उसने पूछा, "माँ, इस फुलकी को मैं कहा रख दूँ?"

माँ बोली, "बेटा, इसे उस कुल्हड़ में रख दे। कुल्हड़ कुठले पर पड़ा है। ज़रा संभाल कर रखना।"

उस रात मदन ने मौज–ही–मौज में दोगुना खाना खाया। लेकिन जब हाथ धोकर वह फुलकी लेने पहुँचा, तो उसे कुल्हड़ में फुलकी नहीं मिली। उसका चेहरा उतर गया। वह चिल्लाया, "माँ, माँ! मेरी फुलकी गुम हो गई।"

दादाजी ने कहा, "अभी–की–अभी कहाँ चली गई? लगता है कुल्हड़ ही उसे निगल गया।" माँ ने सुझाया, "इस कुल्हड़ को तो तापना ही होगा। इसे तापने पर ही फुलकी वापस आएगी।"

आँगन में बड़ा सा अलाव जलाया गया और उसमें कुल्हड़ डाला गया। जब ज़ोर की आग जली तो मदन के हाथ सूख गए और चुटकी फिर बजने लगी। मदन तो खुशी से उछलने लगा, "लो यह मेरी फुलकी वापस मिल गई!"

वह फुलकी चटकाता रहा चट–चट, पट–पट,फट——

(यह कहानी ***गिजूभाई बधेका*** *की कहानियों के संकलन में से ली गई है)*

कहानी पर प्रश्न

1. मदन को जो आदमी मिला था वह क्या कर रहा था?

_____

_____

2. 'उसने तुरन्त ताड़ लिया' – उस आदमी ने क्या ताड़ लिया?

_____

_____

3. खाना खाने के बाद मदन को कुल्हड़ में से फुलकी क्यों नहीं मिली?

---

4. आग जलाने के बाद फुलकी मिल गई–यह कैसे हुआ?

मदन के बारे में कई जगह लिखा है। कहीं–कहीं उसका नाम लिखा है कहीं और कोई ऐसा शब्द है जिससे हमें समझ में आता है कि वह मदन की जगह इस्तेमाल हुआ है।

जैसे– एक दिन जब **वह** जंगल की तरफ जा रहा था.....।

*यहाँ **'वह'** मदन के लिए उपयोग किया गया है।* तुम ऐसे और वाक्य चुनो। उनमें से वह शब्द ढूँढो जो मदन के लिए लिखा है।

मदन के दादाजी ने कहा " अरे वाह ! यह फुलकी तो बहुत ही बढ़िया दिखती है।

अरे वाह के आगे (!) लगा है। यह तब लगाते है जब आश्चर्य या हैरानी में कुछ कहा जाता है।

ऐसे और भी शब्द तुमने सुने होंगे–

जैसे, आहा! कितना सुन्दर फूल है!
वाह! क्या बढ़िया खीर बनी है।
शाबाश! तुम तो बहुत अच्छा दौड़ीं।
क्या खूब!

और जोड़ो

ये शब्द तो खुशी में इस्तेमाल होते हैं। **ऐसे ही कुछ शब्दों से बुरा लगना समझ में आता है।**

जैसे– उफ! कितनी भीड़ है!
छी! कैसी बदबू आ रही है!

और जोड़ो

दुख हो तो हम अलग शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

जैसे हाय! मेरी कमर में दर्द!
बाप रे! सारा खेत खत्म हो गया।

और जोड़ो।

बोगाना और वाना –1

बोगाना और वाना तुमसे थोड़े बड़े दो बच्चे हैं। वो रहते हैं यहां से बहुत, बहुत दूर, घने जंगलों के बीच **अमेज़न नदी** के पास। जंगल कितना घना है यह नीचे दिए गये चित्र में देखो। यह चित्र हवाई जहाज़ से लिया गया है।

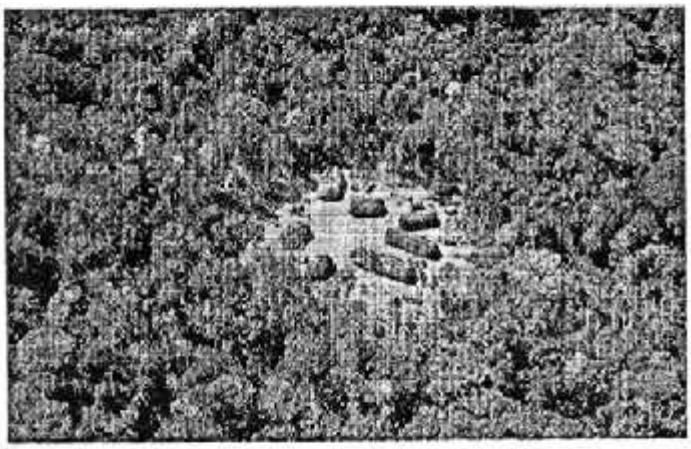

वाना और बोगाना अपने **कबीले** के साथ रहते हैं। जैसे तुम अपने गांव या मोहल्ले में बस कर रहते हो वैसे उनका कबीला एक जगह बस कर नहीं रहता। वे लोग जंगल की थोड़ी-सी जगह साफ करके वहां अपने घर बनाते हैं। घर के आसपास थोड़ा-सा बगीचा बनाते हैं जिसमें वे सब्ज़ी, कंद आदि उगाते हैं। थोड़े दिनों बाद वे जंगल में ही किसी दूसरी जगह चले जाते हैं।

एक मज़ेदार बात यह है कि वाना के यहां साल भर एक ही मौसम रहता है। रोज़ खूब गर्मी पड़ती है और खूब पानी गिरता है। इसीलिए तो जंगल इतना घना है। और इसीलिए साल भर सभी सब्ज़ियां उग आती हैं। अपने यहां जैसा नहीं कि ठंड में गोभी और गर्मी में कद्दू। और फिर इतनी गर्मी में ज़्यादा कपड़े पहनने की भी ज़रूरत नहीं।

नीचे दिए गये चित्र में बोगाना और वाना के घर और कपड़े देखो।

बोगाना और वाना का घर

खूब गर्मी और खूब बरसात। तुम ऐसी ही एक जगह के बारे में पढ़ चुके हो - न्यू गिनी और पापुआ न्यू गिनी, जहां लोग ज़मीन से ऊपर घर बनाते हैं। अमेज़न नदी न्यू गिनी से बहुत दूर है। फिर भी वहां का मौसम न्यू गिनी जैसा ही है। वाना का कबीला तो अपने घर ज़मीन से ऊपर नहीं बनाता; पर थोड़ी दूर नदी के तट पर लोग ऐसे घर ज़रूर बनाते हैं – चूंकि वहां हमेशा बाढ़ का डर लगा रहता है।

चलो, तुम्हें वाना और बोगाना की एक कहानी सुनाते हैं। इस कहानी में बहुत-सी ऐसी चीज़ों के नाम आएंगे जो तुमने पहले कभी नहीं सुने होंगे। कई नई तरह की सब्ज़ियां, विशेष जानवर व औज़ार आदि, तुम्हारे यहां नहीं होते हैं। इस कहानी में ऐसे नए शब्द गहरे काले में छपे हैं, जैसे पेकरी। उनके चित्र भी कहानी के बीच-बीच में दिए हैं।

कहानी पढ़ना शुरू करने से पहले ये शब्द और उनके चित्र ढूंढो। इनमें से कौन-कौन से जानवर हैं?

हैमक, काली मिर्च की हांडी, मनियोक, पेकरी, टापीर, स्लाथ, नुकीली डंडी, ब्लोगन, जैगुआर, मैचेट

बोगाना का पहला शिकार

बोगाना पहले कभी अपने पिता के साथ शिकार पर नहीं गया था। कबीले के आदमी और कुछ बड़े लड़के ही शिकार पर जाते थे। अब बोगाना भी बड़ा हो रहा था। वह बार-बार अपने पिता से पूछता, 'मैं शिकार पर कब जाऊंगा?' आखिर वह दिन आ गया जब बोगाना के पिता ने तय किया कि इस बार बोगाना भी साथ शिकार पर जाएगा।

सब लोग शिकार के लिए अपनी-अपनी तैयारी कर रहे थे। बोगाना बहुत खुश था। यह उसका पहला शिकार जो था। उसके पिता ने उसके लिए नया **ब्लोगन** भी बनाया था।

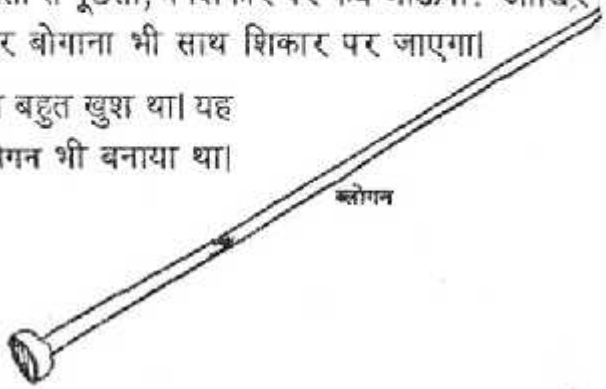

बोगाना का कबीला शिकार पर निकला

सुबह तड़के ही बोगाना और उसके पिता कबीले के दूसरे आदमियों के साथ शिकार पर निकल पड़े। वहां का जंगल बहुत ही घना था। पगडंडी पतली-सी थी। चारों तरफ झाड़ियां और बेलाएं थीं। सबको एक के पीछे एक चलना पड़ रहा था। यहां पेड़ और झाड़ियां बहुत ही जल्दी उग आते हैं। जब रास्ते में कोई झाड़ी या बेल आ जाती तो आदमी उसे अपने **मैचेट** से काट डालते (*देखो चित्र*)। जंगल इतना घना था कि मैचेट से काटे बिना चला नहीं जा सकता था।

आदमी के हाथ में मैचेट

सब बड़े ध्यान से आसपास के पेड़ों पर और आगे जंगल में देखते हुए चल रहे थे - कहीं कोई शिकार न दिख जाए। बोगाना अपना नया ब्लोगन और **डार्ट** लेकर चल रहा था। डार्ट पर ज़हर लगाकर सुखाया था।

कुछ देर बाद रास्ते में एक नाला पड़ा। नाले पर बेलाओं की रस्सियों से बना एक पुल था। एक-एक करके सबने उस पुल से नाला पार किया। नाला पार करते ही बोगाना के पिता ने एक पेड़ पर कई सारे बंदर देखे। एक और आदमी ने भी उन्हें देखा और अपना ब्लोगन मुंह से लगाया। बोगाना के पिता ने कहा 'रूको, मेरा बेटा मारेगा।' बोगाना का पहला शिकार था, इसलिये दूसरे आदमी ने अपना ब्लोगन नीचे कर लिया।

पेड़ की डाल पर जैगुआर

अब बोगाना की बारी थी। उसने ब्लोगन में डार्ट डाल कर बंदर पर निशाना लिया। पर तभी उसे बंदरों के ऊपर की डाल पर एक **जैगुआर** दिखाई दिया (जैगुआर तेंदुए जैसा होता है और उतना ही खतरनाक)। बोगाना जैगुआर से बहुत डरता था। उसे देखकर बोगाना घबराया, इतनी ज़ोर से चौंका कि उसके हाथ से ब्लोगन गिर गई। अपनी ब्लोगन वहीं छोड़कर बोगाना ज़ोर से भागा, जैगुआर से दूर . . .। भागते हुए उसने अपने पिता की आवाज़ भी नहीं सुनी। पिता कहते रह गए 'डरो नहीं! डरो नहीं! हम तुम्हारे साथ हैं।'

बोगाना ने एक टापीर मारा

कुछ देर बेतहाशा दौड़ने के बाद बोगाना रुका। वह ज़ोर-ज़ोर से हांफ रहा था। जैगुआर से तो बच गया पर अब उसे डांट का डर सताने लगा। उसे शर्म भी आ रही थी कि वह इस तरह डर कर भाग आया था। पता नहीं अब पिताजी शिकार पर ले भी जाएंगे या नहीं। पर अब ये सब सोचकर क्या फायदा, उसने मन ही मन कहा। 'जाकर ब्लोगन फिर उठाता हूं, शायद कुछ और शिकार मिल जाए।'

बोगाना उसी जगह वापिस गया। डार्ट और ज़हर तो उसके पास थे ही। वह उस पेड़ के पास पहुंचा जहां उसने जैगुआर देखा था। अब वहां कोई भी खतरनाक जानवर नहीं था। वह झुककर झाड़ियों में अपनी ब्लोगन ढूंढने लगा। कुछ ही देर ढूंढने के बाद उसे एक पत्थर के करीब अपनी ब्लोगन मिल गई। अब वह ब्लोगन उठा कर नाले के किनारे पहुंचा और शिकार की उम्मीद में चुपके-चुपके चलने लगा।

अभी वह 15-20 मिनिट ही चला था कि बोगाना को एक छोटा टापीर दिखा। बोगाना ने एक झाड़ी के पीछे होकर झांका। टापीर पानी पी रहा था। बोगाना ने झट एक डार्ट को ज़हर में डुबोया, ब्लोगन की नली में डाला और निशाना ले कर फूंक मारी। डार्ट सीधे टापीर की गर्दन पर लगा। इससे पहले कि टापीर भागे बोगाना ने तेज़ी से एक और डार्ट मारा। टापीर वहीं ढेर हो गया और बोगाना दौड़ कर उस तक पहुंचा। उसने टापीर की गर्दन से डार्ट निकाले और उसकी जांच-पड़ताल की।

अब उसे लेकर कैसे जाएं? टापीर तो काफी भारी था। बोगाना ने टापीर की पिछली टांग पकड़कर खींचा। वज़न उससे हिल तो सकता था। उसने टापीर को घसीट कर ले जाना शुरू किया। बीच-बीच मे थक जाता तो आराम करता। थोड़ा सुस्ता लेने पर फिर बढ़ जाता, अपने घर की ओर ।

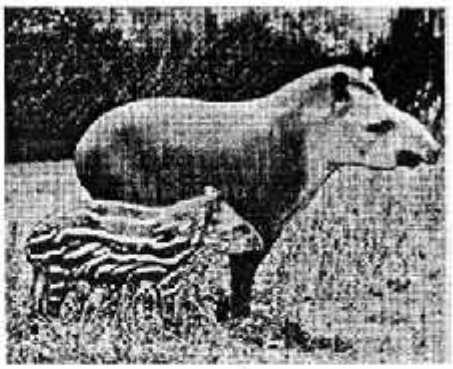

टापीर

सवाल

1. बोगाना और वाना कहां पर रहते थे?
2. शिकार पर जाने की बात से बोगाना क्यों खुश था?
3. बोगाना के लिए उसके पिता ने क्या बनाया था?
4. मैचेट किस काम में आता है?
5. बोगाना बंदर को क्यों नहीं मार पाया?
6. जब बोगाना को अपनी ब्लोगन दोबारा मिल गई तब वह शिकार के लिए नाले के पास चलने लगा। बोगाना को नाले के पास ही शिकार मिलने की उम्मीद क्यों थी?
7. टापीर को मारने के लिए बोगाना ने क्या-क्या किया?
8. इस पाठ में '——' के चिह्न कहां-कहां आए हैं?
   वे किस-किस के बोलने के लिए लिखे गए हैं?
   इस पाठ में बोना के पिता जी ने क्या-क्या कहा है?

बोगाना और वाना भाग - 2

दाना और उसकी मां बगीचे में

जब बोगाना घर पहुंचा तब तक बाकी शिकारी लौटे नहीं थे। उसकी बहन वाना और मां बाकी औरतों के साथ घर के पास बगीचे में थे। वहां वे सभी कंद इकट्ठा कर रही थीं। वाना एक क्यारी से **मनियोक** के पौधे उखाड़ती जा रही थी। पर वह मिट्टी खोद-खोद कर मनियोक का एक टुकड़ा वापस ज़मीन में भी डाल देती ताकि मनियोक का दूसरा पौधा उग आए। मिट्टी खोदने के लिये उसके हाथ में एक **नुकीली डंडी** थी। उधर वाना की मां दूसरी क्यारी में से मीठे आलू खोद कर निकाल रही थी।

नुकीली डंडी से मनियोक निकालते हुए

वाना मनियोक उखाड़ ही रही थी कि उसे दूर से बोगाना दिखाई दिया। वह किसी जानवर को घसीट रहा था। उसने सोचा सब शिकारी लौट आए हैं। पर बोगाना के पीछे कोई नहीं था। जब बोगाना वहां पहुंचा तो उसकी मां ने पूछा "तुम अकेले कैसे? बाकी सब कहां हैं?"

बोगाना ने कहा "वो सब मैं बाद में बताऊंगा। पहले देखो मैं क्या मारकर लाया हूं।"

टापीर देखकर मां, वाना और बाकी औरतें बहुत खुश हुईं। उन्होंने बहुत दिनों से गोश्त नहीं खाया था। आज बोगाना के शिकार से वे सचमुच खुश थीं। कुछ औरतें टापीर की चमड़ी निकालने में जुट गयीं। फिर उन्होंने टापीर का गोश्त साफ किया। खाना तो शाम को होने वाला था इसलिए सबने थोड़ा-थोड़ा गोश्त ले लिया और अपनी-अपनी काली **मिर्च की हांडी** में डाल दिया।

काली मिर्च की हांडी

यह काली मिर्च की हांडी क्या चीज़ होती है? यहां पर गरमी के कारण गोश्त और खाने की चीज़ें बहुत जल्दी खराब हो जाते हैं। इसलिए यहां रहने वाले लोगों के घरों में हमेशा एक हांडी चूल्हे के ऊपर टंगी रहती है। इसमें खूब सारी काली मिर्च रहती है, इस वजह से उसे काली मिर्च की हांडी कहा जाता है। जब भी शिकार से गोश्त मिलता है तो उस गोश्त को इस हांडी में डाल दिया जाता है। काली मिर्च के कारण वह काफी समय तक बिना खराब हुए रह जाता है। हांडी में मनियोक की जड़ का थोड़ा आटा भी डाला जाता है ताकि शोरबा(यानी रस)गाढ़ा हो जाए।

दोपहर हो गई थी और सूरज एकदम सिर पर था। गरमी बहुत ही बढ़ गई थी। जिस तरह की तेज़ गरमी हमारे यहां गरमियों के महीनों में होती है, वैसी ही गरमी वाना के यहां लगभग हर रोज़ होती है। ठंड तो कभी पड़ती ही नहीं है। इतनी गरमी में दोपहर के बाद कुछ काम नहीं होता। दाना, बोगाना और उनकी मां अपने-अपने **हैमक** में जाकर लेट गए।

ये हैमक एक झूले जैसा पलंग होता है जो कि बेलाओं और घास की रस्सी से बनता है। वाना और बोगाना लकड़ी की खाट पर इसलिये नहीं सोते क्योंकि यहां पर खूब चीटियां हैं जो लकड़ी की सभी चीजें खा जाती हैं। कुछ भी टिकने नहीं देती। (देखो चित्र)

हां, तो आज जब वाना और बोगाना सो रहे थे तब खूब पानी गिरा। यहां दोपहर की गरमी के बाद रोज़ ही पानी गिरता है। वाना और बोगाना तो इसके आदी थे और उनकी नींद पर कोई असर नहीं पड़ा।

शाम को वाना और उसकी मां उठे और मनियोक के आटे की रोटियां बनाने लगे। रोटियां सेकने के लिए उन्हें एक गर्म पत्थर पर रखतीं। आग पत्थर के नीचे जल रही थी। साथ ही उन्होंने मीठे आलू भी राख में भूनने के लिए रख दिए।

हैमक

गर्म पत्थर पर रोटियां बनाते हुए

इतने में सब आदमी शिकार से लौट आए। वे कुल मिलाकर कुछ तोते, दो बंदर, एक **पेकरी** और एक **स्लाथ** मारकर लाए थे। जानवरों को साफ करने के बाद सबने अपनी हांडियों में अपने-अपने हिस्से का गोश्त डाला।

शाम की दावत

रात का समय हो गया था। सब लोग खाने के लिए बैठे। सबसे पहले वाना ने ज़मीन पर एक बहुत बड़ी पत्ती बिछाई और उस पर केले रखे। उसकी मां ने हांडी उतार कर रखी। वाना ने मनियोक की रोटी सबके लिए रखीं।

खाने की महक से बोगाना के मुंह में पानी आ गया। उसने रोटी का एक टुकड़ा गोश्त के शोरबे में डुबाकर उसे मुंह में डाला। अहा - क्या स्वाद था! 'कितने दिनों बाद गोश्त खाने को मिल रहा है।'उसने चटखारे लेते हुए कहा।

'तुम्हारी बला से तो कुछ भी नहीं मिलता।' पिताजी उसपर बरस पड़े। 'भाग गया डरपोक कहीं का। सब लोग हंस रहे थे तेरे पर।' बोगाना के हाथ का कौर वहीं रुक गया। वह सिर झुकाकर पिताजी का गुस्सा झेलने के लिए तैयार हो गया। पर उसकी मां ने पिताजी को टोंकते हुए कहा, 'बोगाना पर यों न चिल्लाओ। आज गोश्त खिलाने में उसका बहुत बड़ा हाथ है। पता है, अकेला एक टापीर मारकर लाया है। बेचारे से खींचा भी नहीं जा रहा था।'

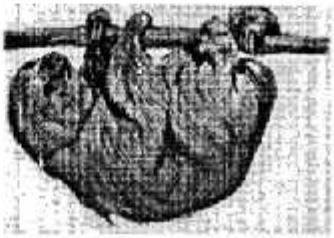

स्लाथ

'टापीर! और वह भी अकेले! हो ही नहीं सकता। तुम तो अपने बेटे को बचाने के लिए कहानी गढ़ रही हो! जो लड़का इतने सारे लोगों के साथ रहने पर भी जैगुआर देखकर भाग जाए, वह भला टापीर क्या मारेगा?'

बोगाना की मां ने कहा, 'विश्वास न हो तो टापीर की ताज़ी खाल देख लो। और दूसरी औरतों से भी पूछ लो। वाना, ज़रा जाकर टापीर की खाल तो ले आ। तेरे पिताजी को खाल देखकर ही यकीन होगा।'

पेकरी

एक और औरत ने कहा, 'तुम्हारे बेटे की तो सचमुच दाद देनी चाहिए। इतना छोटा

होकर भी एक टापीर मार लाया और वह भी अकेला' तब तक वाना खाल ले आई। खाल देखकर तो बोगाना के पिता की आंखें आश्चर्य से खुली रह गई। फिर वे धीरे से मुस्कराए और कहने लगे 'बेटा, तूने आज अपनी नाक कटने से बचा ली और मेरी इज्ज़त भी रख ली।'

बोगाना का चेहरा खुशी से खिल उठा और वह फिर से डटकर खाने में जुट गया ।

1. वाना बगीचे में नुकीली डंडी से क्या काम कर रही थी? इसी काम के लिए हम लोग किसका उपयोग करते हैं?
2. शिकार का गोश्त काली मिर्च की हांडी में क्यों रखा जाता है?
3. बताओ सही या गलत

- हैमक के चार पाये होते है
- हैमक पेड़ों की डालियों से बनता है
- हैमक झूले जैसा होता है

4. दोपहर को पानी बरसने पर वाना और बोगाना की नींद क्यों नहीं टूटी?
5. बोगाना के पिता को किस वज़ह से आश्चर्य हुआ?
6. अमेज़न के लोग किन चीज़ों का गोश्त खाते है? गोश्त के अलावा वे और क्या-क्या खाते हैं?
7. अमेज़न नदी के पास का मौसम कैसा है?

<u>बोगाना का शिकार</u> इस नक्शे में बोगाना का झुंड के साथ शिकार पर जाना और अकेले लौट कर आना दिखाया गया है। नक्शे में बोगाना के घर से चलने व लौट कर आने के रास्ते पर पेंसिल चलाओ।
नक्शे में इस्तेमाल हुए संकेत नीचे दिए हैं।

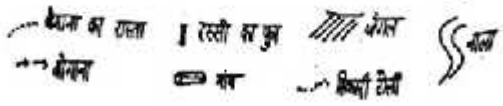

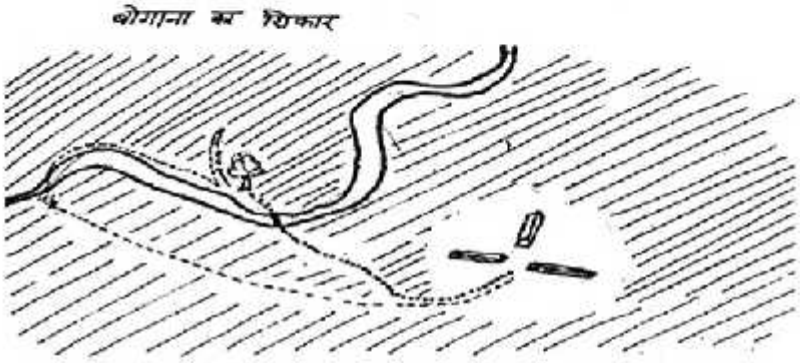

- हमारे यहां भी हम लोग रस्सियों से अपना बिस्तर बनाते हैं। बताओ कैसे?
- किस मौसम में खाना ज़्यादा सड़ता है? खाने को सड़ने से बचाने के लिए हमारे यहां क्या किया जाता है?

मतलब समझाओ

नाक कट जाना-
चटखारे लेना-
गुस्से में बरस पड़ना-

- *किताब में जहां-जहां ये मुहावरे आए हैं, उन्हें रेखांकित करो। इनसे ऐसे वाक्य बनाओ जो पुस्तक में नहीं हैं।*

कक्षा के पुस्तकालय से कुछ किताबें पढ़ने के बाद इस पन्ने पर दिए सवालों के उत्तर दो।

किताबें

आज मैंने पुस्तकालय से एक किताब पढ़ी।

किताब का नाम था ..... ।

मैंने अब तक ..... किताबें पढ़ी हैं, यह मेरी ..... किताब थी।

- ये किताब कितने पन्नों की थी? क्या तुम उसे पूरा पढ़ पाए?

- यह किताब तुम्हें कैसी लगी? क्यों?

- क्या इस पुस्तक में चित्र थे? कितने चित्र थे?

- किस-किस चीज़ के चित्र थे? कैसे लगे? सबसे अच्छा चित्र कौन सा लगा?

- क्या इस किताब में कुछ ऐसा था जो तुम्हें समझ नहीं आया हो?

- इस किताब में किसके बारे में लिखा गया था?

इसी तरह से और किताबों को पढ़कर उनके बारे में भी लिखो। जब भी तुम कोई किताब पढ़ो तो उसके बारे में अपनी कॉपी में लिखना।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. एक किताब और पढ़ो। इस किताब का नाम क्या है? इसको लिखने वाला लेखक कौन है?

2. इस किताब का मूल्य क्या है?

3. यह पुस्तक कहाँ छपी है? 4. कौन से वर्ष में छपी है?

5. यह किताब कहानी की थी या किसी के बारे में?

6. किताब में कौन–कौन था, क्या–क्या होता है, इसका विवरण लिखो।

7. तुमने और तुम्हारे दोस्तों ने कौन–कौन सी पुस्तकें पढ़ीं, उनकी सूची बनाओ। यह पता लगाओ कि वह किस तरह की किताबें थी। कहानी की, कविता की, किसी व्यक्ति के बारे में, किसी चीज़ के बारे में, या किसी और तरह की।

दोस्त का नाम	पुस्तक का नाम	किस तरह की किताब थी

अंग

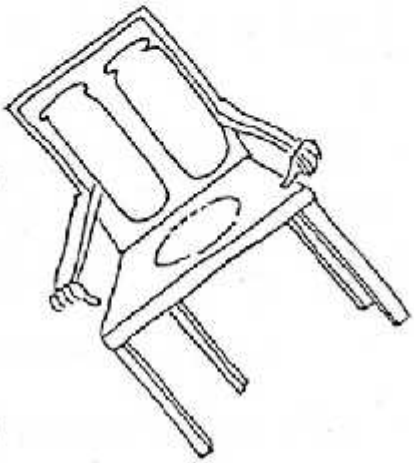

ऑलपिन का सिर होता, पर बाल न होता उसके एक
कुर्सी के दो बाहें हैं, पर गेंद नहीं सकती है फेंक।

कंघी के हैं दांत, मगर वह चबा नहीं सकती खाना
गला सुराही का पतला है, किन्तु गा नहीं सकती गाना।

होता है मुंह बड़ा घड़े का, पर वह बोल नहीं सकता,
चार पांव टेबिल के होते, पर वह डोल नहीं सकता।

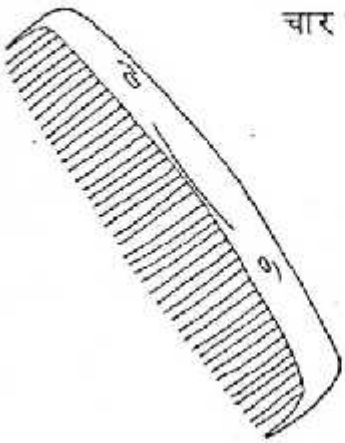

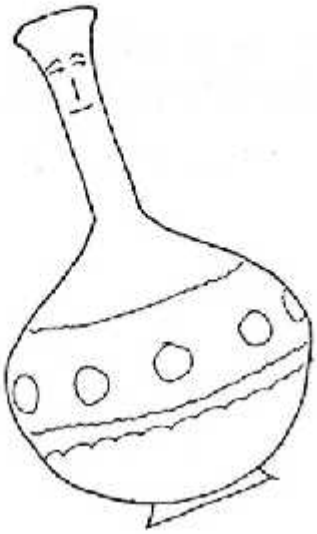

● **अब तुम बताओ :-**

किसकी आंखें होती हैं पर वह देख नहीं सकता?

किसके पैर नहीं होते पर चलती है?

किसकी जीभ होती है, पर वह चख नहीं सकता?

किसके पंख होते हैं, पर वह उड़ नहीं सकती?

वह कौन है जिसका मुंह नहीं, पर बोलता है?

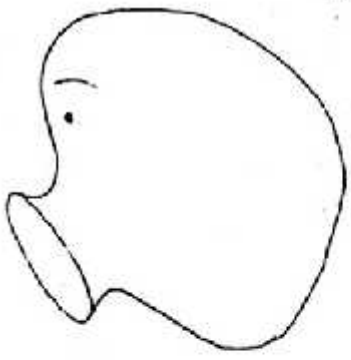

● ***जोड़ी मिलाओ और कारण बताओ***

घड़ी	रंग
आरी	मोटर
पम्प	दाढ़ी
चित्र	कांटे
नारियल	दांत

● *इन सवालों के जवाब लिखो -*

1. सुराही का गला कैसा है, वह गा क्यों नही सकती?

2. घड़ा ज़्यादा दुखी है या सुराही? क्यों?

3. अगर ऑलपिन के बाल होते तो क्या होता?

4. कंघी के दांत किस काम आते हैं?

पैराग्राफ लिखो

● क्या तुम इन चीज़ों के अंगों के बारे में सोचकर, इन पर भी दो लाइन की कविता लिख सकते हो–

सूई, आलू, मेज़

प्रश्न–1. कौन सा वाक्य किस चित्र के लिए लिखा गया है लाइन खींचकर मिलाओ।

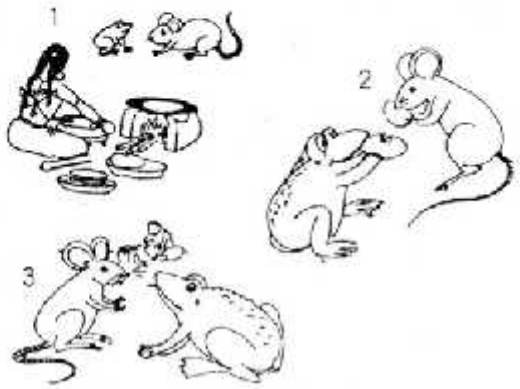

लक्ष्मी रोटी बना रही है।
लक्ष्मी चूल्हा जला रही है।

चूहा, मेढ़क रोटी खा रहे हैं।
चूहा, मेंढ़क रोटी बना रहे हैं।

चूहा, मेढ़क आपस में सलाह कर रहे हैं।
मगर आपस में सलाह कर रहे हैं।

प्रश्न–2. नीचे लिखा विवरण पढ़कर तालिका भरो।

एक लड़का था, जीवन वह अमरावती का रहने वाला था, और चौथी में पढ़ता था। वह नहाने का बड़ा शौकीन था। उसे जब भी कोई नदी दिखाई देती वह उसमें कूद पढता और भीग जाता, कपड़े भी भीगा लेता इन्हीं सभी हरकतों के कारण उसकी माँ रमोती उसे डांटती थी। लेकिन पिता गमन उसे बहुत प्यार करते थे। और वह उसे ऐसे काम के लिए प्रोत्साहित करते थे। एक दिन पिताजी ने जीवन को पलंग पर सुलाया और वह खुद ज़मीन पर सो गये। सपने में जीवन ने नदी देखी और वह उस नदी में कूद पडा। नीचे पिताजी सो रहे थे। वह उनके उपर गिर पड़ा और हाथ पैर पटकने लगा। जीवन को लग रहा था कि वह नदी में तैर रहा है। इतने में उसके पिताजी जागे और जोर से एक चाँटा मारा तो जीवन भी जाग गया और उसका सपना टूट गया। जीवन जोर–जोर से रोने लगा।

लड़के का नाम	कक्षा	पिता का नाम	माता का नाम	गाँव का नाम

प्रश्न–3. पैराग्राफ पढकर सुनाओ। नीचे दिए गए सवालों के उत्तर लिखो।

जंगल में एक बरगद का पेड़ था। उस पर एक उल्लू रहता था। उल्लू अपनी समझदारी के लिए प्रसिद्ध था। चाहे कितनी ही मुश्किल समस्या क्यों न हो, उल्लू के पास हर समस्या का हल मिल जाता। एक खरगोश ने इस उल्लू से सलाह लेने का निश्चय किया।

वह उल्लू के पास पहुँचा और बोला, "उल्लू भैया, मुझे सब डरपोक कहते हैं। यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं क्या करूँ?" उल्लू ने कहा "किसी से डरो मत।"

(क) बरगद का पेड़ कहाँ था ?
(ख) उल्लू से सलाह लेने कौन गया ?
(ग) डरपोक किसे कहते थे ?
(घ) उल्लू ने खरगोश को क्या सलाह दी ?

(ख) सही या गलत का चिह्न लगाओ।

(क) उल्लू अपनी समझदारी के लिए प्रसिद्ध था। ( )

(ख) उल्लू, खरगोश के पास सलाह लेने गया। ( )

(ग) सब लोग खरगोश को डरपोक कहते थे। ( )

प्रश्न–4. पैराग्राफ में से वो शब्द छांटकर लिखो जिनमें नीचे दी गई मात्राओं की गल्तियाँ हैं।

शिकारि जंगल में सैर कर रहा था कि उसने हंसों के एक झूण्ड को वहाँ उतरते देखा। वहाँ बहुत ही सुन्दर सूनहरे रंग के हंस थे। शिकारी को वे बहुत अच्छे लगे और उसने उन में से सबसे बड़े हंस को पकड़ लीया। वह हंसों का राजा था। पकड़े जानपे से वह बहुत डर गया था। उसने कहा, ओ शिकारी मूझे छोड दे। क्योंकी घर पर मेरे बच्चे और पत्नी हैं। यदि तूम मुझे कुछ हानि पहूँचाओगे तो वे दुःख के कारण मर जायेंगे। कृपा कर मुझे जाने दो। यदि तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हारे बहुत काम आउँगा।

ि ी ु ू

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

प्रश्न–5. नीचे लिखे शब्दों से नए वाक्य बनाकर लिखो।

प्रसिद्ध _____

सलाह _____

मुश्किल _____

डरपोक _____

प्रश्न–6. खाने वाली ऐसी वस्तुओं के नाम लिखो। जिनमें ये अक्षर या मात्रा नहीं आते हों।

क	र	ा	ल	ा र
लड्डू				

सितंबर 2000 हस्ताक्षर शि.

प्रश्न–1 श्रुति लेख लिखो।

प्रश्न–2 नीचे दिए गए चित्र पर पैराग्राफ लिखो।

प्रश्न–3 पैराग्राफ पढकर उत्तर लिखो। (उत्तर पन्ने के पीछे लिखना)

बरगद के पेड़ पर चिड़िया और नेवला रहते थे। उसी बरगद पर एक साँप रहता था। एक बार चिड़िया ने अंडे दिये। कुछ दिन बाद अंडों में से छोटे–छोटे बच्चे निकले। एक दिन साँप अपने भोजन की तलाश में घूम रहा था। उसने देखा कि बरगद में चीं–चीं की आवाज़ आ रही है और एक कोटर से बच्चे अपना मुँह निकाल रहे हैं तो साँप जल्दी से कोटर में पहुँचा और बच्चों को खाने के लिए अपना मुँह बच्चों की तरफ बढ़ाया। कोटर में से नेवले ने साँप को देख लिया। चिड़िया के बच्चे अंदर हो गये। नेवले का मुँह साँप ने पकड लिया। इतने में नेवला बाहर आ गया। साँप और नेवला जमीन पर गिर पड़े। दोनों में बहुत लड़ाई हुई। चिड़िया के बच्चे दोनों की लड़ाई देख रहे थे। और मजा ले रहे थे। अंत में नेवले ने साँप को मार डाला।

1.. इस कहानी का नाम क्या होगा ? 2. चिड़िया कहाँ रहती थी ?

3. साँप चिड़िया के कोटर में क्यों पहुँचा? 4. कोटर में चिड़िया के बच्चे के साथ कौन बैठा था

5. साँप और नेवले की लड़ाई में कौन जीता ? 6. कोटर का मतलब क्या होता है?

7. इन शब्दों के उल्टे अर्थ लिखो। देरी से कम आसमान

8. इन शब्दों के बहुवचन लिखो। चिड़िया लड़ाई

नवम्बर 2000 हस्ताक्षर शि.

प्रश्न–1. **गुरूजी को**ई भी कहानी सुनाएँ और बच्चे उसे सुनकर अपने शब्दों में लिखें।

प्रश्न–2. पैराग्राफ में से गलती ढूँढ़कर उसे सही कर लिखो।

एक दीन राजा जंगल में शीकार करने गया थे। रानि भी उसके साथ चली गई। थोड़ी देर बाद जंगल में एक शेर दिखा। शेर ने दहाड़ना शुरू किया तो रानी भाग गई।

गलत	सही

प्रश्न–3. कोष्ठक के अंदर लिखे शब्दों का वाक्य में सही जगह उपयोग कर नया वाक्य बनाओ।

वाक्य	श्याम स्कूल जाता है।	(नहीं)	
	सोना स्कूल जायेगी।	(नहीं)	
	तुम्हारा दुःख मुझसे कम है?	(क्या)	
	मैं तुम्हें भूल सकता हूँ।	(क्या)	
	राजू गधा है।	(कौन)	

प्रश्न 4 . शब्दों के लिंग बदलकर लिखो।

राजा शेर

प्रश्न 5. नीचे लिखा पैराग्राफ को पढो। पैराग्राफ के लिए चित्र बनाओ।

बंदर को पानी में घूमने का शौक था। बंदर पेड़ से छलांग लगाकर मगर की पीठ पर जा बैठा। मगर पानी में तैरता हुआ आगे बढ़ा।पानी में बंदर को बहुत मजा आया। नदी के बीच में पहुँचकर मगर ने बंदर को पानी में डुबा दिया।

जनवरी 2001 हस्ताक्षर शि.

प्रश्न–1. चित्र पर कहानी लिखो।

प्रश्न–2. नीचे लिखे पाठों में मुख्य बातें क्या लगी लिखो।

फुर्र–फुर्र	कछुआ उड़ा हवा में	क्या तुम मेरी अम्मा हो

प्रश्न–3. पैराग्राफ को पढ़ो तथा जो वाक्य पैराग्राफ से संबंधित नहीं है उसे अलग निकालो।

आखिर एक दिन राजा ने बाहर जाने का निश्चय किया। सारथि बहुत प्रसन्न हुआ। उसने रथ में सबसे बढ़िया घोड़े जोते और वे बहुत दूर घूमते हुए चले गये। बंदर बस चलाते है। उन्होंने अनेक शहर और गांव पीछे छोड़ दिये लेकिन उन्हें कोई आश्रम नहीं मिला।

अ. अलग वाक्य _____

ब. इन शब्दों का क्या अर्थ है लिखो।

शब्द	निश्चय	बढ़िया	सारथि	प्रसन्न
अर्थ				

प्रश्न–4. कविता को अपने शब्दों में लिखो।

ढूंढ के लाते कुत्ते चिड़िया _____
जिन्हें लगी हो चोट _____
मलहम पट्टी करते उनकी _____
चाचाजी हर रोज _____

प्रश्न–1. पैराग्राफ पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो।

मैदान से दूर हटकर नाला था। नाले पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से ही आना जाना पड़ता था। खेल अभी बन्द ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैल को ललकारता, कभी पहियों को ढकेलता लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर, फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार–बार जोर लगाता और बार–बार झुंझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर– उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नजर नहीं आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता था। बड़ी आपत्ति में फंसा हुआ था। इस बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते घुमाते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा परन्तु किसी से मदद मांगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी देखा मगर बंद ऑखों से जिनमें सहानुभूति न थी।

(क) किसान क्यों परेशान था ?

(ख) गाड़ी में क्या भरा हुआ था ?

(ग) किसान ने खिलाड़ियों से सहायता क्यों नहीं माँगी।

(घ) गाड़ीवान कौन था ?

(ड.) समानार्थी शब्द लिखो

वज़न _____ हिम्मत _____ चक्का _____ उदास _____

(च) नीचे लिखे शब्दों के उल्टे अर्थ वाले शब्द लिखो।

खुला _____ ताकतवर _____ जाता _____ आशा _____

(छ) इस कहानी का नाम क्या हो सकता है। लिखो।

(ज) तीन स्त्रीलिंग, पुल्लिंग शब्द छाँटकर लिखो।

(ज) तीन संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो।

प्रश्न–2.किसी एक विषय पर आठ दस वाक्य लिखो–

1. पर्वत 2. छुट्टियों के दिन 3. मेरे गुरूजी 4. पाठशाला

प्रश्न–3. अपने दोस्त को पत्र लिखो। (मेला देखने के लिए।)

अथवा

चार दिन की छुट्टी के लिए कक्षाध्यापक को आवेदन पत्र लिखो।

प्रश्न–4. अधूरी कहानी पूरी करो।

घने जंगल के बीच एक गाँव था। गाँव में अक्सर शेर आया करता था। वह कभी जानवर तो कभी बच्चों को उठा ले जाता। एक बार .....

प्रश्न–5 अ जोड़कर नए शब्द बनाओ। वाक्य बनाकर अर्थ भी लिखो।

शब्द	अ जोड़ा	वाक्य	अर्थ
कारण			
चल			
सफल			
ज्ञान			

प्रश्न–6. कछुआ ने मछलियों से कहा– दैया रे! तुम तो बहुत सुनहरी और चौड़ी सी लग रही हो। जरूर ये लंबी–लंबी घासों का ही कमाल है। दैया रे! कितने सुन्दर हैं ये कमल के फूल। दैया रे! कितना ऊँचा है तुम्हारा घर।

नाम	ऊपर की लाइनों में इनके बारे में क्या कहा गया है, लिखो।
घास	
फूल	
घर	

चित्र बनाओ

इस किताब में जहां-जहां

है तो वहां तुम खुद ही ढेर सारे वैसे ही अभ्यास बना सकते हो।

का मतलब है कि यहां मन से सोच कर कुछ लिखने या चित्र बनाने की जगह है।

वाले पन्नों में तुम्हारे खुद कुछ देखने-परखने के लिए है।

है वहां तुम्हें आपस में बातचीत करके काम करने की ज़रूरत है।

है यहां तुम्हें पढ़कर कुछ करना है।

है यहां तुम्हें आसपास खोजना है।

है यहां तुम्हें सोचकर कुछ करना है।

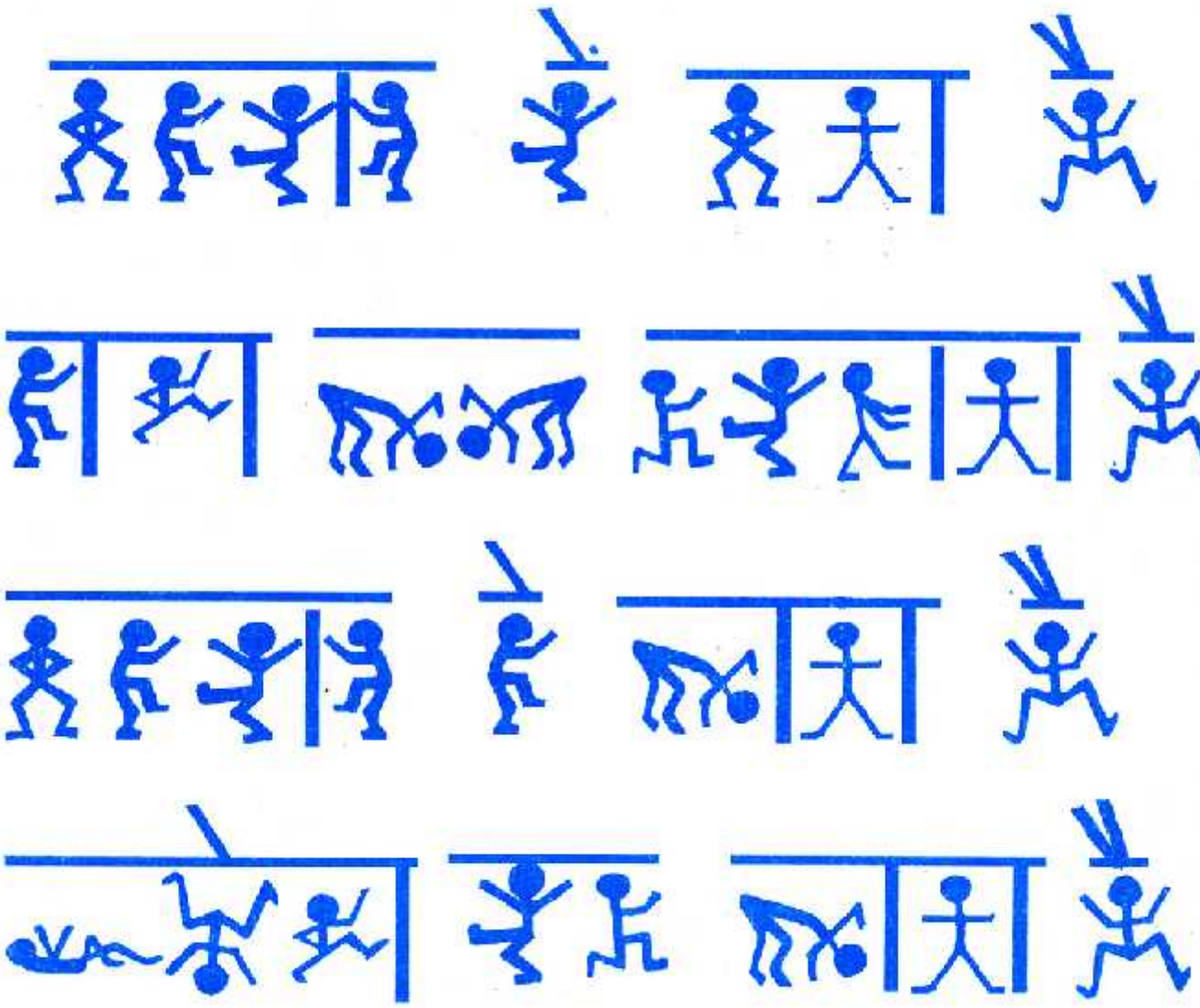

ISBN 978-81-87171-71-3

9788187171713

एकलव्य

मूल्य: ₹ 65.00

A053711